Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संतबानी संग्रह

भाग पहिला

(साखी)

3462
31
0152,1x1,1
H6.1

प्रकाशक
बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग

मूल्य २)

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संतबानी संग्रह

भाग पहिला

(साखी)

जिस में

२४ संतों, साधों और परम भक्तों की चुनी हुई साखियाँ उन के संक्षिप्त जीवन-चरित्र और टिप्पनी के साथ छापी गई हैं।

"न भूतो न भविष्यति"—सुधाकर

All rights reserved

[कोई साहिब बिना इजाज़त के इस पुस्तक को नहीं छाप सकते]

प्रकाशक

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

चौथी बार] सन् १९४६ मूल्य २)
१०००

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Printed and Published
at The Belvedere Printing Works, Allahabad, By B. Sajjan

॥ संतबानी ॥

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

015,1xL,1
H6.1

संतबानी पुस्तकमाला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिनका लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी भी थीं सो ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या चेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये गये हैं, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुटनोट में दे दिये गये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन चरित्र भी साथ ही में छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके वृत्तान्त और कौतुक संक्षेप से फुटनोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् संतबानी संग्रह भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकीं, जिनका नमूना देख कर महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-वासी ने गद्‌गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और विद्वानों के बचनों की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१६ में छपी है जिसके विषय में बैकुंठ वासी श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा था—"वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है जो सोने के तौल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

हिन्दी में और भी अनूठी पुस्तकें छपीं हैं जिनमें प्रेम कहानियों के द्वारा शिक्षा बतलाई गई है। उनके नाम और दाम सूची पत्र में छपे हैं—जो कि नीचे लिखे पते से मँगाया जा सकता है—संतबानी की कुल पुस्तकों के नाम और दाम पुस्तक के अंत में भी छपा है—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY,
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc. No. ...3462

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथम संस्करण की सूचना

यह संग्रह प्राचीन संतों और महात्माओं की बानी का जिन में से बहुतों के पंथ भारतवर्ष में प्रचलित हैं हमारे वैकुन्ठवासी मित्र, संतबानी के रसिक, ज्योतिष विद्या के सूर्य्य महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी के आग्रह से छः बरस हुए आरंभ किया गया था और थोड़े से महात्माओं की साखियाँ और पद जो उनके जीवन समय में चुने जा चुके थे उन को दिखलाये गये जिन को पढ़ कर वह गद्‌गद होकर बोले "न भूतो न भविष्यति"। इस पर महंत गुरुप्रसाद जी जो पास बैठे थे बोले कि पंडित जी आपने इस नमूने के विषय में जो "न भूतो" कहा वह तो ठीक है पर "न भविष्यति" कैसे कहा, क्या आगे इस से बढ़कर संग्रह संतबानी का नहीं रचा जा सकता ? पंडित जी ने जवाब दिया कि हाँ यदि इन सन्तों से बढ़कर महात्मा औतार धरैं या यही संत फिर देह धारण कर इस से उत्तम बानी कथैं तो हो सकता है क्योंकि इन महात्माओं की बानी का हीर संग्रहकर्त्ता ने काढ़ कर धर दिया है।

पंडित जी के चोला छोड़ने पर इस संग्रह के पूरा करने का उत्साह भी सम्पादक का ढीला हो गया परन्तु अब कि संतबानी पुस्तक-माला के जितने ग्रंथ छापने को थे छप चुके अपने मित्र की इच्छानुसार इस ग्रन्थ के पूरा करने की ओर ध्यान गया और यथा शक्ति ठीक करके वह अब छापा जाता है।

इस ग्रन्थ के दो भाग रक्खे गये हैं—पहिला साखी-संग्रह और दूसरा शब्द-संग्रह। पहिले भाग में कुछ ऐसे महात्मा जिनकी साखियाँ हम को मिलीं छापी गईं हैं और उनका संक्षिप्त जीवन-चरित्र हर एक की बानी के सिरे पर दे दिया गया है। ऐसे महात्मा जिनके केवल पद मिले उनका संक्षिप्त जीवन-वृत्तान्त दूसरे भाग में इसी प्रकार से दिया गया है। सब मिला कर ३४ महात्माओं की चुनी हुई बानी इस ग्रन्थ के दोनों भागों में छपी हैं जिनमें से २४ महात्मा वह हैं जिन के ग्रन्थ सन्तबानी पुस्तक-माला में छप चुके हैं—उन में ऐसी रोचक साखियाँ और पद बढ़ा दिये गये हैं जो पीछे से मिले। इन के सिवाय १० ऐसे महात्मा जिनकी बानी पहिले इस कारन से नहीं छपी कि या तो वह बहुत जगह छप चुकी है या उसके थोड़े ही पद मिले उनकी चुनी हुई साखी और शब्द भी इस संग्रह में छाप दिये गये हैं चाहे वह एक ही पद हो। इन महात्माओं के नाम दूसरे पृष्ठ पर दिये हैं :—

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संतबानी पुस्तक-माला वाले महात्मा

१ कबीर साहिब	९ धरनीदासजी	१७ चरनदासजी
२ रैदास जी	१० जगजीवन साहिब	१८ सहजो बाई
३ धनी धर्मदासजी	११ यारी साहिब	१९ दया बाई
४ गुरु नानक	१२ दरिया साहिब (बिहार)	२० गरीबदासजी
५ मीरा बाई	१३ दरिया साहिब (मारवाड़)	२१ गुलाल साहिब
६ दादू दयाल	१४ दूलनदासजी	२२ भीखा साहिब
७ बाबा मलूक दास	१५ बुल्ला साहिब	२३ पलटू साहिब
८ सुन्दरदासजी	१६ केशवदासजी	२४ तुलसी साहिब

[गुरु नानक साहिब के पद और सुन्दरदासजी व पलटू साहिब की साखियाँ नहीं छपी थीं अब मिली हैं]

दूसरे महात्मा जिनकी बानी नहीं मिल सकी

१ पीपाजी	६ नरसी मेहता
२ नामदेवजी	७ गुसाईं तुलसीदासजी
३ सदनाजी	८ नाभाजी
४ सूरदासजी	९ बुल्लेशाह
५ स्वामी हरिदासजी	१० काष्ठजिह्वा स्वामी

बानियाँ महात्माओं की उनके जीवन समय के क्रम में रक्खी गई हैं जिससे समय समय की परमार्थी उन्नति, बिवेक विचार और भाषा की दशा दरस जाय।

शब्दों की अक्षर-रचना और मात्रा प्रत्येक देश की बोली और लेख के अनुसार रक्खी गई है जिस में मूल न बदलै, सब को भाषा के एक ही साँचे में नहीं ढाला गया है—जैसे पंजाबी भाषा में "कुछ" को "कुज", "बैठ" को "बहु" कहते हैं; राजपूताना में "दाँव" को "डाँव", "दीक्षा" को "दष्या", "सुना" को "सुण्या", इत्यादि।

अन्य भाषाओं के पदों और शब्दों के अर्थ, और संकेतों या क़िस्सा-तलब बातों की कथा या भेद फ़ुट-नोट में थोड़े में जता दिये गये हैं।

भूल और अशुद्धियाँ जो संतबानी पुस्तक-माला के मूल पाठ या नई लिपियों में पाई गईं वह भर सक सुधार दी गई हैं और छापे की त्रुटियाँ जो आँख की चूक से रह गईं और विशेष कर मात्राओं के प्रेस के दबाव से टूट जाने से पैदा हो गईं एक अशुद्धि पत्र में दिखला दी गई हैं।

अन्त में हम अपने उन सहायकों को हृदय से धन्यवाद देते हैं जिन्होंने नये पद या साखियाँ भेज कर या पदों और साखियों के क्रम से बैठालने और

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मूल या छापे की त्रुटियों के शोधने में इस काम में सहायता की। पंडित हरिनारायण जी पुरोहित बी० ए० (जयपुर राज के अकौन्टन्ट-जेनरल) ने महात्मा सुन्दरदासजी की उत्तम साखियाँ, और ठाकुर गंगाबख्श सिंह (जमींदार मौजा टँडवा जिला फ़ैज़ाबाद) ने पलटू साहिब और दूलनदासजी की बहुत सी साखियाँ और पद भेजे, और लाला गिरधारी लाल साहिब (रईस धौलपुर) ने कबीर साहिब की साखियों की तर्तीब और नई साखियों के भेजने में सहायता की। बाबा अचिन्त सरन साधू राधास्वामी मत (इलाहाबाद) ने मूल पाठ के शोधने और संकेतें का भेद लिखने में असली और पूरी मदद दी, और बाबू वैष्णवदास सहिब बी० ए० (अकौन्टन्ट जेनरल रियासत इन्दौर) और बाबू तेजसिंहजी बी० ए०, एल० एल० बी० (गत बख्शी खुमानसिंह साहिब सी० एस० आई० इन्दौरवाले के पोते) से पदों को क्रम से स्थापन करने और प्रूफ़ शोधने में सहायता मिली। राव बहादुर लाला श्याम सुन्दरलाल साहिब, बी० ए०, सी० आई० ई० (मुरार, ग्वालियर) जो इस परोपकार के काम में जीवन-चरित्र आदि का मसाला भेजने में मददगार रहे उनकी सहायता किसी से कम नहीं रही। इन सब महाशयेँ को हम पुनः पुनः धन्यवाद देते हैं ॥

जो प्रेमी और रसिक जन इस निवेदन के पृष्ठ २ वाले महात्माओं की उत्तम और मनोहर साखियाँ या पद जो संतबानी पुस्तक माला के किसी ग्रन्थ में नहीं छपे हैं कृपा पूर्वक चुनकर भेज देंगे वह धन्यवाद सहित दूसरे छापे में शामिल किये जायँगे।

अब सब लिपियाँ संतबानी की जो सम्पादक ने अनुमान बीस बरस के उद्योग से इकट्ठा करके यथा शक्ति उन की त्रुटियों को ठीक किया था छप चुकीं सिवाय पलटू साहिब की थोड़ी सी मनोहर साखियों और बहुत से उत्तम पदों के जो उन महात्मा की बानी छापने के पीछे हम को मिले। यह पुराने पदों के साथ तीन भागों में इस क्रम से रक्खी गई हैं कि पहले भाग में केवल कुंडलियाँ दूसरे भाग में रेखते, झूलने, अरिल छंद इत्यादि, और तीसरे भाग में साखियाँ और रागों के पद व भजन। अनेक त्रुटियाँ भी जो पुराने छापे में रह गई थीं नई लिपि से मिलान करके सुधार दी गई हैं ॥

अधम,
संपादक
संतबानी पुस्तक-माला

इलाहाबाद,
मई सन् १९१५

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूचीपत्र

—०:❀:०—

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कबीर साहिब

जीवन समय—१४५५ से १५७५ तक। जन्म और सतसंग स्थान—काशी।
आश्रम—गृहस्थ। गुरू—स्वामी रामानंद।

कबीर साहिब का एक बिधवा ब्राह्मनी के उदर से स्वामी रामानन्द के आशिर्बाद से उत्पन्न होना कहा जाता है। माता ने लाजबश नौजन्मतुआ बालक को लहरतारा के तलाब में बहा दिया जिस के किनारे नूरअली जुलाहा सूत धोने आया और बालक को बहता देखकर निकाल लाया और पाला पोसा इसी से कबीर जुलाहा कहलाये जिस की महिमा संसार में सूरज के समान प्रकाशमान है। यह प्रथम संत सतगुरु हुए। इन्होंने मूर्त्ति पूजा, देवी देव की उपासना, जाति भेद, और मद्य मांस के अहार का बड़े जोर से खंडन किया है। इन की ऊँची गति, प्रचंड भक्ति और वैराग असदृश थे और इन के अनुभवी उपदेश और शिक्षा ऐसी अनूठी हैं जिस के हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सबही क़ायल हैं और उनका सविस्तर जीवन-चरित्र और बहुत से बचन और उपदेश अँगरेजी व फ़ारसी में छापे हैं। इन्होंने मगहर (जिला बस्ती) में जाकर अपना चोला छोड़ा जहाँ के मरने से पंडितों के मत के अनुसार गदहे का जन्म मिलता है। मगहर में इनके हिन्दू शिष्यों की बनाई हुई समाधि और मुसलमानों की बनाई हुई क़बर दोनों अब तक मौजूद हैं। [सविस्तार जीवन-चरित्र कबीर शब्दावली भाग १ में छपा है]।

॥ गुरु देव ॥

गुरु को कीजै दंडवत, कोटि कोटि परनाम।
कीट न जानै भृङ्ग को, वह करि ले आप समान ॥ १ ॥
सतगुरु सम को है सगा, साधू सम को दात।
हरि समान को हितू है, हरिजन सम को जाति ॥ २ ॥
सतगुरु की महिमा अनँत, अनँत किया उपकार।
लोचन अनँत उघारिया, अनँत दिखावनहार ॥ ३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरु गोबिँद दोऊ खड़े, का के लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोबिँद दियो बताय॥ ४॥
सब धरती कागद करूँ, लेखनि सब बनराय।
सात समुँद की मसि करूँ, गुरु गुन लिखा न जाय॥ ५॥
सत्त नाम के पटतरे, देवे को कछु नाहिँ।
क्या लै गुरु संतोषिये, हवस रही मन माहिँ॥ ६॥
मन दीया तिन सब दिया, मन की लार[1] सरीर।
अब देवे को कछु नहीँ, यों कह दास कबीर॥ ७॥
तन मन दिया तो भल किया, सिर का जासी भार।
कबहूँ कहै कि मैं दिया, घनी सहैगा मार॥ ८॥
गुरु कुम्हार सिष कुंभ[2] है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै[3] चोट॥ ९॥
सतगुरु महल बनाइया, प्रेम गिलावा दीन्ह।
साहिब दरसन कारने, सबद झरोखा कीन्ह॥१०॥
ज्ञान समागम प्रेम सुख, दया भक्ति बिस्वास।
गुरु सेवा तेँ पाइये, सतगुरु[4] चरन निवास॥११॥
कबीर ते नर अंध हैँ, गुरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिँ ठौर॥१२॥
गुरू बड़े गोबिंद तेँ, मन मेँ देखु बिचार।
हरि सुमिरै सो वार है, गुरु सुमिरै सो पार॥१३॥
गुरू मिला तब जानिये, मिटै मोह तन ताप।
हर्ष सोक ब्यापै नहीँ, तब गुरु आपै आप॥१४॥
जल परमानै माछरी, कुल परभावै बुद्धि।
जा को जैसा गुरु मिलै, ता को तैसी सुद्धि॥१५॥

(१) साथ। (२) घड़ा। (३) लगाता है। (४) सत्य पुरुष।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह तन बिष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरु मिलैं, तौ भी सस्ता जान ॥१६॥
बहे बहाये जात थे, लोक बेद के साथ।
पैंड़ा में सतगुरु मिले, दीपक दीन्हा हाथ ॥१७॥
ऐसा कोई ना मिला, सत्त नाम का मीत।
तन मन सौंपै मिरग ज्यों, सुनै बधिक का गीत ॥१८॥
ऐसे तो सतगुरु मिले, जिन से रहिये लागि।
सब ही जग सीतल भया, जब मिटी आपनी आगि ॥१९॥
सतगुरु हम से रीझि कै, एक कहा परसंग।
बरसा बादल प्रेम का, भींजि गया सब अंग ॥२०॥
सतगुरु साचा सूरमा, नख सिख मारा पूर।
बाहर घाव न दीसई, भीतर चकनाचूर ॥२१॥
सतगुरु मारा तान कर, सबद सुरंगी बान।
मेरा मारा फिर जिये, तो हाथ न गहूँ कमान ॥२२॥
सतगुरु मारा प्रेम से, रही कटारी टूट।
वैसी अनी न सालही, जैसी सालै मूठ[1] ॥२३॥
कोटिन चंदा ऊगवैं, सूरज कोटि हजार।
सतगुरु मिलिया बाहरे, दीसत घोर अँधार ॥२४॥
जीव अधम औ कुटिल है, कबहूँ नहिँ पतियाय।
ता को औगुन मेटि कै, सतगुरु होत सहाय ॥२५॥
जन कबीर बंदन करै, केहि बिधि कीजै सेव।
वार पार की गम नहीँ, नमो नमो गुरुदेव ॥२६॥

---

(१) अनी अर्थात नोक कटारी की जो टूट कर हृदय में रह गई वह इतना कष्ट नहीँ देती है जितना मूठ का बाहर रह जाना, यानी प्रेम कटारी समूची। क्योँ न घुस गई।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ झूठे गुरु ॥

जा का गुरु है आँधरा, चेला निपट निरंध[1] ।
अंधे अंधा ठेलिया, दोऊ कूप परंत ॥ १ ॥
पूरा सतगुरु ना मिला, सुनी अधूरी सीख ।
स्वाँग जती का पहिरि कै, घर घर माँगै भीख ॥ २ ॥
गुरू गुरू में भेद है, गुरू गुरू में भाव ।
सोई गुरु नित बंदिये, (जो) सबद बतावे दाव ॥ ३ ॥
कनफूका गुरु हद्द का, बेहद का गुरु और ।
बेहद का गुरु जब मिलै, (तब) लहै ठिकाना ठौर ॥ ४ ॥
बंधे को बंधा मिलै, छूटै कौन उपाय ।
कर सेवा निरबंध की, पल में लेत छुड़ाय ॥ ५ ॥
झूठे गुरु के पच्छ को, तजत न कीजै बार ।
द्वार न पावै सबद का, भटकै बारंबार ॥ ६ ॥

॥ नाम ॥

आदि नाम पारस अहै, मन है मैला लोह ।
परसत ही कंचन भया, छूटा बंधन मोह ॥ १ ॥
आदि नाम निज मूल है, और मंत्र सब डार[2] ।
कहै कबीर निज नाम बिनु, बूड़ि मुआ संसार ॥ २ ॥
कोटि नाम संसार में, ता तैं मुक्ति न होय ।
आदि नाम जो गुप्त जप, बूझै बिरला कोय ॥ ३ ॥
राम राम सब कोइ कहै, नाम न चीन्है कोय ।
नाम चीन्हि सतगुरु मिलै, नाम कहावै सोय ॥ ४ ॥
जो जन होइहै जौहरी, रतन लेहि बिलगाय ।
सोहं सोहं जपि मुआ, मिथ्या जनम गँवाय ॥ ५ ॥

---

(१) जिसकी आँखें बिलकुल बंद हैं । (२) शाखा ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाम रतन धन मुज्झ में, खान खुली घट माहिँ।
सेँतमेँत ही देत हौँ, गाहक कोई नाहिँ ॥ ६ ॥
ज्ञान दीप परकास करि, भीतर भवन जराय।
तहाँ सुमिर सतनाम को, सहज समाधि लगाय ॥ ७ ॥
एक नाम को जानि करि, दूजा देइ बहाय।
तीरथ ब्रत जप तप नहीँ, सतगुरु चरन समाय ॥ ८ ॥
अस अवसर नहिँ पाइहौ, धरौ नाम कढ़िहार[१]।
भवसागर तरि जाव तब, पलक न लागै बार ॥ ९ ॥
आसा तो इक नाम की, दूजी आस निरास।
पानी माहीँ घर करै, तौहू मरै पियास ॥१०॥
नाम जो रत्ती एक है, पाप जो रती हजार।
आध रती घट संचरै, जारि करै सब छार ॥ ११॥
सत्त नाम निज औषधी, सतगुरु दई बताय।
औषधि खाय रुपथ[२] रहि, ता की बेदन जाय ॥१२॥
सुपनहुँ में बर्राइ के, धोखेहु निकरै नाम।
वा के पग की पैँतरी[३], मेरे तन को चाम ॥१३॥
जा की गाँठी नाम है, ता के है सब सिद्धि।
कर जोरे ठाढ़ी सबै, अष्ट सिद्धि नव निद्धि ॥१४॥
नाम जपत कुष्टी भला, चुइ चुइ परै जु चाम।
कंचन देँह केहि काम की, जा मुख नाहीँ नाम ॥१५॥
सुख के माथे सिलि परै, (जो) नाम हृदय से जाय।
बलिहारी वा दुक्ख की, पल पल नाम रटाय ॥१६॥
लेने को सतनाम है, देने को अन दान।
तरने को आधीनता, बूड़न को अभिमान ॥१७॥

(१) निकालने वाला। (२) परहेजी खाना। (३) जूती।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जैसा माया मन रम्यो, तैसो नाम रमाय।
तारा मंडल बेधि कै, तब अमरापुर जाय ॥१८॥
नाम पीव का छोड़ि कै, करै आन का जाप।
बेस्या केरा पूत ज्यों, कहै कौन को बाप ॥१९॥
पावक रूपी नाम है, सब घट रहा समाय।
चित चकमक लागै नहीं, धूआँ ह्वै ह्वै जाय ॥२०॥
लूटि सकै तो लूटि ले, सत्त नाम की लूटि।
पाछे फिरि पछिताहुगे, प्रान जाहिँ जब छूटि ॥२१॥

॥ सुमिरन ॥

सुमिरन से सुख होत है, सुमिरन से दुख जाय।
कह कबीर सुमिरन किये, साईँ माहिँ समाय ॥ १ ॥
दुख मेँ सुमिरन सब करै, सुख मेँ करै न कोय।
जो सुख मेँ सुमिरन करै, तो दुख काहे होय ॥ २ ॥
सुमिरन की सुधि योँ करै, ज्योँ गागर पनिहार।
हालै डोलै सुरति मेँ, कहै कबीर बिचार ॥ ३ ॥
सुमिरन की सुधि योँ करै, जैसे दाम कँगाल।
कह कबीर बिसरै नहीँ, पल पल लेइ सम्हाल ॥ ४ ॥
सुमिरन सुरति लगाइ के, मुख तेँ कछू न बोल।
बाहर के पट देइ के, अंतर के पट खोल ॥ ५ ॥
माला फेरत मन खुसी, ता तेँ कछू न होय।
मन माला के फेरते, घट उँजियारी होय ॥ ६ ॥
कबीर माला मनहिँ को, और संसारी भेख।
माला फेरे हरि मिलैँ, तो गले रहट के देख ॥ ७ ॥
माला तो कर मेँ फिरै, जीभ फिरै मुख माहिँ।
मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिँ ॥ ८ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तन थिर मन थिर बचन थिर, सुरत निरत थिर होय।
कह कबीर इस पलक को, कलप न पावै कोय॥ ९॥

सहजेही धुनि होत है, हर दम घट के माहिँ।
सुरत सबद मेला भया, मुख की हाजत नाहिँ॥१०॥

जाप मरै अजपा मरै, अनहद भी मरि जाय।
सुरत समानी सबद में, ताहि काल नहिँ खाय॥११॥

जप तप संजम साधना, सब सुमिरन के माहिँ।
कबीर जानै भक्त जन, सुमिरन सम कछु नाहिँ॥१२॥

कबीर निर्भय नाम जपु, जब लगि दीवा बाति।
तेल घटै बाती बुझै, तब सोवो दिन राति॥१३॥

जिवना थोरा ही भला, जो सत सुमिरन होय।
लाख बरस का जीवना, लेखे धरै न कोय॥१४॥

सुमिरन का हल जोतिये, बीजा नाम जमाय।
खंड ब्रह्मंड सूखा पड़ै, तहू न निस्फल जाय॥१५॥

देखा देखी सब कहै, भोर भये हरि नाम।
अर्ध रात कोइ जन कहै, खानाजाद गुलाम॥१६॥

कबीर धारा अगम की, सतगुरु दई लखाय।
उलटि ताहि सुमिरन करो, स्वामी संग मिलाय॥१७॥

॥ अनहद शब्द ॥

गगन मँडल के बीच में, जहाँ सोहंगम डोरि।
सबद अनाहद होत है, सुरत लगी तहँ मोरि॥ १ ॥

कबीर कमल प्रकासिया, ऊगा निर्मल सूर।
रैन अँधेरी मिटि गई, बाजे अनहद तूर॥ २ ॥

निझर झरै अनहद बजै, तब उपजै ब्रह्म गियान।
अविगति अंतर प्रगटही, लगा प्रेम निज ध्यान॥ ३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुन्न मँडल में घर किया, बाजै सबद रसाल।
रोम रोम दीपक भया, प्रगटे दीनदयाल ॥ ४ ॥
कबीर सबद सरीर में, बिन गुन[१] बाजै ताँत।
बाहर भीतर रमि रहा, ता तें छूटी भ्रांत ॥ ५ ॥
सबद सबद बहु अंतरा, सार सबद चित देय।
जा सबदै साहिब मिलै, सोई सबद गहि लेय ॥ ६ ॥
सबद सबद सब कोइ कहै, वो तो सबद बिदेह।
जिभ्या पर आवै नहीँ, निरखि परखि करि लेह ॥ ७ ॥
एक सबद सुखरास है, एक सबद दुखरास।
एक सबद बंधन कटै, एक सबद गल फाँस ॥ ८ ॥
सबद गुरू को कीजिये, बहुतक गुरू लबार।
अपने अपने लोभ को, ठौर ठौर बटमार ॥ ९ ॥
सबद बिना स्रुति आँधरी, कहो कहाँ को जाय।
द्वार न पावै सबद का, फिरि फिर भटका खाय ॥१०॥
सोरठा--ज्ञानी सुनहु सँदेस, सबद बिबेकी पेखिया।
कह्यौ मुक्तिपुर देस, तीनि लोक के बाहिरे ॥११॥
मन तहँ गगन समाय, धुनि सुनि सुनि कै मगन ह्वै।
नहिँ आवै नहिँ जाय, सुन्न सबद थिति पावही ॥१२॥

॥ चितावनी ॥

कबीर गर्ब न कीजिये, काल गहे कर केस।
ना जानौँ कित मारिहै, क्या घर क्या परदेस ॥ १ ॥
हाड़ जरै ज्यौँ लाकड़ी, केस जरै ज्यौँ घास।
सब जग जरता देखि करि, भये कबीर उदास ॥ २ ॥

---

(१) रस्सी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

झूठे सुख को सुख कहैं, मानत हैं मन मोद।
जगत चबेना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद ॥ ३ ॥
कुसल कुसल ही पूछते, जग में रहा न कोय।
जरा[1] मुई ना भय मुआ, कुसल कहाँ से होय ॥ ४ ॥
पानी केरा बुदबुदा, अस मानुष की जाति।
देखत ही छिपि जायगी, ज्यों तारा परभाति ॥ ५ ॥
रात गँवाई सोय करि, दिवस गँवायो खाय।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय ॥ ६ ॥
लूटि सकै तो लूटि ले, सत्त नाम भंडार।
काल कंठ तैं पकरिहै, रोकै दसो दुवार ॥ ७ ॥
आछे दिन पाछे गये, गुरु से किया न हेत।
अब पछतावा क्या करै, जब चिड़ियाँ चुग गइँ खेत ॥ ८ ॥
आज कहै मैं काल्ह भजूँगा, काल्ह कहै फिर काल्ह।
आज काल्ह के करत ही, औसर जासी चाल ॥ ९ ॥
काल्ह करै सो आज करु, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगा कब्ब ॥ १० ॥
पाव पलक की सुधि नहीं, करै काल्ह का साज।
काल अचानक मारसी, ज्यों तीतर को बाज ॥ ११ ॥
कबीर नौबत आपनी, दिन दस लेहु बजाय।
यह पुर पट्टन[2] यह गली, बहुरि न देखौ आय ॥ १२ ॥
पाँचो नौबत बाजती, होत छतीसो राग।
सो मंदिर खाली पड़ा, बैठन लागे काग ॥ १३ ॥
कबीर थोड़ा जीवना, माँडै बहुत मँडान।
सबहि उभा[3] में लगि रहा, राव रंक सुल्तान ॥ १४ ॥

(१) वृद्ध अवस्था। (२) शहर। (३) चिंता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कहा चुनावै मेड़ियाँ, लंबी भीति उसारि[१]।
घर तो साढ़े तीन हथ, घना तो पौने चार[२] ॥१५॥
कबीर गर्ब न कीजिये, ऊँचा देखि अवास।
काल्ह परौं भुइँ लेटना, ऊपर जमसी घास ॥१६॥
पक्की खेती देखि करि, गर्बै कहा किसान।
अजहूँ झोला बहुत है, घर आवै तब जान ॥१७॥
माटी कहै कुम्हार को, तूँ क्या रूँदै मोहिँ।
इक दिन ऐसा होइगा, मैं रूँदूँगी तोहिँ १८॥
कहा कियो हम आइ के, कहा करैंगे जाइ।
इत के भये न उत्त के, चाले मूल गँवाइ ॥१९॥
यह तन काँचा कुंभ[३] है, लिये फिरै था साथ।
टपका[४] लागा फूटिया, कछु नहिँ आया हाथ ॥२०॥
कबीर यह तन जात है, सकै तो ठौर लगाव।
कै सेवा कर साध की, कै गुरु के गुन गाव ॥२१॥
मोर तोर की जेवरी[५], बटि बाँधा संसार।
दास कबीरा क्यों बँधै, जा के नाम अधार ॥२२॥
आये हैं सो जाइँगे, राजा रंक फकीर।
एक सिँघासन चढ़ि चले, इक बाँधे जात जँजीर ॥२३॥
कबीर यह तन जात है, सकै तो राखु बहोरि।
खाली हाथों वे गये, जिन के लाख करोरि ॥२४॥
आस पास जोधा खड़े, सभी बजावैँ गाल।
मंझ महल से ले चला, ऐसा काल कराल ॥२५॥

---

(१) ओसारा। (२) जीव का घर जो शरीर है उसका नाप साढ़े तीन हाथ होता है या बहुत लम्बा हुआ तो पौने चार हाथ। (३) मिट्टी का घड़ा। (४) ठोकर। (५) रस्सी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हाँकों परबत फाटते, समुँद्र घूँट भराय।
ते मुनिवर धरती गले, क्या कोइ गर्ब कराय ॥२६॥
या दुनिया में आइ के, छाड़ि देइ तू ऐंठ।
लेना होय सो लेइ ले, उठी जात है पैंठ ॥२७॥
तन सराय मन पाहरू[1], मनसा उतरी आय।
कोउ काहू का है नहीँ, (सब) देखा ठोंक बजाय ॥२८॥
मैं मैं बड़ी बलाय है, सको तो निकसो भागि।
कहै कबीर कब लगि रहै, रुई लपेटी आगि ॥२९॥
✓कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।
आप ठगे सुख ऊपजै, और ठगे दुख होय ॥३०॥
कुल करनी के कारने, हंसा गया बिगोय।
तब क्या कुल की लाज है, चार पाँव का होय ॥३१॥
मैं भँवरा तोहिँ बरजिया, बन बन बास न लेय।
अटकैगा कहुँ बेल से, तड़पि तड़पि जिय देय ॥३२॥
ऐसी गति संसार की, ज्योँ गाड़र की ठाट[2]।
एक पड़ा जेहि गाड़[3] में, सबै जाहिँ तेहि बाट ॥३३॥
तू मत जानै बावरे, मेरा है सब कोय।
पिंड प्रान से बँधि रहा, सो अपना नहिँ होय ॥३४॥
एक सीस का मानवा, करता बहुतक हीस[4]।
लंकापति रावन गया, बीस भुजा दस सीस ॥३५॥
इक दिन ऐसा होयगा, कोउ काहू का नाहिँ।
घर की नारी[5] को कहै, तन की नारी[6] जाहिँ ॥३६॥

---

(१) पहरेदार। (२) भेड़ का झुंड। (३) गड़हा। (४) हिर्स। (५) स्त्री। (६) नाड़ी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

काल चक्र चक्की चलै, सदा दिवस अरु रात।
सगुन अगुन दुइ पाटला, ता मेँ जीव पिसात ॥३७॥

आसै पासै जो फिरै, निपट पिसावै सोय।
कीला से लागा रहै, ता को बिघन न होय[१] ॥३८॥

नाम भजो तो अब भजो, बहुरि भजोगे कब्ब।
हरियर हरियर रूखड़े, ईँधन हो गये सब्ब ॥३९॥

माली आवत देखि कै, कलियाँ करैँ पुकारि।
फूली फूली चुनि लिये, काल्हि हमारी बारि[२] ॥४०॥

हम जानैँ थे खाहिँगे, बहुत जमीँ बहु माल।
ज्योँ का त्योँही रहि गया, पकरि लै गया काल ॥४१॥

दव[३] की दाही लाकड़ी, ठाढ़ी करै पुकार।
अब जो जावँ लुहार घर, डाहै दूजी बार ॥४२॥

मेरा बीर[४] लुहारिया, तू मत जारै मोहिँ।
इक दिन ऐसा होयगा, मैँ जारौँगी तोहिँ ॥४३॥

मरती बिरिया पुन[५] करै, जीवत बहुत कठोर।
कहै कबीर क्योँ पाइये, काढ़े खाँड़ा चोर[६] ॥४४॥

√जा को रहना उत्त घर, सो क्योँ लोड़ै[७] इत्त।
जैसे परघर पाहुना, रहै उठाये चित्त ॥४५॥

कबीर नाव है झाँझरी, कूरा[८] खेवनहार।
हलके हलके तिरि गये, बूड़े जिन सिर भार ॥४६॥

---

(१) मुँह से सभी कहते हैँ कि काल की चक्की चल रही है पर सच्चे मन से कोई नहीँ मानता नहीँ तो कीला जिसकी सत्ता से वह घूमती है अर्थात भगवंत को ऐसा दृढ़ कर पकड़ै कि आवागवन से रहित हो जाय। (२) पारी। (३) अगिन। (४) भाई। (५) पुन्य दान। (६) जब चोर तलवार निकाले खड़ा है उसको कैसे पकड़ सकोगे। (७) चाहै या चाह करै। (८) कुटिल।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो ऊगै सो अथवै[1], फूलै सो कुम्हिलाय ।
जो चुनिये सो ढहि परै, जामै[2] सो मरि जाय ॥ ४७॥

मनुष जन्म दुर्लभ अहै, होय न बारंबार ।
तरवर से पत्ता झरै, बहुरि न लागै डार ॥४८॥

✓साथी हमरे चलि गये, हम भी चालनहार ।
कागद में बाकी रही, ता तें लागी बार ॥४९॥

खुलि खेलो संसार में, बाँधि न सक्कै कोय ।
घाट जगाती क्या करै, सिर पर पोट[3] न होय ॥५०॥

॥ भक्ती ॥

गुरु भक्ती अति कठिन है, ज्यों खाँड़े की धार ।
बिना साच पहुँचै नहीं, महा कठिन ब्यौहार ॥ १ ॥

कबीर गुरु की भक्ति का, मन में बहुत हुलास ।
मन मनसा माँजे नहीं, होन चहत है दास ॥ २ ॥

हरष बड़ाई देखि करि, भक्ति करै संसार ।
जब देखै कछु हीनता, औगुन धरै गँवार ॥ ३ ॥

भक्ति भेष बहु अंतरा, जैसे धरनि अकास ।
भक्त लीन गुरु चरन में, भेष जगत की आस ॥ ४ ॥

देखा देखी भक्ति को, कबहुँ न चढ़सी रंग ।
बिपति पड़े यों छाड़सी, ज्यों कैंचुली भुजंग ॥ ५ ॥

भक्ति भाव भादों नदी, सबै चलीं घहराय ।
सरिता सोई सराहिये, जो जेठ मास ठहराय ॥ ६ ॥

भक्ति दुवारा साँकरा, राई दसवें भाव[4] ।
मन ऐरावत[5] ह्वै रहा, कैसे होइ समाव ॥ ७ ॥

(१) अस्त होय; डूबै । (२) जनमै । (३) कर्म का बोझ । (४) राई के दसवें भाग जैसा झीना दरवाजा भक्ति का है । (५) इन्द्र का हाथी ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भक्ति निसेनी[1] मुक्ति की, संत चढ़े सब धाय।
जिन जिन मन आलस किया, जनम जनम पछिताय॥ ८ ॥
सत्त नाम हल जोतिया, सुमिरन बीज जमाय।
खंड ब्रह्मँड सूखा पड़ै, भक्ति बीज नहिँ जाय॥ ९ ॥
जब लगि भक्ति सकाम है, तब लगि निस्फल सेव।
कह कबीर वह क्योँ मिलै, निःकामी निज देव॥१०॥

॥ लव ॥

लव लागी तब जानिये, छूटि कभूँ नहिँ जाय।
जीवत लव लागी रहै, मूए तहँहिँ समाय॥ १ ॥
जैसी लव पहिले लगी, तैसी निबहै ओर।
अपनी देँह की को गिनै, तारै पुरुष करोर॥ २ ॥
लागी लागी क्या करै, लागी बुरी बलाय।
लागी सोई जानिये, जो वार पार ह्वै जाय॥ ३ ॥
लगी लगन छूटै नहीँ, जीभ चोँच जरि जाय।
मीठा कहा अँगार में, जाहि चकोर चबाय॥ ४ ॥
सोओँ तो सुपने मिलै, जागौँ तो मन माहिँ।
लोचन[2] राता सुधि हरी, बिछुरत कबहूँ नाहिँ॥ ५ ॥
ज्योँ तिरिया पीहर[3] बसै, सुरति रहै पिय माहिँ।
ऐसे जन जग में रहैँ, हरि को भूलैँ नाहिँ॥ ६ ॥

॥ बिरह ॥

बिरहिनि देइ सँदेसरा, सुनो हमारे पीव।
जल बिन मच्छी क्योँ जिये, पानी में का जीव॥ १ ॥
बिरह तेज तन में तपै, अंग सबै अकुलाय।
घट सूना जिव पीव में, मौत ढूँढ़ि फिरि जाय॥ २ ॥

(१) सीढ़ी। (२) आँख। (३) मायके।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिरह जलंती देखि करि, साईं आये धाय।
प्रेम बूँद से छिरकि कै, जलती लई बुझाय ॥ ३ ॥

अँखियाँ तो झाईं परी, पंथ निहार निहार।
जिभ्या तो छाला परा, नाम पुकार पुकार ॥ ४ ॥

नैनन तो झरि लाइया, रहट बहै निसु बास।
पपिहा ज्यों पिउ पिउ रटै, पिया मिलन की आस ॥ ५ ॥

बिरह बड़ो बैरी भयो, हिरदा धरै न धीर।
सुरत-सनेही ना मिलै, तब लगि मिटै न पीर ॥ ६ ॥

बिरहिनि ऊभी पंथ सिर, पंथिनि पूछै धाय[1]।
एक सबद कहु पीव का, कब रे मिलैंगे आय ॥ ७ ॥

बहुत दिनन की जोवती, रटत तुम्हारो नाम।
जिव तरसै तुव मिलन को, मन नाहीं बिस्राम ॥ ८ ॥

बिरह भुवंगम[2] तन डसा, मंत्र न लागै कोय।
नाम बियोगी ना जिये, जिये तो बाउर[3] होय ॥ ९ ॥

बिरह भुवंगम पैठि कै, किया कलेजे घाव।
बिरही अंग न मोड़िहै, ज्यों भावै त्यों खाव ॥ १० ॥

कबीर सुंदरि यों कहै, सुनिये कंत सुजान।
बेग मिलो तुम आइ कै, नहीं तो तजिहौं प्रान ॥ ११ ॥

कै बिरहिनि को मीच दे, कै आपा दिखलाय।
आठ पहर का दाझना, मो पै सहा न जाय ॥ १२ ॥

बिरह कमंडल कर लिये, बैरागी दोउ नैन।
माँगैं दरस मधूकरी, छके रहैं दिन रैन ॥ १३ ॥

---

(१) बिरहिन रास्ते में खड़ी हो कर बटोही से पूछती है। (२) साप (३) बौरहा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

येहि तन का दिवला करौं, बाती मेलौं जीव।
लोहू सींचौं तेल ज्यों, कब मुख देखौं पीव॥ १४॥
कबीर हँसना दूर करु, रोने से करु चीत।
बिन रोये क्यों पाइये, प्रेम पियारा मीत॥ १५॥
हँसौं तो दुख ना बीसरै, रोवौं बल घटि जाय।
मनहीं माहीं बिसुरना, ज्यों घुन काठहिँ खाय॥ १६॥
कीड़े काठ जो खाइया, खात किनहुँ नहिँ दीठ।
छाल उपार[1] जो देखिया, भीतर जमिया चीठ[2]॥ १७॥
हँस हँस कंत न पाइया, जिन पाया तिन रोय।
हाँसी खेले पिउ मिलैं, तो कौन दुहागिनि होय॥ १८॥
सुखिया सब संसार है, खावै औ सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागै औ रोवै॥ १९॥
नाम बियोगी बिकल तन, ताहि न चीन्हैं कोय।
तम्बोली का पान ज्यों, दिन दिन पीला होय॥ २०॥
माँस गया पिंजर रहा, ताकन लागे काग।
साहिब अजहुँ न आइया, मंद हमारे भाग॥ २१॥
बिरहा सेती मति अड़ै, रे मन मोर सुजान।
हाड़ माँस सब खात है, जीवत करै मसान॥ २२॥
आय सकौं नहिँ तोहिँ पै, सकौं न तुज्झ बुलाय।
जियरा योँ लय होयगा, बिरह तपाय तपाय॥ २३॥
हवस करै पिय मिलन की, औ सुख चाहै अंग।
पीड़ सहे बिनु पदमिनी, पूत न लेत उचंग[3]॥ २४॥
बिरहिनि ओदी लाकड़ी, सपचे औ धुँधुआय।
छूटि पड़ौं या बिरह से, जो सिगरो जरि जाय॥ २५॥

(१) उखाड़ कर। (२) लकड़ी का चूर या बुरादा। (३) उत्साह से।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तन मन जोबन यों जला, बिरह अगिनि से लागि।
मिर्तक पीड़ा जान ही, जानैगी क्या आगि ॥२६॥
बिरह जलंती मैं फिरौं, मो बिरहिनि को दुक्ख।
छाँह न बैठौं डरपती, मत जलि उट्ठै रुक्ख[1] ॥२७॥
चूड़ी पटकौं पलँग से, चोली लावौं आगि।
जा कारन यह तन धरा, ना सूती गल लागि ॥२८॥
रक्त माँस सब भखि गया, नेक न कीन्ही कानि[2]।
अब बिरहा कूकर भया, लागा हाड़ चबान ॥२९॥
बिरहा भयो बिछावना, ओढ़न बिपति बिजोग।
दुख सिरहाने पायतन[3], कौन बना संजोग ॥३०॥
बिरहिनि बिरह जगाइया, पैठि ढँढोरै छार[4]।
मत कोइ कोइला ऊबरै, जारै दूजी बार ॥३१॥
अंक भरी भरि मेंटिये, मन नहिं बाँधै धीर।
कह कबीर ते क्या मिले, जब लगि दोय सरीर ॥३२॥
जो जन बिरही नाम के, झीना पिंजर तासु।
नैन न आवै नींदड़ी, अंग न जामै माँसु ॥३३॥
कबीर चिनगी बिरह की, मो तन पड़ी उड़ाय।
तन जरि धरती हू जरी, अंबर जरिया जाय ॥३४॥
हिरदे भीतर दव[5] बलै, धुवाँ न परगट होय।
जा के लागी सो लखै, को जिन लाई सोय ॥३५॥
पावक रूपी नाम है, सब घट रहा समाय।
चित चकमक चहुटै[6] नहीं, धूवाँ ह्वै ह्वै जाय ॥३६॥

---

(१) पेड़। (२) लिहाज़, मुरौवत। (३) पैताने। (४) राख को ढँढोलता है। (५) आग। (६) चोट लगाना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिरह प्रबल दल साजि के, घेर लियो मोहिँ आय।
नहिँ मारै छाड़ै नहीँ, तलफि तलफि जिय जाय ॥३७॥
जो जन बिरही नाम के, तिन की गति है येह।
देँही से उद्यम करैँ, सुमिरन करैँ बिदेह ॥३८॥
बिरहा बिरहा मत कहो, बिरहा है सुल्तान।
जा घट बिरह न संचरै, सो घट जान मसान ॥३९॥
सो दिन कैसा होयगा, गुरू गहैँगे बाँह।
अपना करि बैठावहीँ, चरन कँवल की छाँहिँ ॥४०॥
बिरहिनि थी तो क्योँ रही, जरी न पिउ के साथ।
रहि रहि मूढ़ गहेलरी, अब क्योँ मीँजै हाथ ॥४१॥
सब रग ताँत रबाब[1] तन, बिरह बजावै नित्त।
और न कोई सुनि सकै, कै साईँ कै चित्त ॥४२॥
आगि लगी आकास मेँ झरि झरि परे अँगार।
कबीर जरि कंचन भया, काँच भया संसार ॥४३॥
कबीर बैद बुलाइया, पकरि के देखो बाँहि।
बैद न बेदन जानई, करक करेजे माहिँ ॥४४॥
जाहु बैद घर आपने, तेरा किया न होय।
जिन या बेदन निर्मई[2], भला करैगा सोय ॥४५॥

॥ प्रेम ॥

यह तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिँ।
सीस उतारै भुइँ धरैं, तब पैठै घर माहिँ ॥ १॥
सीस उतारै भुइँ धरै, ता पर राखै पाँव।
दास कबीरा योँ कहै, ऐसा होय तो आव ॥ २ ॥

(१) एक बाजा जो मुँह से बजाया जाता है। (२) उपज ई, पैदा की।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रेम न बाड़ी ऊपजै, प्रेम न हाट बिकाय।
राजा परजा जेहि रुचै, सीस देइ लै जाय ॥ ३ ॥
प्रेम पियाला भरि पिया, राचि रहा गुरु ज्ञान।
दिया नगारा सबद का, लाल खड़े मैदान ॥ ४ ॥
छिनहिँ चढ़ै छिन उतरै, सो तो प्रेम न होय।
अघट[1] प्रेम पिंजर बसै, प्रेम कहावै सोय ॥ ५ ॥
आया प्रेम कहाँ गया, देखा था सब कोय।
छिन रोवै छिन में हँसै, सो तो प्रेम न होय ॥ ६ ॥
प्रेम प्रेम सब कोइ कहै, प्रेम न चीन्है कोय।
आठ पहर भीना रहै, प्रेम कहावै सोय ॥ ७ ॥
जब मै था तब गुरु नहीँ, अब गुरु हैँ हम नाहिँ।
प्रेम गली अति साँकरी, ता मेँ दो न समाहिँ ॥ ८ ॥
जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की, साँस लेत बिन प्रान ॥ ९ ॥
प्रेम बिकंता मैँ सुना, माथा साटे हाट[4]।
बूझत बिलँब न कीजिये, ततछिन दीजै काट ॥१०॥
प्रेम बिना धीरज नहीँ, बिरह बिना बैराग।
सतगुरु बिन जावै नहीँ, मन मनसा का दाग ॥११॥
प्रेम तो ऐसा कीजिए, जैसे चंद चकोर।
घीँचू[5] टूटि भुइँ माँ गिरै, चितवै वाही ओर ॥१२॥
अधिक सनेही माछरी, दूजा अल्प सनेह।
जबहीँ जल तेँ बीछुरै, तबहीँ त्यागै देह ॥१३॥
प्रीति जो लागी घुल गई, पैठि गई मन माहिँ।
रोम रोम पिउ पिउ करै, मुख की सरधा नाहिँ ॥१४॥

(१) जो कभी घटता नहीं। (२) बसै। (३) बदले। (४) बाज़ार। (५) गर्दन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो जागत सो सुपन में, ज्यौं घट भीतर स्वास ।
जो जन जा को भावता, सो जन ता के पास ॥१५॥

सोना सज्जन साधु जन, टूटि जुटै सौ बार ।
दुर्जन कूम्भ कुम्हार का, एकै धका दरार[1] ॥१६॥

जहाँ प्रेम तहँ नेम नहिँ, तहाँ न बुधि ब्यौहार ।
प्रेम मगन जब मन भया, तब कौन गिने तिथि बार ॥१७॥

प्रेम पाँवरी पहिरि कै, धीरज काजर देइ ।
सील सिँदूर भराइ कै, यौँ पिय का सुख लेइ ॥१८॥

प्रेम छिपाया ना छिपैं, जा घट परघट होय ।
जो पै मुख बोलै नहीँ, तो नैन देत हैँ रोय ॥१९॥

प्रेम भाव इक चाहिये, भेष अनेक बनाय ।
भावै घर मेँ बास करु, भावै बन मेँ जाय ॥२०॥

पीया चाहै प्रेम रस, राखा चाहै मान ।
एक म्यान मेँ दो खड्ग, देखा सुना न कान ॥२१॥

प्रेमी ढूँढ़त मैँ फिरौँ, प्रेमी मिलै न कोय ।
प्रेमी से प्रेमी मिलै, गुरु भक्ती दृढ़ होय ॥२२॥

कबीर प्याला प्रेम का, अंतर लिया लगाय ।
रोम रोम मेँ रमि रहा, और अमल क्या खाय ॥ २३॥

कबीर भाठी प्रेम की, बहुतक बैठे आय ।
सिर सौँपै सो पीवसी, नातर[2] पिया न जाय ॥२४॥

सबै रसायन मैँ किया, प्रेम समान न कोय ।
रति इक तन मेँ संचरै, सब तन कंचन होय ॥२५॥

---

(१) सज्जन और साधुजन सोने के समान हैं कि सौ बार भी टूटने पर जु[ड़] जाते हैँ पर दुष्ट जन मट्टी के घड़े के सदृश हैँ जो एक ही धक्का लगने से बि[गड़] जाता है। (२) नहीँ तो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साधू सीपि समुद्र के, सतगुरु स्वाँती बुंद।
तृषा गई इक बुंद से, क्या लै करूँ समुंद ॥२६॥
जैसी प्रीति कुटुम्ब से, तैसिहु गुरु से होय।
कहै कबीर वा दास का, पला न पकड़ै कोय ॥२७॥
नैनौं की करि कोठरी, पुतली पलँग बिछाय।
पलकौं की चिक डारि के, पिय को लिया रिझाय ॥२८॥
पिय का मारग कठिन है, खाँड़ा हो जैसा।
नाचन निकसी बापुरी, फिर घूँघट कैसा ॥२९॥
पिय का मारग सुगम है, तेरा चलन अबेड़ा।
नाच न जानै बापुरी, कहै आँगना टेढ़ा ॥३०॥
जल में बसै कमोदनी, चंदा बसै अकास।
जो है जा का भावता, सो ता ही के पास ॥३१॥
पासा पकड़ा प्रेम का, सारी[1] किया सरीर।
सतगुरु दाव बताइया, खेलै दास कबीर ॥३२॥
खेल जो मँडा खेलाड़ि से, आनँद बढ़ा अघाय।
अब पासा काहू परौ, प्रेम बँधा जुग जाय ॥३३॥
प्रीतम कों पतियाँ लिखूँ, जो कहुँ होय बिदेस।
तन में मन में नैन में, ता को कहा सँदेस ॥३४॥

॥ बिश्वास ॥

कबीर क्या मैं चिंत हूँ, मम चिंते क्या होय।
मेरी चिंता हरि करै, चिंता मोहिं न कोय ॥ १ ॥
चिंता न करु अचिंत रहु, देनहार समरत्थ।
पसू पखेरू जीव जंत, तिन के गाँठि न हत्थ ॥ २ ॥

(१) गोट।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंडा पालै काछुई, बिन थन राखै पोख[१] ।
यों करता सब की करै, पालै तीनिउ लोक ॥ ३ ॥
✓साईं इतना दीजिये, जा में कुटुंब समाय ।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय ॥ ४ ॥

॥ दुबिधा ॥

दुबिधा जा के मन बसै, दयावंत जिव नाहिँ ।
कबीर त्यागौ ताहि को, भूलि देहु जनि बाहिँ ॥ १ ॥
हिरदे माहीँ आरसी, मुख देखा नहिँ जाय ।
मुख तो तबही देखई, दुबिधा देइ बहाय ॥ २ ॥
चीँटी चावल लै चली, बिच मेँ मिलि गइ दार[२] ।
कह कबीर दोउ ना मिलै, इक लै दूजी डार ॥ ३ ॥
संसा खाया सकल जग, संसा किनहुँ न बद्ध ।
जो बेधा गुरु अच्छरा, तिन संसा चुनि चुनि खद्ध ॥ ४ ॥

॥ सामर्थ ॥

साहिब से सब होत है, बंदे तेँ कछु नाहिँ ।
राई तेँ पर्बत करै, पर्बत राई नाइँ[३] ॥ १ ॥
साहिब सा समरथ नहीँ, गरुआ गहिर गँभीर ।
औगुन छाड़ै गुन गहै, छिनक उतारै तीर ॥ २ ॥
✓ना कछु किया न करि सका, ना करने जोग सरीर ।
जो कीया साहिब किया, ता तेँ भया कबीर ॥ ३ ॥
जिस नहिँ कोई तिसहिँ तूँ, जिस तूँ तिस सब होय ।
दरगह तेरी साइयाँ, मेटि न सक्कै कोय ॥ ४ ॥
इत कूआ उत बावड़ी, इत उत थाह अथाहि ।
दुहूँ दिसा फनि[४] फन कढ़े, समरथ पार लगाहि ॥ ५ ॥

---

(१) परवरिश । (२) दाल । (३) तुल्य । (४) साँप ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घट समुद्र लखि ना परै, उट्ठै लहरि अपार।
दिल दरिया समरथ बिना, कौन उतारै पार ॥ ६ ॥
साईं तुझ से बाहिरा, कौड़ी नाहिँ बिकाय।
जा के सिर पर तूँ धनी, लाखों मोल कराय ॥ ७ ॥
बालक रूपी साइयाँ, खेलै सब घट माहिँ।
जो चाहै सो करत है, भय काहू का नाहिँ ॥ ८ ॥

॥ बेहद ॥

हद में पीव न पाइये, बेहद में भरपूर।
हद बेहद की गम लखै, ता से पीव हजूर ॥ १ ॥
हद में बैठा कथत है, बेहद की गम नाहिँ।
बेहद की गम होयगी, तब कछु कथना काहि ॥ २ ॥
हद में रहै सो मानवी, बेहद रहै सो साध।
हद बेहद दोऊ तजै, ता का मता अगाध ॥ ३ ॥

॥ निज करता का निर्णय ॥

अछै पुरुष इक पेड़ है, निरंजन वा की डार।
तिरदेवा साखा भये, पात भया संसार ॥ १ ॥
नाद बिंदु तेँ अगम अगोचर, पाँच तत्त तेँ न्यार।
तीन गुनन तेँ भिन्न है, पुरुष अलक्ख अपार ॥ २ ॥
संपुट[1] माहिँ समाइया, सो साहिब नहिँ होय।
सकल माँड में रमि रहा, मेरा साहिब सोय ॥ ३ ॥
जा के मुँह माथा नहीँ, नाहीँ रूप अरूप।
पुहुप बास तेँ पातरा, ऐसा तत्त्व अनूप ॥ ४ ॥
समुँद पाटि लंका गयो, सीता को भरतार।
ताहि अगस्त अचै[2] गयो, इन में को करतार ॥ ५ ॥

(१) डिबिया शालग्राम के रखने की। (२) कथा है कि अगस्त मुनि ने समुद्र का पानी सब पी लिया था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ बिनय ॥

बिनवत हौं कर जोरि कै, सुनिये कृपा निधान।
साधु सँगति सुख दीजिये, दया गरीबी दान ॥ १ ॥
जो अब के सतगुरु मिलैं, सब दुख आखौं रोय।
चरनों ऊपर सीस धरि, कहौं जो कहना होय ॥ २ ॥
सुरति करो मेरे साइयाँ, हम हैं भवजल माहिं।
आपे ही बहि जायँगे, जो नहिं पकरो बाहिं ॥ ३ ॥
क्या मुख लै बिनती करौं, लाज आवत है मोहिं।
तुम देखत औगुन करौं, कैसे भावौं तोहिं ॥ ४ ॥
मैं अपराधी जनम का, नखसिख भरा बिकार।
तुम दाता दुख-भंजना, मेरी करो सम्हार ॥ ५ ॥
अवगुन मेरे बाप जी, बकसु गरीब-निवाज।
जो मैं पूत कपूत हौं, तऊ पिता को लाज ॥ ६ ॥
औगुन किये तो बहु किये, करत न मानी हार।
भावै बंदा बकसिये, भावै गरदन मार ॥ ७ ॥
साईं केरा बहुत गुन, औगुन कोई नाहिं।
जो दिल खोजौं आपना, सब औगुन मुझ माहिं ॥ ८ ॥
अंतरजामी एक तुम, आतम एक अधार।
जो तुम छोड़ो हाथ तें कौन उतारै पार ॥ ९ ॥
साहिब तुमहिं दयाल हो, तुम लगि मेरी दौर।
जैसे काग जहाज को, सूझै और न ठौर ॥ १० ॥
साईं तेरा कछु नहीं, मेरा होय अकाज।
बिरद[1] तुम्हारे नाम की, सरन परे की लाज ॥ ११ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

(१) महिमा, प्रण।

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुझ में औगुन तुज्झ गुन, तुझ गुन औगुन मुज्झ।
जो मैं बिसरौं तुज्झ को, तू मत बिसरै मुज्झ ॥१२॥
मन परतीत न प्रेम रस, ना कछु तन में ढंग।
ना जानौं उस पीव से, क्योंकर रहसी रंग ॥१३॥
तुम तो समरथ साइयाँ, दृढ़ करि पकरो बाहिँ।
धुरही लै पहुँचाइयो, जनि छाड़ो मग माहिँ ॥१४॥
भक्ति दान मोहिँ दीजिये, गुरु देवन के देव।
और नहीँ कछु चाहिये, निसि दिन तेरी सेव ॥१५॥

॥ गुरुमुख ॥

गुरुमुख गुरु चितवत रहै, जैसे मनी भुवंग।
कह कबीर बिसरै नहीँ, यह गुरुमुख को अंग ॥ १ ॥
गुरुमुख गुरु चितवत रहै, जैसे साह दिवान।
और कबीर न देखता, है वाही को ध्यान ॥ २ ॥
पहिले दाता सिष भया, जिन तन मन अरपा सीस।
पाछे दाता गुरु भये, जिन नाम दिया बकसीस ॥ ३ ॥

॥ मनमुख ॥

फल कारन सेवा करै, तजै न मन से काम।
कह कबीर सेवक नहीँ, चहै चौगुना दाम ॥ १ ॥
सतगुरु सबद उलंघि कै, जो सेवक कहिँ जाय।
जहाँ जाय तहँ काल है, कह कबीर समुझाय ॥ २ ॥
मेरा मुझ में कुछ नहीँ, जो कछु है सो तोर।
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागैगा मोर ॥ ३ ॥
तेरा तुझ में कुछ नहीँ, जो कछु है सो मोर।
मेरा मुझको सौंपते, जी धड़कैगा तोर ॥ ४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ निगुरा ॥

जो निगुरा सुमिरन करै, दिन में सौ सौ बार।
नगर नायका सत करै, जर कौन की लार[१] ॥ १ ॥
जो कामिनि परदे रहै, सुनै न गुरुमुख बात।
होइ जगत में कूकरी, फिरै उघारे गात ॥ २ ॥

॥ गुरुशिष्य खोज ॥

ऐसा कोऊ ना मिला, हम को दे उपदेस।
भवसागर में बूड़ता, कर गहि काढ़ै केस ॥ १ ॥
ऐसा कोई ना मिला, जा से कहूँ दुख रोय।
जा से कहिये भेद की, सो फिर बैरी होय ॥ २ ॥
हम देखत जग जात है, जग देखत हम जाहिँ।
ऐसा कोई ना मिला, पकड़ि छुड़ावै बाहिँ ॥ ३ ॥
सारा सूरा बहु मिले, घायल मिला न कोय।
घायल को घायल मिले, गुरु भक्ती दृढ़ होय ॥ ४ ॥
सिष तो ऐसा चाहिये, गुरु को सब कछु देय।
गुरु तो ऐसा चाहिये, सिष से कछु नहिँ लेय ॥ ५ ॥
सर्पहिँ दूध पिलाइये, सोई बिष है जाय।
ऐसा कोई ना मिला, आपेही विष खाय[२] ॥ ६ ॥
पुहपन केरी बास ज्योँ, व्यापि रहा सब ठाहिँ।
बाहर कबहुँ न पाइये, पावै संतोँ माहिँ ॥ ७ ॥
जिन ढूँढ़ा तिन पाइया, गहिरे पानी पैठि ॥
मैँ बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठि ॥ ८ ॥

---

(१) सहर की कसबी अगर सती होने का ढोँग रचै तो किस मर्द के साथ जलै। (२) अपने शिष्य के बिकारोँ को खींच ले।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ साध ॥

साध बड़े परमारथी, घन ज्यौं बरसैं आय।
तपन बुझावैं और की, अपनो पारस लाय ॥ १ ॥
दुख सुख एक समान है, हरष सोक नहिँ व्याप।
उपकारी निःकामता, उपजै छोह न ताप ॥ २ ॥
सदा रहैं संतोष में, धरम आप दृढ़ धार।
आस एक गुरुदेव की, और न चित्त बिचार ॥ ३ ॥
सावधान औ सीलता, सदा प्रफुल्लित गात।
निरबिकार गम्भीर मति, धीरज दया बसात ॥ ४ ॥
निरबैरी निःकामता, स्वामी सेती नेह।
बिषया से न्यारा रहै, साधन का मत येह ॥ ५ ॥
मान अपमान न चित धरै, औरन को सनमान।
जो कोई आसा करै, उपदेसै तेहि ज्ञान ॥ ६ ॥
सीलवंत दृढ़ ज्ञान मत, अति उदार चित होय।
लज्यावान अति निछलता, कोमल हिरदा सोय ॥ ७ ॥
दयावंत धरमक-ध्वजा, धीरजवान प्रमान।
संतोषी सुखदायक रु, सेवक परम सुजान ॥ ८ ॥
ज्ञानी अभिमानी नहीँ, सब काहू से हेत।
सत्यवान परस्वारथी, आदर भाव सहेत[1] ॥ ९ ॥
निस्चय भल अरु दृढ़ मता, ये सब लच्छन जान।
साध सोई है जगत में, जो यह लच्छनवान ॥१०॥
ऐसा साधू खोजि कै, रहिये चरनौं लाग।
मिटै जनम की कल्पना, जा के पूरन भाग ॥११॥

(१) संहित।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सिंहोँ के लेहँड़े नहीँ, हंसोँ की नहिँ पाँत।
लालोँ की नहिँ बोरियाँ, साध न चलैँ जमात[1] ॥१२॥
सिंह साध का एक मत, जीवन ही को खाय।
भाव-हीन मिरतक दसा, ता के निकट न जाय ॥१३॥
साध कहावन कठिन है, ज्योँ खाँड़े की धार।
डिगमिगाय तो गिर परै, निःचल उतरै पार ॥१४॥
गाँठी दाम न बाँधई, नहिँ नारी से नेह।
कह कबीर ता साध के, हम चरनन की खेह ॥१५॥
साध हमारी आतमा, हम साधन के जीव।
साधन मद्धे योँ रहौँ, ज्योँ पय मद्धे घीव ॥१६॥
साधु साधु सब एक हैँ, जस पोस्ता का खेत।
कोई बिबेकी लाल है, कोई सेत का सेत ॥१७॥
हरि से तू जनि हेत कर, कर हरिजन से हेत।
माल मुलुक हरि देत है, हरिजन हरि हीँ देत ॥१८॥
निराकार की आरसी, साधोँ हीँ की देँह।
लखा जो चाहे अलख को, (तो)इनहीँ मेँ लखिलेह ॥१९॥
कबीर दरसन साध का, साहिब आवैँ याद।
लेखे मेँ सोई घड़ी, बाकी के दिन बाद ॥२०॥
साध मिले साहिब मिले, अंतर रही न रेख।
मनसा बाचा कर्मना, साधू साहिब एक ॥२१॥
सुख देवैँ दुख को हरैँ, दूर करैँ अपराध।
कहैँ कबीर वे कब मिलैँ, परम सनेही साध ॥२२॥
✓जाति न पूछो साध की, पूछि लीजिये ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान ॥२३॥

(१) गरोह, भीड़ भाड़।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साध सेव जा घर नहीँ, सतगुरु पूजा नाहिँ।
सो घर मरघट सारिखा[1], भूत बसै ता माहिँ ॥२४॥

॥ भेष ॥

तन को जोगी सब करै, मन को बिरला कोय।
सहजै सब सिधि पाइये, जो मन जोगी होय ॥ १ ॥
मन माला तन मेखला, भय को करै भभूत।
अलख मिला सब देखता, सो जोगी अवधूत ॥ २ ॥
हम तो जोगी मनहिँ के, तन के हैँ ते और।
मन को जोग लगावते, दसा भई कछु और ॥ ३ ॥
भर्म न भागा जीव का, बहुतक धरिया भेष।
सतगुरु मिलिया बाहरे, अंतर रहिगा लेख ॥ ४ ॥

॥ असाध ॥

जेता मीठा बोलवा, तेता साधु न जान।
पहिले थाह दिखाइ कै, औँड़े देसी आन ॥ १ ॥
उज्जल देखि न धीजिये, बग ज्योँ माँडे ध्यान।
धूरे[2] बैठि चपेटही, योँ लै बूड़ै मान ॥ २ ॥
केसन[3] कहा बिगारिया, जो मूँड़ो सौ बार।
मन को क्योँ नहिँ मुँडिये, जा मेँ बिषय बिकार ॥ ३ ॥
साकट संग न बैठिये, अपनो अंग लगाय।
तत्व सरीरा झरि परै, पाप रहै लपटाय ॥ ४ ॥
सोवत साधु जगाइये, करै नाम का जाप।
ये तीनोँ सोवत भले, साकट सिंह रु साँप ॥ ५ ॥

---

(१) सरीखा, मिस्ल। (२) एक तरह की मोटी घास। (३) बाल।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ सतसंग ॥

[सज्जन के लिये]

संगति कीजे संत की, जिन का पूरा मन ।
अनमाले ही देत हैं, नाम सरीखा धन ॥ १ ॥
कबीर संगत साध की, हरै और की व्याधि ।
संगत बुरी असाध की, आठो पहर उपाधि ॥ २ ॥
कबीर संगत साध की, जौ की भूसी खाय ।
खीर खाँड़ भोजन मिलै, साकट संग न जाय ॥ ३ ॥
कबीर संगत साध की, ज्यौं गंधी का बास ।
जो कछु गंधी दे नहीं, तौ भी बास सुबास ॥ ४ ॥
ऋद्धि सिद्धि माँगौं नहीं, माँगौं तुम पै येह ।
निसि दिन दरसन साध का, कह कबीर मोहिं देय ॥ ५ ॥
कबीर संगत साध की, निस्फल कधी न होय ।
होसी चंदन बासना, नीम न कहसी कोय ॥ ६ ॥
राम बुलावा भेजिया, दिया कबीरा रोय ।
जो सुख साधू संग में, सो बैकुंठ न होय ॥ ७ ॥
बंधे को बंधा मिलै, छूटै कौन उपाय ।
कर संगत निरबंध की, पल में लेइ छुड़ाय ॥ ८ ॥
जा पल दर्सन साधु का, ता पल की बलिहारि ।
सत्त नाम रसना बसै, लीजै जनम सुधारि ॥ ९ ॥
कबीर खाई कोट की, पानी पिवै न कोय ।
जाय मिलै जब गंग से, सब गंगोदक होय ॥ १० ॥
एक घड़ी आधी घड़ी, आधी हूँ से आध ।
कबीर संगति साध की, कटै कोटि अपराध ॥ ११ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ सतसंग ॥

[दुर्जन के लिये]

संगति भई तो क्या भया, हिरदा भया कठोर।
नौ नेजा पानी चढ़ै, तऊ न भीजै कोर॥ १॥
हरिया जानै रूखड़ा, जो पानी का नेह।
सूखा काठ न जानही, केतहु बूड़ा मेह॥ २॥
साखी सबद बहुत सुना, मिटा न मन का दाग।
संगति से सुधरा नहीं, ता का बड़ा अभाग॥ ३॥
सत्त नाम रटिबो करै, निसि दिन साधुन संग।
कहो जो कौन बिचार तें, नाहीं लागत रंग॥ ४॥
मन दीया कहुँ औरही, तन साधुन के संग।
कह कबीर कोरी गजी, कैसे लागै रंग॥ ५॥

॥ कुसंग—दुर्जन और मूरख ॥

मूरख से क्या बोलिये, सठ से कहा बसाय।
पाहन में क्या मारिये, चोखा तीर नसाय॥ १॥
जानि बूझि साचो तजै, करै झूठ से नेह।
ता की संगति हे प्रभू, सपनेहू मति देह॥ २॥
दाग जो लागा नील का, सौ मन साबुन धोय।
कोटि जतन परबोधिये, कागा हंस न होय॥ ३॥
लहसुन से चंदन डरै, मत रे बिगारै बास।
निगुरा से सगुरा डरैं, (याँ) डरपै जग से दास॥ ४॥
हरिजन सेती रूसना, संसारी से हेत।
ते नर कधी न नोपजैं, ज्यों कालर[1] का खेत॥ ५॥
मारी मरैं कुसंग की, ज्यों केला ढिंग बेर।
वह हालै वह जीरई[2], साकट संग निबेर॥ ६॥

(१) रेहार यानी रेह का। (२) फाड़ै अर्थात पत्ते को चीर दे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केला तबहिँ न चेतिया, जब ढिंग जागी बेरि।
अब के चेते क्या भया, काँटों लीन्हा घेरि ॥ ७ ॥
ऊँचे कुल कहा जनमिया, (जो) करनी ऊँच न होय।
कनक कलस मद से भरा, साधन निंदा सोय ॥ ८ ॥
काँचा सेती मति मिलै, पाका सेती बान।
काँचा सेती मिलत ही, होय भक्ति में हान ॥ ९ ॥
तोहि पीर जो प्रेम की, पाका सेती खेल।
काँची सरसों पेरि कै, खली भया ना तेल ॥१०॥
समझा का घर और है, अनसमझा का और।
जा घर में साहिब बसैं, बिरला जानै ठौर ॥११॥
बुद्धि बिहूना आदमी, जानै नहीँ गँवार।
जैसे कपि परबस पर्यौ, नाचै घर घर बार[१] ॥१२॥
बुद्धि बिहूना अंध गज, पर्यौ फंद में आय।
ऐसे ही सब जग बँधा, कहा कहौँ समुझाय ॥१३॥
पंख छता[२] परिबस पर्यौ, सूवा के बुधि नाहिँ।
बुद्धि बिहूना आदमी, यौँ बंधा जग माहिँ ॥१४॥

मध्य ॥

भजूँ तो को है भजन को, तजूँ तो को है आन।
भजन तजन के मध्य में, सो कबीर मन मान ॥ १ ॥
हिंदू कहूँ तो मैं नहीं, मुसलमान भी नाहिँ।
पाँच तत्व का पूतला, गैबी खेलै नाहिँ ॥ २ ॥
अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप ॥ ३ ॥

(१) द्वार। (२) होते।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ समदृष्टी ॥

समदृष्टी सतगुरु किया, मेटा भरम बिकार।
जहँ देखौं तहँ एकही, साहिब का दीदार ॥ १ ॥
समदृष्टी तब जानिये, सीतल समता होय।
सब जीवन की आतमा, लखै एक सी सोय ॥ २ ॥

॥ सहज ॥

सहज सहज सब कोउ कहै, सहज न चीन्है कोय।
जा सहजे साहिब मिलै, सहज कहावै सोय ॥ १ ॥
सहज मिलै सो दूध सम, माँगा मिलै सो पानि।
कह कबीर वह रक्त सम, जा में ऐँचा तानि ॥ २ ॥
काहे को कलपत फिरै, दुखी होत बेकार।
सहजै सहजै होयगा, जो रचिया करतार ॥ ३ ॥

॥ सार गहनी ॥

साधू ऐसा चाहिये, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय ॥ १ ॥
औगुन को तो ना गहै, गुनही को लैं बीन।
घट घट महकै[१] मधुप[२] ज्यों, परमातम लै चीन्ह ॥ २ ॥
हंसा पय को काढ़ि ले, छोर नीर निरवार।
ऐसे गहै जो सार को, सो जन उतरै पार ॥ ३ ॥

॥ असार गहनी ॥

कबीर कीट[३] सुगंधि तजि, नरक गहै दिन रात।
असार-ग्राही मानवा, गहै असारहि बात ॥ १ ॥
आटा तजि भूसी गहै, चलनी देखु निहारि।
कबीर सारहि छाड़ि कै, करै असार अहार ॥ २ ॥

(१) सूघै। (२) भँवरा। (३) कीड़ा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रसहिँ छाड़ि छोही गहै, कोल्हू परतछ देख ।
गहै असारहिँ सार तजि, हिरदे नाहिँ बिबेक ॥ ३ ॥

॥ सूक्ष्म मार्ग ॥

उन तेँ कोई न बाहुरा, जा से बूझूँ धाय ।
इत तेँ सबही जात हैँ, भार लदाय लदाय ॥ १ ॥
उत तेँ सतगुरु आइया, जा की बुधि है धीर ।
भवसागर के जीव को, खेइ लगावैँ तीर ॥ २ ॥
गागर ऊपर गागरी, चोले ऊपर द्वार ।
सूली ऊपर साँथरा, जहाँ बुलावै यार ॥ ३ ॥
जो आवै तो जाय नहिँ, जाय तो आवै नाहिँ ।
अकथ कहानी प्रेम की, समझ लेहु मन माहिँ ॥ ४ ॥
सूली ऊपर घर करै, बिष का करै अहार ।
ता का काल कहा करै, जो आठ पहर हुसियार ॥ ५ ॥
यार बुलावै भाव से, मो पै गया न जाय ।
धन मैली पिउ ऊजला, लागि न सकौँ पाँय ॥ ६ ॥
नाँव न जानौँ गाँव का, बिन जाने कित जाँव ।
चलता चलता जुग भया, पाव कोस पर गाँव ॥ ७ ॥
सतगुरु दीनदयाल हैँ, दया करी मोहिँ आय ।
कोटि जनम का पंथ था, पल मेँ पहुँचा जाय ॥ ८ ॥
चलन चलन सब कोइ कहै, मोहिँ अँदेसा और ।
साहिब से परिचय नहीँ, पहुचैँगे केहि ठौर ॥ ९ ॥
कबीर का घर सिखर पर, जहाँ सिलहली गैल ।
पाँव न टिकै पपीलि[१] का, पंडित लादे बैल ॥१०॥

(१) चींटी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिन पाँवन की राह है, बिन बस्ती का देस।
बिना पिंड का पुरुष है, कहै कबीर सँदेस ॥ ११ ॥
घाटहि पानी सब भरै, औघट भरै न कोय।
औघट घाट कबीर का, भरै सो निर्मल होय ॥ १२ ॥
पहुँचेंगे तब कहेंगे, वही देस की सीच[1]।
अबहीं कहा तड़ागिये[2], बेड़ी पायन बीच ॥ १३ ॥
प्रान पिंड को तजि चलै, मुआ कहै सब कोय।
जीव छता[3] जामै मरै, सूछम लखै न सोय ॥ १४ ॥
मरिये तो मरि जाइये, छूटि परै जंजार।
ऐसा मरना को मरै, दिन में सौ सौ बार ॥ १५ ॥

॥ घट मठ (सर्व घट व्यापी) ॥

कस्तूरी कुंडल बसै, मृग ढूँढ़ै बन माहिँ।
ऐसे घट में पीव है, दुनियाँ जानै नाहिँ ॥ १ ॥
तेरा साईं तुज्झ में, ज्यों पुहुपन में बास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिरि फिरि ढूँढ़ै घास ॥ २ ॥
सब घट मेरा साइयाँ, सूनी सेज न कोय।
बलिहारी वा घट्ट की, जा घट परघट होय ॥ ३ ॥
ज्यों तिल माहीं तेल है, ज्यों चकमक में आगि।
तेरा साईं तुज्झ में, जागि सकै तो जागि ॥ ४ ॥
पावक रूपी साइयाँ, सब घट रहा समाय।
चित चकमक लागै नहीं, ता तें बुझि बुझि जाय ॥ ५ ॥

॥ सेवक और दास ॥

सेवक सेवा में रहै, अनत कहूँ नहिँ जाय।
दुख सुख सिर ऊपर सहै, कह कबीर समुझाय ॥ १ ॥

(१) सीतल स्थान। (२) डींग मारिये, उछलिये। (३) मौजूद रहते।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वार धनी के पड़ि रहै, धका धनी का खाय।
कबहुँक धनी निवाजई, जो दर छाड़ि न जाय ॥ २ ॥
कबीर गुरु सब को चहैं, गुरु को चहै न कोय।
जब लग आस सरीर की, तब लगि दास न होय ॥ ३ ॥
निरबंधन बंधा रहै, बंधा निरबँध होय।
करम करै करता नहीं, दास कहावै सोय ॥ ४ ॥
गुरु समरथ सिर पर खड़े, कहा कमी तोहिँ दास।
ऋद्धि सिद्धि सेवा करैं, मुक्ति न छाड़ै पास ॥ ५ ॥
दास दुखी तो हरि दुखी, आदि अंत तिहुँ काल।
पलक एक में प्रगट ह्वै, छिन में करै निहाल ॥ ६ ॥
दात धनी याचै नहीँ, सेव करै दिन रात।
कह कबीर ता सेवकहिँ, काल करै नहिँ घात ॥ ७ ॥
दासातन हिरदे नहीँ, नाम धरावै दास।
पानी के पीये बिना, कैसे मिटै पियास ॥ ८ ॥
मुक्ति मुक्ति माँगौं नहीँ, भक्ति दान दे मोहिँ।
और कोई याचौं नहीँ, निसि दिन याचौं तोहिँ ॥ ९ ॥
कबीर खालिक जागिया, और न जागै कोय।
कै जागै बिषया भरा, कै दास बंदगी जोय ॥ १० ॥

॥ सजीवन ॥

जरा मीच ब्यापै नहीँ, मुआ न सुनिये कोय।
चलु कबीर वा देस को, जहँ बैद साइयाँ होय ॥ १ ॥
कबीर मन तीखा किया, लाइ बिरह खरसान।
चित चरनों से चिपटिया, का करै काल का बान ॥ २ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भवसागर में यों रहो, ज्यों जल कँवल निराल।
मनुवाँ ठहाँ लै राखिये, जहाँ नहीँ जम काल॥ ३॥

॥ मौन ॥

ऐसो अद्भुत मत कथो, कथो तो धरो छिपाय।
बेद कुराना ना लिखी, कहौँ तो को पतियाय॥ १॥
जो देखै सो कहै नहिँ, कहै सो देखै नाहिँ।
सुनै सो समझावै नहीँ, रसना दृग स्रवन काहि॥ २॥
जो पकरै सो चलै नहिँ, चलै सो पकरै नाहिँ।
कह कबीर या साखि को, अरथ समझ मन माहिँ॥ ३॥
जानि बूझि जड़ होइ रहै, बल तजि निर्बल होय।
कह कबीर वा दास को, गंजि सकै नहिँ कोय॥ ४॥
बाद बिबादे बिष घना, बोले बहुत उपाध।
मौन गहै सब की सहै, सुमिरै नाम अगाध॥ ५॥
साकट का मुख बिम्ब[1] है, निकसत बचन भुवंग।
ता की औषधि मौन है, बिष नहिँ व्यापै अंग॥ ६॥

॥ सूरमा ॥

गगन दमामा बाजिया, पड़त निसाने चोट।
कायर भाजै कछु नहीँ, सूरा भाजै खोट॥ १॥
सूरा सोई सराहिये, लड़ै धनी के हेत।
पुरजा पुरजा होइ रहै, तऊ न छाड़ै खेत॥ २॥
सूरा सोई सराहिये, अंग न पहिरै लोह।
जूझै सब बँद खोलि कै, छाड़ै तन का मोह॥ ३॥

(१) बाँबी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खेत न छाड़ै सूरमा, जूझै दो दल माहिँ ।
आसा जीवन मरन की, मन में आनै नाहिँ ॥ ४ ॥
अब तो जूझे ही बनै, मुड़ चाले घर दूर ।
सिर साहिब को सौंपते, सोच न कीजे सूर ॥ ५ ॥
घायल तो घूमत फिरै, राखा रहै न ओट ।
जतन किये नहिँ बाहुरै[१], लगी मरम की चोट ॥ ६ ॥
घायल की गति और है, औरन की गति और ।
प्रेम बान हिरदे लगा, रहा कबीरा ठौर ॥ ७ ॥
सूरा सीस उतारिया, छाड़ी तन की आस ।
आगे से गुरु हरखिया, आवत देखा दास ॥ ८ ॥
कबीर घोड़ा प्रेम का, (कोइ) चेतन चढ़ि असवार ।
ज्ञान खड़ग ले काल सिर, भली मचाई मार ॥ ९ ॥
चित चेतन ताजी करैं, लव की करै लगाम ।
सबद गुरू का ताजना[३], पहुँचे संत सुठाम ॥ १०॥
हरि घोड़ा ब्रह्मा कड़ी, बिस्नू पीठ पलान ।
चंद सूर द्वै पायड़ा[४], चढ़सी संत सुजान ॥ ११॥
साध सती औ सूरमा, ज्ञानी औ गज-दंत ।
एते निकसि न बाहुरैँ, जो जुग जाहिँ अनंत ॥ १२॥
सिर राखे सिर जात है, सिर काटे सिर सोय ।
जैसे बाती दीप की, कटि उँजियारा होय ॥ १३॥
धड़ से सीस उतारि कै, डारि देइ ज्यों ढेल ।
कोई सूर को सोहसी, घर जाने का खेल ॥ १४॥
लड़ने को सबही चले, सस्तर बाँधि अनेक ।
साहिब आगे आपने, जूझैगा कोइ एक ॥ १५॥

(१) मुड़ै । (२) घोड़ा । (३) ताजियाना = कोड़ा । (४) रकाब ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जूझैंगे तब कहैंगे, अब कछु कहा न जाय।
भीड़ पड़े मन मसखरा, लड़ै किधौं भगि जाय ॥१६॥
साईं सेंति[1] न पाइये, बातन मिलै न कोय।
कबीर सौदा नाम का, सिर बिन कबहुँ न होय ॥१७॥
जेता तारा रैन का, एता बैरी मुज्झ।
धड़ सूली सिर कंगुरे, तउ न बिसारूँ तुज्झ ॥१८॥
अगिनि आँच सहना सुगम, सुगम खड़ग की धार।
नेह निभावन एक रस, महा कठिन ब्योहार ॥१६॥
नेह निभाये ही बनै, सोचे बनै न आन।
तन दे मन दे सीस दे, नेह न दीजै जान ॥२०॥
बाँकी तेग[3] कबीर की, अनी पड़ै दुइ टूक।
मारा मीर[4] महाबली, ऐसी मूठ अचूक ॥२१॥
सूरा नाम धराइ के, अब का डरपै बीर।
मँड़ि रहना मैदान में, सन्मुख सहना तीर ॥२२॥
तीर तुपक[5] से जो लड़ै, सो तो सूर न होय।
माया तजि भक्ती करै, सूर कहावै सोय ॥२३॥
जाय पूछ वा घायलै, पीर दिवस निसि जागि।
बाहनहारा जानिहै, कै जानै जिन लागि ॥२४॥
सूर सिलाह[6] न पहिरई, जब रन बाजा तूर।
माथा काटै धड़ लड़ै, तब जानीजे सूर ॥२५॥
सूरा के मैदान में, कायर का क्या काम।
सूरा से सूरा मिलै, तब पूरा संग्राम ॥२६॥

---

(१) मुफ्त। (२) अगले समय में शत्रु को सूली चढ़ा कर उसका सिर काट लिया करते थे, और कंगूरे पर लगा देते थे। (३) तलवार। (४) मन। (५) बंदूक। (६) लड़ाई के हथियार, ढाल तलवार।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धुजा फरक्कै सुन्न मैं, बाजै अनहद तूर।
तकिया है मैदान मैं, पहुँचैगा कोइ सूर ॥२७॥
कायर भागा पीठ दै, सूर रहा रन माहिँ।
पटा लिखाया गुरू पै, खरा खजीना खाहि ॥२८॥

॥ पतिब्रता ॥

पतिबरता को सुख घना, जा के पति है एक।
मन मैली बिभिचारिनी, ता के खसम अनेक ॥ १ ॥
पतिबरता मैली भली, काली कुचिल कुरूप।
पतिबरता के रूप पर, वारौं कोटि सरूप ॥ २ ॥
पतिबरता पति को भजै, और न आन सुहाय।
सिंह बचा जो लंघना, तौ भी घास न खाय ॥ ३ ॥
नैनों अंतर आव तूँ, नैन झाँपि तोहि लेवँ।
ना मैं देखौं और को, ना तोहि देखन देवँ ॥ ४ ॥
कबीर सीप समुद्र की, रटै पियास पियास।
और बूँद को ना गहै, स्वाँति बूँद की आस ॥ ५ ॥
पपिहा का पन देखि करि, धीरज रहै न रंच।
मरते दम जल मैं पड़ा, तऊ न बोरी चंच[1] ॥ ६ ॥
मैं सेवक समरत्थ का, कबहुँ न होय अकाज।
पतिबरता नाँगी रहै, तो वाही पति को लाज ॥ ७ ॥
चढ़ी अखाड़े सुंदरी, माँड़ा पिउ से खेल।
दीपक जोया ज्ञान का, काम जरै ज्यौं तेल ॥ ८ ॥
सूरा के तो सिर नहीं, दाता के धन नाहिँ।
पतिबरता के तन नहीं, सुरति बसै पिउ माहिँ ॥ ९ ॥

(१) चोंच।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पतिबरता मैली भली, गले काँच की पोत।
सब सखियन में यों दिपै, ज्यों रबि ससि की जोत ॥१०॥
नाम न रटा तो क्या हुआ, जो अंतर है हेत।
पतिबरता पति को भजै, मुख से नाम न लेत ॥११॥
जो यह एकै जानिया, तौ जानौ सब जान।
जो यह एक न जानिया, (तौ) सबही जान अजान ॥१२॥
सब आये उस एक में, डार पात फल फूल।
अब कहो पाछे क्या रहा, गहि पकड़ा जब मूल ॥१३॥
कबीर रेख सिँदूर अरु, काजर दिया न जाय।
नैनन प्रीतम मिलि रहा, दूजा कहाँ समाय ॥१४॥
आठ पहर चौंसठ घड़ी, मेरे और न कोय।
नैना माहीं तूँ बसै, नीँद को ठौर न होय ॥१५॥
पतिबरता तब जानिये, रतिउ[1] न उघरै नैन।
अंतर गति सकुची रहै, बोलै मधुरे बैन ॥१६॥

॥ सती ॥

अब तो ऐसी है परी, मन अति निर्मल कीन्ह।
मरने को भय छाड़ि कै, हाथ सिँधोरा लीन्ह ॥ १ ॥
ढोल दमामा बाजिया, सबद सुना सब कोय।
जो सर[2] देखि सती भगै, दो कुल हाँसी होय ॥ २ ॥
सती जरन को नीकसी, चित धरि एक बिबेक।
तन मन सौंपा पीव को, अंतर रहो न रेख ॥ ३ ॥
सती जरन को नीकसी, पिउ का सुमिरि सनेह।
सबद सुनत जिय नीकसा, भूलि गई निज देँह ॥ ४ ॥

(१) रत्ती भर भी। (२) आग।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सती बिचारी सत किया, काँटों सेज बिछाय।
लै सूती पिउ आपना, चहुँ दिसि अगिन लगाय ॥ ५ ॥

॥ बिभिचारिन ॥

नारि कहावै पीव की, रहै और सँग सोय।
जार सदा मन में बसै, खसम खुसी क्यों होय ॥ १ ॥
सेज बिछावै सुन्दरी, अंतर परदा होय।
तन सौंपै मन दे नहीं, सदा दुहागिन सोय ॥ २ ॥
बिभिचारिन बिभिचार में, आठ पहर हुसियार।
कहै कबीर पतिबर्त बिन, क्यों रीझै भरतार ॥ ३ ॥
कबीर या जग आइ कै, कीया बहुतक मित[१]।
जिन दिल बाँधा एक से, ते सोवै निःचिंत ॥ ४ ॥

॥ पारख ॥

जब गुन को गाहक मिलै, तब गुन लाख बिकाय।
जब गुन को गाहक नहीं, (तब) कौड़ी बदले जाय ॥ १ ॥
कबीर देखि के परखि ले, परखि के मुखाँ बुलाय।
जैसी अंतर होयगी, मुख निकसैगी ताय ॥ २ ॥
हीरा तहाँ न खोलिये, जहँ खोटी है हाट।
कस करि बाँधौ गाठरी, उठ करि चालो बाट ॥ ३ ॥
पिउ मोतियन की माल है, पोई काचे धाग।
जतन करो झटका घना, नहिं टूटै कहुँ लागि ॥ ४ ॥
हीरा परखै जौहरी, सब्दहिं परखै साध।
कबीर परखै साध को, ता का मता अगाध ॥ ५ ॥
हीरा पाया परखि के, घन में दीया आनि।
चोट सही फूटा नहीं, तब पाई पहिचानि ॥ ६ ॥

(१) मित्र।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हंसा बगुला एक सा, मानसरोवर माहिँ।
बगा ढँढोरै माछरी, हंसा मोती खाहिँ ॥ ७ ॥

॥ परिचय ॥

चंदन गया बिदेसड़े, सब कोई कहै पलास।
ज्योँ ज्योँ चूल्हे झोँकिया, त्योँ त्योँ अधिकी बास ॥ १ ॥
कबीर ये जग आँधरा, जैसी अंधी गाय।
बछरा था सो मरि गया, ऊभी[1] चाम चटाय ॥ २ ॥

॥ परिचय ॥

पिउ परिचय तब जानिये, पिउ से हिलमिल होय।
पिउ की लाली मुख पड़ैं, परगट दीसै सोय ॥ १ ॥
लाली मेरे लाल की, जित देखौँ तित लाल।
लाली देखन मैँ गई, मैँ भी होगइ लाल ॥ २ ॥
हम बासी वा देस के, जहँ बारह मास बिलास।
प्रेम झिरै बिगसै कँवल, तेज पुंज परकास ॥ ३ ॥
पिंजर प्रेम प्रकासिया, जागी जोति अनंत।
संसय छूटा भय मिटा, मिला पियारा कंत ॥ ४ ॥
अगवानी तो आइया, ज्ञान बिचार बिबेक।
पीछे गुरु भी आयँगे, सारे साज समेत ॥ ५ ॥
भेद ज्ञान तो लौँ भला, जौ लौँ मेल न होय।
परम जोति प्रगटै जहाँ, तहँ बिकल्प नहिँ कोय ॥ ६ ॥
कबीर कमल प्रकासिया, ऊगा निर्मल सूर।
रैन अँधेरी मिटि गई, बाजै अनहद तूर ॥ ७ ॥
आकासै औँधा कुआँ, पातालै पनिहार।
जल हंसा कोइ पावई, बिरला आदि बिचार ॥ ८ ॥

(१) खड़ी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गगन गरजि बरसै अमी, बादल गहिर गँभीर।
चहुँ दिसि दमकै दामिनी, भीँजै दास कबीर॥ ९॥
कबीर जब हम गावते, तब जाना गुरु नाहिँ।
अब गुरु दिल में देखिया, गावन को कछु नाहिँ॥१०॥

॥ अनुभव ज्ञान॥

आतम अनुभव जब भयो, तब नहि हर्ष विषाद।
चित्त दीप सम ह्वै रह्यो, तजि करि बाद बिबाद॥ १॥
लिखा लिखी की है नहीँ, देखा देखि की बात।
दुलहा दुलहिन मिलि गये, फीकी पड़ी बरात॥ २॥

॥ बाचक ज्ञान॥

ज्योँ अँधरे को हाथिया, सब काहू को ज्ञान।
अपनी अपनी कहत हैँ, का को धरिये ध्यान॥ १॥
ज्ञानी से कहिये कहा, कहत कबीर लजाय।
अंधे आगे नाचते, कला अकारथ जाय॥ २॥
ज्ञानी मूल गँवाइया, आप भये करता।
ता तेँ संसारी भला, जो सदा रहै डरता॥ ३॥

॥ उपदेश॥

जो तो को काँटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।
तोहि फूल को फूल है, वा को है तिरसूल॥ १॥
दुर्बल को न सताइये, जा की मोटी हाय।
बिना जीव की स्वास से[1], लोह भसम ह्वै जाय॥ २॥
कबीर आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।
आप ठगा सुख होत है, और ठगे दुख होय॥ ३॥

(१) भाथी या धौंकनी निर्जीव होती है उसकी हवा से लोहा गल जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

या दुनियाँ में आइ के, छाड़ि देइ तू ऐंठ।
लेना होइ सो लेइ ले, उठी जात है पैंठ ॥ ४ ॥
ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय ॥ ५ ॥
जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय ॥ ६ ॥
हस्ती चढ़िये ज्ञान की, सहज दुलीचा डारि।
स्वान रूप संसार है, भूसन दे झख मारि ॥ ७ ॥
आवत गारी एक है, उलटत होय अनेक।
कह कबीर नहिँ उलटिये, वही एक की एक ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

हरिजन तो हारा भला, जीतन दे संसार।
हारा सतगुरु से मिलै, जीता जम की लार ॥ ९ ॥
जैसा अन जल खाइये, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिये, तैसी बानी सोय ॥ १० ॥
माँगन मरन समान है, मत कोइ माँगो भीख।
माँगन तें मरना भला, यह सतगुरु की सीख ॥ ११ ॥
कथा कीरतन रात दिन, जा के उद्यम येह।
कह कबीर ता साधु की, हम चरनन की खेह ॥ १२ ॥
जो कोइ समझै सैन में, ता से कहिये बैन।
सैन बैन समझै नहीं, ता से कछु नहिँ कहन ॥ १३ ॥
बहते को मत बहन दे, कर गहि ऐंचहु ठौर।
कहा सुना मानै नहीं, बचन कहो दुइ और ॥ १४ ॥
बन्दे तूँ कर बन्दगी, तौ पावै दीदार।
औसर मानुष जनम का, बहुरि न बारम्बार ॥ १५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साधु भया तो क्या भया, बोलै नाहिँ बिचार।
हतै पराई आतमा, जीभ बाँधि तरवार ॥१६॥

मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर।
स्त्रवन द्वार ह्वै संचरै, सालै सकल सरीर ॥१७॥

बोलत ही पहिचानिये, साहु चोर को घाट।
अंतर की करनी सबै, निकसै मुख की बाट॥ १८॥

जिन ढूँढ़ा तिन पाइया, गहिरे पानी पैठि।
जो बौरा डूबन डरा, रहा किनारे बैठि ॥१९॥

ज्ञान रतन की कोठरी, चुप करि दीजै ताल।
पारख आगे खोलिये, कुंजी बचन रसाल ॥२०॥

पढ़ना गुनना चातुरी, यह तो बात सहल।
काम दहन मन बसि करन, गगन चढ़न मुस्कल ॥२१॥

करता था तो क्यौं रहा, अब करि क्यौं पछिताय।
बोवै पेड़ बबूल का, आम कहाँ तैं खाय ॥२२॥

भय बिनु भाव न ऊपजै, भय बिनु होय न प्रीति।
जब हिरदे से भय गया, मिटी सकल रस रीति ॥२३॥

डर करनी डर परम गुरु, डर पारस डर सार।
डरत रहै सो ऊबरै, गाफिल खावै मार ॥२४॥

॥ गृहस्थ की रहनी ॥

जो मानुष गृह-धर्म युत, राखै सील बिचार।
गुरुमुख बानी साधु सँग, मन बच सेवा सार ॥ १

सत्त सील दाया सहित, बरतै जग ब्यौहार।
गुरु साधू का आस्रित, दीन बचन उच्चार ॥

गिरही सेवै साधु को, साधू सुमिरै नाम।
या में धोखा कछु नहीं, सरै दोऊ को काम ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ बैरागी की रहनी ॥

धारन तो दोऊ भली, गिरही कै बैराग।
गिरही दासातन करै, बैरागी अनुराग ॥ १ ॥
बैरागी बिरकत[1] भला, ग्रेही चित्त उदार।
दोउ बातोँ खाली पड़ै, ता को वार न पार ॥ २ ॥

॥ करनी और कथनी ॥

कथनी मीठी खाँड़ सी, करनी बिष की लोय।
कथनी तजि करनी करै, तौ बिष से अमृत होय ॥ १ ॥
कथनी के सूरे घने, थोथे बाँधे तीर।
बिरह बान जिन के लगा, तिन के बिकल सरीर ॥ २ ॥
लाया साखि बनाय करि, इत उत अच्छर काट।
कह कबीर कब लग जिये, जूठी पत्तल चाट ॥ ३ ॥
पानी मिलै न आप को, औरन बकसत छीर।
आपन मन निस्चल नहीँ, और बँधावत धीर ॥ ४ ॥
मारग चलते जो गिरै, ता को नाहीँ दोस।
कह कबीर बैठा रहै, ता सिर करड़े कोस ॥ ५ ॥

॥ जीवत मृतक ॥

जीवन मिरतक होइ रहै, तजै खलक की आस।
रच्छक समरथ सतगुरू, मत दुख पावै दास ॥ १ ॥
मोती निपजै सीप मेँ, सीप समुंदर माहिँ।
कोइ मरजीवा काढ़सी, जीवन की गम नाहिँ ॥ २ ॥
खरी कसौटी नाम की, खोटा टिकै न कोय।
नाम कसौटी सो टिकै, जो जीवत मिरतक होय ॥ ३ ॥

---

(१) विरक्त।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऊँचा तरवर[1] गगन फल, बिरला पंछी खाय।
इस फल को तो सो चखै, (जो) जीवत ही मरि जाय॥ ४॥
कबीर मन मिरतक भया, दुरबल भया सरीर।
पाछे लागे हरि फिरैं, कहैं कबीर कबीर॥ ५॥
मन को मिरतक देखि कै, मत मानै बिस्वास।
साध जहाँ लौं भय करैं, जब लग पिंजर स्वास॥ ६॥
मैं जानौं मन मरि गया, मरि के हूआ भूत।
मूए पीछे उठि लगा, ऐसा मेरा पूत॥ ७॥
भक्त मरे क्या रोइये, जो अपने घर जाय।
रोइये साकट बापुरे, (जो) हाटो हाट बिकाय॥ ८॥
आपा मेटे गुरु मिलै, गुरु मेटै सब जाय।
अकथ कहानी प्रेम की, कहे न कोइ पतियाय॥ ९॥
कबीर चेरा संत का, दासनहूँ का दास।
अब तो ऐसा होइ रहु, ज्यों पाँव तले की घास॥ १०॥
रोड़ा होइ रहु बाट का, तजि आपा अभिमान।
लोभ मोह तृस्ना तजै, ताहि मिलै निज नाम॥ ११॥
रोड़ा भया तो क्या भया, पंथी को दुख देय।
साधू ऐसा चाहिये, ज्यों पैंड़े की खेह॥ १२॥
खेह भई तो क्या भया, उड़ि उड़ि लागै अंग।
साधू ऐसा चाहिये, जैसे नीर निपंग॥ १३॥
नीर भया तो क्या भया, ताता सीरा जोय।
साधू ऐसा चाहिये, जो हरि ही जैसा होय॥ १४॥
हरि भया तो क्या भया, जो करता हरता होय।
साधू ऐसा चाहिये, जो हरि भज निरमल होय॥ १५॥

(१) पेड़।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निरमल भया तो क्या भया, निरमल माँगै ठौर।
मल निरमल तेँ रहित है, ते साधू कोइ और ॥ १६॥

॥ साच ॥

साच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जा के हिरदे साच है, ता हिरदे गुरु आप ॥ १ ॥
साईं से साचा रहौ, साईं साच सुहाय।
भावै लम्बे केस रखु, भावै घोट मुँड़ाय ॥ २ ॥
तेरे अंदर साच जो, बाहर कछु न जनाव।
जाननहारा जानिहै, अंतरगति का भाव ॥ ३ ॥
साचे स्राप न लागई, साचे काल न खाय।
साचे को साचा मिलै, साचे माहिँ समाय ॥ ४ ॥
साचे कोइ न पतीजई, झूँठे जग पतियाय।
गली गली गोरस फिरै, मदिरा बैठि बिकाय ॥ ५ ॥
साचे को साचा मिलै, अधिका बढ़ै सनेह।
झूँठे को साचा मिलै, तड़दे टूटैं नेह ॥ ६ ॥
कबीर पूँजी साहु की, तू मत खोवै ख्वार।
खरी बिगुर्चन होयगी, लेखा देती बार ॥ ७ ॥
लेखा देना सहज है, जो दिल साचा होय।
साईं के दरबार में, पला न पकरै कोय ॥ ८ ॥

॥ उदारता ॥

कबीर गुरु के मिलन की, बात सुनी हम दोय।
कै साहिब को नाम लै, कै कर ऊँचा होय ॥ १ ॥
बसंत ऋतु जाचक भया, हरषि दिया द्रुम[1] पात।
ता तेँ नव पल्लव[2] भया, दिया दूर नहिँ जात ॥ २ ॥

(१) पेड़। (२) पत्तियाँ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देह धरे का गुन यही, देह देह कछु देह।
बहुरि न देही पाइये, अब की देह सो देह ॥ ३ ॥
दान दिये धन ना घटैं, नदी न घट्टै नीर।
अपनी आँखों देखिये, यों कथि कहै कबीर ॥ ४ ॥

॥ सहन ॥

काँच कथीर अधीर नर, जतन करत है भंग।
साधू कंचन ताइये, चढ़ै सवाया रंग ॥ १ ॥
कसत कसौटी जो टिकै, ता को सबद सुनाय।
सोई हमरा बंस है, कह कबीर समुझाय ॥ २ ॥

॥ शील ॥

सीलवंत सब तें बड़ा, सर्ब रतन की खानि।
तीन लोक की संपदा, रही सील में आनि ॥ १ ॥
घायल ऊपर घाव लै, टोटे त्यागी सोय।
भर जोबन में सीलवँत, बिरला होय तो होय ॥ २ ॥

॥ छमा ।

छिमा बड़न को चाहिये, छोटन को उतपात।
कहा बिस्नु को घटि गयो, जो भृगु मारा लात ॥ १ ॥
जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप ॥ २ ॥
करगस[१] सम दुर्जन बचन, रहै संत जन टारि।
बिजुली परै समुद्र में, कहा सकैगी जारि ॥ ३ ॥
खोद खाद धरती सहै, काट कूट बनराय।
कुटिल बचन साधू सहै, और से सहा न जाय ॥ ४ ॥

---

(१) तीर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ संतोष ॥

साध सँतोषी सर्बदा, निरमल जा के बैन।
ता के दरस रु परस तें, जिय उपजै सुख चैन ॥ १ ॥
चाह गई चिंता मिटी, मनुवाँ बेपरवाह।
जिन को कछू न चाहिये, सोई साहंसाह ॥ २ ॥
गोधन गजधन बाजधन, और रतन धन खान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान ॥ ३ ॥

॥ धीरज ॥

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कछु होय।
माली सींचै सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय ॥ १ ॥
कबीर तूँ काहे डरै, सिर पर सिरजनहार।
हस्ती चढ़ि कर डोलिये, कूकर भुसै हजार ॥ २ ॥

॥ दीनता ॥

दीन लखै मुख सबन को, दीनहिँ लखै न कोय।
भली बिचारी दीनता, नरहुँ देवता होय ॥ १ ॥
कबीर नवै सो आप को, पर को नवै न कोय।
घालि तराजू तौलिये, नवै सो भारी होय ॥ २ ॥
आपा मेटे पिउ मिलै, पिउ में रहा समाय।
अकथ कहानी प्रेम की, कहै तो को पतियाय ॥ ३ ॥
ऊँचे पानी ना टिकै, नीचे ही ठहराय।
नीचा होय सो भरि पिवै, ऊँचा प्यासा जाय ॥ ४ ॥
सब तें लघुताई भली, लघुता तें सब होय।
जस दुतिया को चंद्रमा, सीस नवै सब कोय ॥ ५ ॥
बुरा जो देखन मै चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजैं आपना, मुझसा बुरा न होय ॥ ६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.
Jangamwadi Math, Varanasi
Acc. No. 3462

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ दया ॥

दया भाव हिरदे नहीँ, ज्ञान कथै बेहद ।
ते नर नरकहि जाहिँगे, सुनि सुनि साखी सब्द ॥ १ ॥
दाया दिल मेँ राखिये, तूँ क्योँ निरदइ होय ।
साईँ के सब जीव हैँ, कीड़ी कुंजर सोय ॥ २ ॥
हम रोवैँ संसार को, रोय न हम को कोय ।
हम को तो सो रोइहै, जो सब्द-सनेही होय ॥ ३ ॥

॥ विचार ॥

बोली तो अनमोल है, जो कोइ जानै बोल ।
हिये तराजू तोल के, तब मुख बाहर खोल ॥ १ ॥
आधी साखी सिर कटै, जो रे बिचारी जाय ।
मनहिँ प्रतीत न ऊपजै, राति दिवस भरि गाय ॥ २ ॥
सहज तराजू आन करि, सब रस देखा तोल ।
सब रस माहीँ जीभ रस, जो कोइ जानै बोल ॥ ३ ॥
ज्योँ आवै त्योँहीँ कहै, बोलै नाहिँ विचारि ।
हतै पराई आतमा, जीभ लेइ तरवारि ॥ ४ ॥

॥ विवेक ॥

साधू मेरे सब बड़े, अपनी अपनी ठौर ।
सबद बिबेकी पारखी, सो माथे के मौर ॥ १ ॥
गुरुपसु नरपसु नारिपसु, बेदपसू संसार ।
मानुष सोई जानिये, जाहि बिबेक बिचार ॥ २ ॥
प्रगटै प्रेम बिबेक दल, अभय निसान बजाय ।
उग्र ज्ञान उर आवताँ, यह सुनि मोह दुराय ॥ ३ ॥
सत्तनाम सब कोइ कहै, कहिबे माहिँ बिबेक ।
एक अनेकै फिरि मिलै, एक समाना एक ॥ ४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ काम ॥

कामी क्रोधी लालची, इन से भक्ति न होय।
भक्ति करै कोइ सूरमा, जाति बरन कुल खोय ॥ १ ॥
कामी कबहुँ न गुरु भजै, मिटै न संसय सूल।
और गुनह सब बकसिहैं, कामी डार न मूल ॥ २ ॥
जहाँ काम तहँ नाम नहिं, जहाँ नाम नहिं काम।
दोनों कबहूँ ना मिलैं, रबि रजनी इक ठाम ॥ ३ ॥
काम क्रोध मद लोभ की, जब लगि घट में खान।
कहा मूरख कहा पंडिता, दोनों एक समान ॥ ४ ॥

॥ क्रोध ॥

कोटि करम लागे रहैं, एक क्रोध की लार।
किया कराया सब गया, जब आया हंकार ॥ १ ॥
दसो दिसा से क्रोध की, उठी अपरबल आगि।
सीतल संगति साध की, तहाँ उबरिये भागि ॥ २ ॥
कुबुधि कमानी चढ़ि रही, कुटिल बचन का तीर।
भरि भरि मारै कान में, सालै सकल सरीर ॥ ३ ॥

॥ लोभ ॥

जब मन लागा लोभ से, गया विषय में मोय[1]।
कहै कबीर बिचारि कै, कस भक्ती धन होय ॥ १ ॥
आब गई आदर गया, नैनन गया सनेह।
ये तीनों जबहीं गये, जबहिं कहा कछु देह ॥ २ ॥
जग में भक्त कहावई, चुकट[2] चून नहिं देय।
सिष जोरू का है रहा, नाम गुरू का लेय ॥ ३ ॥

---

(१) सन जाना। (२) चुटकी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ मोह ॥

जब घट मोह समाइया, सबै भया अँधियार ।
निर्मोह ज्ञान बिचारि कै, (कोइ) साधू उतरै पार ॥ १
सलिल मोह की धार में, बहि गये गहिर गँभीर ।
सुच्छम मछरी सुरत है, चढ़िहै उलटे नीर ॥ २

॥ मान और हँगता ॥

कंचन तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह ।
मान बड़ाई ईरषा, दुरलभ तजनी येह ॥ १
बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीँ, फल लागै अति दूर ॥ २
जहँ आपा तहँ आपदा, जहँ संसय तहँ सोग ।
कह कबीर कैसे मिटै, चारो दीरघ रोग ॥ ३
बड़ा बड़ाई ना तजै, छोटा बहु इतराय ।
ज्योँ प्यादा फरजी भया, टेढ़ा टेढ़ा जाय[1] ॥ ४
जग मेँ बैरी कोउ नहीँ, जो मन सीतल होय ।
यह आपा तू डारि दे, दया करै सब कोय ॥ ५

॥ कपट ॥

चित कपटी सब से मिलै, माहीँ कुटिल कठोर ।
इक दुरजन इक आरसी, आगे पीछे और ॥ १
हेत प्रीति से जो मिलै, ता को मिलिये धाय ।
अंतर राखे जो मिलै, ता से मिलै बलाय ॥ २

(१) शतरंज के खेल में जब प्यादा वज़ीर बन जाता है तो वह टेढ़ा चल सकता है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ आशा ॥

जो तू चाहै मुज्झ को, राखौ और न आस।
मुझहिं सरीखा होइ रहु, सब सुख तेरे पास ॥ १ ॥
कबीर जोगी जगत गुरु, तजै जगत की आस।
जो जग की आसा करै, तो जगत गुरू वह दास ॥ २ ॥
बहुत पसारा जनि करै, करु थोरे की आस।
बहुत पसारा जिन किया, तेई गये निरास ॥ ३ ॥

॥ तृष्णा ॥

की त्रिस्ना है डाकिनी, की जीवन का काल।
और और निसु दिन चहै, जीवन करै बिहाल ॥ १ ॥
त्रिस्ना अग्नि प्रलय किया, तृप्त न कबहूँ होय।
सुर नर मुनि औ रंक सब, भस्म करत है सोय ॥ २ ॥

॥ मन ॥

मन के मते न चालिये, मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार है, सो साधू कोइ एक ॥ १ ॥
मन मुरीद संसार है, गुरु मुरीद कोइ साध।
जो मानै गुरु बचन को, ता का मता अगाध ॥ २ ॥
मन को मारूँ पटकि के, टूक टूक होइ जाय।
बिष की क्यारी बोइ के, लुनता क्यों पछिताय ॥ ३ ॥
कबीर मन तो एक है, भावै तहाँ लगाय।
भावै गुरु की भक्ति करु, भावै बिषय कमाय ॥ ४ ॥
मन के मारे बन गये, बन तजि बस्ती माहिँ।
कहै कबीर क्या कीजिये, यह मन ठहरै नाहिँ ॥ ५ ॥
जेती लहर समुद्र की, तेती मन की दौर।
सहजै हीरा नीपजै, जो मन आवै ठौर ॥ ६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दौड़त-दौड़त दौड़िया, जहँ लग मन की दौड़।
दौड़ थकी मन थिर भया, बस्तु ठौर की ठौर ॥ ७॥
कबीर मन परबत हुता, अब मैं पाया जानि।
टाँकी लागी सबद की, निकसी कंचन खानि ॥ ८॥
अगम पंथ मन थिर करै, बुद्धि करै परबेस।
तन मन सबही छाड़ि कै, तब पहुँचै वा देस ॥ ९॥
मनहीं को परमोधिये, मनहीं को उपदेस।
जो यहि मन को बसि करै, (तो) सिष्य होय सब देस ॥१०॥
गुरु धोबी सिष कापड़ा, साबुन सिरजनहार।
सुरत सिला पर धोइये, निकसै रंग अपार ॥ ११॥
मन पंछी तब लगि उड़ै, बिषय बासना माहिँ।
प्रेम बाज की झपट मैं, जब लगि आयो नाहिँ ॥ १२॥
यह तो गति है अटपटी, सटपट लखै न कोय।
जो मन की खटपट मिटै, चटपट दरसन होय ॥ १३॥
मन मनसा को मारि करि, नन्हा करि के पीस।
तब सुख पावै सुन्दरी, पदुम झलक्कै सीस ॥ १४॥
तन तुरंग असवार मन, कर्म पियादा साथ।
त्रिस्ना चली सिकार को, बिषै बाज लिये हाथ ॥ १५॥
मना मनोरथ छाड़ि दे, तेरा किया न होय।
जो पानी घी नीकसै, सूखा खाय न कोय ॥ १६॥
मन नाहीँ छाड़ै बिषय, बिषय न मन को छाड़ि।
इन का यही सुभाव है, पूरी लागी आड़ि[1] ॥ १७॥

---

(१) अड़, हठ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ माया ॥

माया छाया एक सी, बिरला जानै कोय।
भगता के पाछे फिरै, सनमुख भागै सोय[1] ॥ १ ॥
माया तो ठगनी भई, ठगत फिरै सब देस।
जा ठग या ठगनी ठगी, ता ठग को आदेस ॥ २ ॥
कबीर माया पापिनी, ताही लागे लोग।
पूरी किनहुँ न भोगिया, या का यही बियोग ॥ ३ ॥
कबीर माया बेसवा, दोनौं की इक जात।
आवत कौं आदर करै, जात न पूछै बात ॥ ४ ॥
कबीर माया रूखड़ी, दो फल की दातार।
खावत खरचत मुक्ति दे, संचत नरक दुवार ॥ ५ ॥
खान खरचन बहु अंतरा, मन में देख बिचार।
एक खवाया साधु को, एक मिलाया छार ॥ ६ ॥
माया तो है राम की, मोदी सब संसार।
जा को चिट्ठी ऊतरी, सोई खरचनहार ॥ ७ ॥
माया संचै संग्रहै, वह दिन जानै नाहिँ।
सहस बरस की सब करै, मरै महूरत[2] माहिँ ॥ ८ ॥
माया के झक[3] जग जरै, कनक कामिनी लागि।
कहै कबीर कस बाचिहै, रुई लपेटी आगि ॥ ९ ॥
कबीर माया सूम की, देखनहीँ का लाड़।
जो वा मेँ कौड़ी घटै, साईँ तोड़ै हाड़ ॥ १०॥
सौ पापन को मूल है, एक रुपैया रोक[4]।
साधू है संग्रह करै, हारै हरि सा थोक[5] ॥ ११॥

(१) जो माया अर्थात् संसार से भागे उसके तो वह छाया की नाईं पीछे लगी फिरती है, और जो उसके सन्मुख हो कर उसका याचक हो उससे भागती है, अर्थात नहीं मिलती। (२) छिन। (३) जोश। (४) नक़द। (५) जमा, माल।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माया है दुइ भाँति की, देखी ठोंक बजाय।
एक मिलावै नाम से, एक नरक लै जाय॥ १२॥
मीठा सब कोइ खात है, बिष ह्वै लागै धाय।
नीब न कोई पीवसी, सबै रोग मिटि जाय॥ १३॥

॥ कनक और कामिनी ॥

चलौं चलौं सब कोइ कहै, पहुँचै बिरला कोय।
एक कनक अरु कामिनी, दुरगम घाटी दोय॥ १॥
नारी की झाँई परत, अंधा होत भुजंग।
कबीर तिन की कौन गति, (जो) नित नारी के संग॥ २॥
कामिनि सुन्दर सर्पिनी, जो छेड़ै तेहि खाय।
जो गुरु चरनन राचिया, तिन के निकट न जाय॥ ३॥
नैनों काजर पाइ कै, गाढ़े बाँधे केस।
हाथों मिहँदी लाइ कै, बाघिनि खाया देस॥ ४॥
पर नारी पैनी छुरी, मति कोइ लावो अंग।
रावन के दस सिर गये, पर नारी के संग॥ ५॥
नारी निरखि न देखिये, निरखि न कीजै दौर।
देखेही तें बिष चढ़ै, मन आवै कछु और॥ ६॥
सब सोने की सुन्दरी, आवै बास सुबास।
जो जननी ह्वै आपनी, तऊ न बैठै पास॥ ७॥
नारि नसावै तीन गुन, जो नर पासे होय।
भक्ति मुक्ति निज ध्यान में, पैठि न सक्कै कोय॥ ८॥
गाय रोय हँसि खेलि के, हरत सबन के प्रान।
कह कबीर यह घात की, समझैं संत सुजान॥ ९॥
नारि कहौं की नाहरी, नख सिख से यह खाय।
जल बूड़ा तो ऊबरै, भग बूड़ा बहि जाय॥ १०॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कबीर नारि की प्रीति से, केते गये गड़ंत।
केते औरौ जाहिँगे, नरक हसंत हसंत ॥ ११ ॥
नारी नाहीँ जम अहै, तू मत राचै जाय।
मंजारी[1] ज्यौँ बोलि कै, काढ़ि करेजा खाय ॥ १२ ॥
एक कनक अरु कामिनी, बिष फल किया उपाय।
देखत ही तेँ बिष चढ़ै, चाखतही मरि जाय ॥ १३ ॥
छोटी मोटी कामिनी, सबही बिष की बेल।
बैरी मारै दाँव दै, यह मारै हँसि खेल ॥ १४ ॥
नारि पुरुष की इसतरी, पुरुष नारि का पूत।
याही ज्ञान बिचारि कै, छाड़ि चला अवधूत ॥ १५ ॥

॥ निद्रा ॥

कबीर सोया क्या करै, जागि के जपो दयार।
एक दिना है सोवना, लम्बे पाँव पसार ॥ १ ॥
कबीर सोया क्या करै, उट्ठि न रोवै दुक्ख।
जा का बासा गोर[2] मेँ, सो क्योँ सोवै सुक्ख ॥ २ ॥
कबीर सोया क्या करै, जागन की करु चौँप।
ये दम हीरा लाल है, गिनि गिनि गुरु कौ सौँप ॥ ३ ॥
नीँद निसानी मीच की, उट्ठ कबीरा जागु।
और रसायन छाड़ि कै, नाम रसायन लागु ॥ ४ ॥
सोया सो निस्फल गया, जागा सो फल लेय।
साहिब हक्क न राखसी, जब माँगै तब देय ॥ ५ ॥
पिउ पिउ कहि कहि कूकिये, ना सोइये इसरार[3]।
रात दिवस के कूकते, कबहुँक लगै पुकार ॥ ६ ॥

---

(१) बिल्ली। (२) क़बर। (३) भेद।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सोता साध जगाइये, करै नाम का जाप।
यह तीनौं सोते भले, साकट सिंह और साँप ॥ ७॥
जागन से सोवन भला, जो कोइ जानै सोय।
अंतर लौ लागी रहै, सहजै सुमिरन होय ॥ ८॥
जागन में सोवन करै, सोवन में लौ लाय।
सुरति डोरि लागी रहै, तार टूटि नहिँ जाय ॥ ९॥
कबीर खालिक जागता, और न जागै कोय।
कै जागै बिषया भरा, (कै) दास बंदगी सोय॥ १०॥

॥ निंदा ॥

निन्दक नियरे राखिये, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय ॥ १॥
निन्दक हमरा जनि मरो, जीवो आदि जुगादि।
कबीर सतगुरु पाइया, निन्दक के परसादि ॥ २॥
कबीर मेरे साधु की, निन्दा करौ न कोय।
जो पै चन्द्र कलंक है, तऊ उँजारा होय ॥ ३॥
तिनका कबहुँ न निन्दिये, जो पाँवन तर होय।
कबहूँ उड़ि आँखिन परै, पीर घनेरी होय ॥ ४॥
दोष पराये देखि करि, चले हसंत हसंत।
अपने याद न आवई, जिन का आदि न अंत ॥ ५॥
निन्दक एकहु मत मिलौ, पापी मिलौ हजार।
इक निन्दक के सीस पर, कोटि पाप को भार ॥ ६॥

॥ स्वादिष्ट अहार ॥

खट्टा मीठा चरपरा, जिभ्या सब रस लेय।
चोरौं कुतिया मिलि गई, पहरा किस का देय ॥ १॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माखी गुड़ में गड़ि रही, पंख रह्यो लिपटाय।
हाथ मलै औ सिर धुनै, लालच बुरी बलाय॥ २॥

॥ मांस अहार॥

माँस अहारी मानवा, परतछ राछस अंग।
ता की संगति मत करो, परत भजन में भंग॥ १॥
माँस मछरिया खात हैं, सुरा पान से हेत।
सो नर जड़ से जाहिंगे, ज्यों मूरी का खेत॥ २॥
माँस माँस सब एक है, मुरगी हिरनी गाय।
आँखि देखि नर खात है, ते नर नरकहिं जाय॥ ३॥
मुरगी मुल्ला से कहै, जिबह करत है मोहिं।
साहिब लेखा माँगसी, संकट परिहै तोहिं॥ ४॥
कहता हौं कहि जात हौं, कहा जो मान हमार।
जा का गर तुम काटिहो, सो फिर काटि तुम्हार॥ ५॥
हिन्दू के दाया नहीं, मिहर तुरुक के नाहिं।
कहै कबीर दोनों गये, लख चौरासी माहिं॥ ६॥

॥ नशा॥

औगुन कहौं सराब का, ज्ञानवंत सुनि लेय।
मानुष से पसुआ करै, द्रब्य गाँठि को देय॥ १॥
अमल अहारी आतमा, कबहुँ न पावै पारि।
कहै कबीर पुकारि कै, त्यागो ताहि बिचारि॥ २॥
मद तो बहुतक भाँति का, ताहि न जानै कोय।
तनमद मनमद जातिमद, मायामद सब लोय॥ ३॥
बिद्यामद अरु गुनहुँ मद, राजमद्द उनमद्द।
इतने मद को रद करै, तब पावै अनहद्द॥ ४॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कबीर मतवाला नाम का, मद मतवाला नाहिँ।
नाम पियाला जो पियै, सो मतवाला नाहिँ॥ ५॥

॥ सादा खान पान ॥

रूखा सूखा खाइ कै, ठंढा पानी पीव।
देखि बिरानी चूपड़ी, मत ललचावै जीव॥ १॥
कबीर साईँ मुज्झ को, रूखी रोटी देय।
चुपड़ी माँगत मैँ डरूँ, (कहुँ) रूखी छीनि न लेय॥ २॥

॥ आनदेव की पूजा ॥

सत्त नाम को छाड़ि कै, करै और को जाप।
बेस्या केरे पूत ज्यों, कहै कौन को बाप॥ १॥
कामी तरै क्रोधी तरै, लोभी तरै अनंत।
आन उपासी कृतघ्नी, तरै न गुरू कहंत॥ २॥
एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय।
जो गहि सेवै मूल को, फूलै फलै अघाय॥ ३॥

॥ तीर्थ व्रत ॥

तीरथ ब्रत करि जग मुआ, जूड़े पानी न्हाय।
सत्त नाम जाने बिना, काल जुगन जुग खाय॥ १॥
तीरथ चाले दुइ जना, चित चंचल मन चोर।
एको पाप न ऊतरा, मन दस लाये और॥ २॥
न्हाये धोये क्या भया, (जो) मन का मैल न जाय।
मीन सदा जल मेँ रहै, धोये बास न जाय॥ ३॥
पाहन को क्या पूजिये, जो नहिं देइ जवाब।
अंधा नर आसामुखी, योँ ही होय खराब॥ ४॥
पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैँ पुजौँ पहार।
ता तेँ ये चाकी भली, पोसि खाय संसार॥ ५॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन मथुरा दिल द्वारिका, काया काशी जान।
दस द्वारे का देहरा, ता में जोति पिछान ॥ ६ ॥
काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चुनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय ॥ ७ ॥
पूजा सेवा नेम ब्रत, गुड़ियन का सा खेल।
जब लगि पिउ परिचय नहीं, तब लगि संसय मेल ॥ ८ ॥

॥ पंडित और सस्कृत ॥

संस्किरत है कूप जल, भाषा बहता नीर।
भाषा सतगुरु सहित है, सत मत गहिर गँभीर ॥ १ ॥
पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित हुआ न कोय।
ढाई अच्छर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय ॥ २ ॥
पंडित केरी पोथियाँ, ज्यों तीतर को ज्ञान।
औरन सगुन बतावहीं, अपना फंद न जान ॥ ३ ॥
पंडित और मसालची, दोनों सूझै नाहिं।
औरन को करैं चाँदना, आप अँधेरे माहिं ॥ ४ ॥

॥ मिश्रित ॥

सपने में साईं मिले, सोवत लिया जगाय।
आँखि न खोलूँ डरपता, मति सुपना ह्वै जाय ॥ १ ॥
सोऊँ तो सुपने मिलूँ, जागूँ तो मन माहिं।
लोचन राते सुभ घड़ी, बिसरत कबहूँ नाहिं ॥ २ ॥
यार बुलावै भाव से, मो पै गया न जाय।
धन मैली पिउ ऊजला, लागि न सक्कूँ पाँय ॥ ३ ॥
साँझ पड़े दिन बीतवे, चकवी दीन्हा रोय।
चल चकवा वा देस को, जहाँ रैन ना होय ॥ ४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चकवी बिछुड़ी साँझ की, आन मिलै परभात ।
जो नर बिछुड़े नाम से, दिवस मिलैं ना रात ॥ ५ ॥

तरवर तासु बिलंबिये, बाहर मास फलंत ।
सीतल छाया सघन फल, पंछी केल करंत ॥ ६ ॥

कबीर सीप समुद्र की, खारा जल नहिँ लेय ।
पानी पीवै स्वाँति का, सोभा सागर देय ॥ ७ ॥

पपिहा पन को ना तजै, तजै तो तन बेकाज ।
तन छूटैं तो कछु नहीँ, पन छूटे है लाज ॥ ८ ॥

चात्रिक[1] सुतहिँ पढ़ावही, आन नीर मत लेय ।
मम कुल यही सुभाव है, स्वाँति बूंद चित देय ॥ ९ ॥

आदि होत सब आप में, सकल होत ता माहिँ ।
ज्योँ तरवर के बीज मेँ, डार पात फल छाँहिँ ॥ १० ॥

खुलि खेलो संसार में, बाँधि न सक्कै कोय ।
घाट जगाती क्या करै, जो सिर बोझ न होय ॥ ११ ॥

देँह धरे का दंड है, सब काहू को होय ।
ज्ञानी भुगतै ज्ञान से, मूरख भुगतै रोय ॥ १२ ॥

जूआ चोरी मुखबिरी, ब्याज घूस पर नार ।
जो चाहै दीदार को, एती बस्तु निवार ॥ १३ ॥

मो में इतनी सक्ति कहँ, गाओँ गला पसार ।
बंदे को इतनी घनी, पड़ा रहै दरबार ॥ १४ ॥

नाचै गावै पद कहै, नाहीँ गुरु से हेत ।
कह कबीर क्योँ नीपजै, बीज बिहूना खेत ॥ १५ ॥

नाम रतन धन संत पहँ, खान खुली घट माहिँ ।
सेँत मेत ही देत हैाँ, गाहक कोई नाहिँ ॥ १६ ॥

---

(१) पपीहा ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रैदास जी

—:o:—

जीवन समय—पंद्रहवें शताब्दी के पिछले हिस्से से सोलहवें शतक के मध्य तक; जन्म और सतसंग स्थान—काशी। जाति और आश्रम—चमार, गृहस्थ। गुरू—स्वामी रामानंद।

यह कबीर साहिब के सहकाली और मीरा बाई के गुरू थे। मोची का काम उमर भर किया। हिन्दुस्तान के बहुत से भागों में, मुख्यकर गुजरात प्रांत में, रैदास पंथ के लाखों आदमी हैं [सविस्तर जीवन चरित्र रैदास जी की बानी में छपा है]

॥ दीनता ॥

जा देखे घिन ऊपजै, नरक कुंड में बास।
प्रेम भगति से ऊधरे, प्रगटत जन रैदास ॥ १ ॥
रैदास तूँ कावँच[1] फली, तुझै न छीपै[2] कोइ।
तैं निज नावँ न जानिया, भला कहाँ तें होइ ॥ २ ॥

॥ उपदेश ॥

हरि सा हीरा छाड़ि के, करै आन की आस।
ते नर जमपुर जाहिँगे, सत भासै रैदास ॥ १ ॥
अंतरगति राचैँ नहीँ, बाहर कथैँ उदास।
ते नर जमपुर जाहिँगे, सत भासै रैदास ॥ २ ॥
रैदास कहै जा के हृदै, रहै रैन दिन राम।
सो भगता भगवंत सम, क्रोध न ब्यापै काम ॥ ३ ॥
रदास राति न सोइया, दिवस न करिये स्वाद।
अहि-निसि[3] हरि जी सुमिरिये, छाड़ि सकल प्रतिबाद ॥ ४ ॥

॥ मिश्रित ॥

केहि बिधि पार पाइबो, कोउ न कहै समुझाइ।
कवन जुगत अस कीजिये, जा तें आवागवन बिलाइ ॥ १ ॥

---

(१) केवाँच जिसके बदन में छूजाने से खाज पैदा होकर ददोरे पड़ जाते हैं। (२) छुए। (३) दिन रात।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बाहर उदक[1] पखारिये, घट भीतर बिबिधि बिकार।
सुद्ध कवन पर होइबो, सुचि कुंजर बिधि ब्यौहार[2] ॥ २ ॥
धर्म निरूपन बहु बिधी, करत दीसै सब लोय।
कवन कर्म तें छूटिये, जेहिँ साधे सब सिध होय ॥ ३ ॥
कर्म अकर्म बिचारिये, संका सुनि बेद पुरान।
संसा सद हिरदे बसै, कौन हरै अभिमान ॥ ४ ॥
अनिक जतन निग्रह किये, टारी न टरै भ्रम फाँस।
प्रेम भगति नहिँ ऊपजै, ता तेँ रैदास उदास ॥ ५ ॥
सतजुग सत त्रेताहिँ जग[3], द्वापर पूजा चार।
तीनौँ जुग तीनौँ दृढ़े, कलि केवल नाम अधार ॥ ६ ॥
परम पुरुष गुरु भेँटिये, पूरब लिखित ललाट।
उनमुन मन मनहीँ मिलै, छुटकत बजर कपाट ॥ ७ ॥
रबि प्रकास रजनी जथा, गति जानत सब संसार।
लोहा जिमि पारस छुए, कनक होत नहिँ बार ॥ ८ ॥

(१) जल। (२) जैसे हाथी नहा कर फिर सूँड से अपने ऊपर धूल डाल लेता है तैसाही इस मन का हाल है। (३) यज्ञ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरु नानक

—:o:—

जीवन समय—१५२६ से १५९५ तक। जनम स्थान—तलवंडी नगर, ज़िला लाहौर। सतसंग स्थान—सुल्तानपुर और करतारपुर, पंजाब।
जाति और आश्रम—वेदी खत्री, गृहस्थ। गुरू—नारद मुनी।

गुरु नानक ने जीवों के चिताने के लिये देशाटन बहुत किया। पहली जात्रा उनकी पूरब को संवत १५५६ में शुरू हुई—पंजाब से आगरा, बिहार, बंगाल, उड़ीसा और आसाम के प्रान्तों में अनुमान ग्यारह बरस तक घूम कर [तवारीख़ गुरु ख़ालसा में बर्मा देश में जाना भी लिखा है] अपने स्थान सुल्तानपुर पंजाब को लौट आये और वहाँ थोड़े दिन ठहर कर संवत १५६७ में दूसरे सफ़र दक्खिन को निकले और मारवाड़, गौड़ देश, हैदराबाद, मदरास के सूबों में बिचरते हुए संगलदीप (लंका) तक गये और वहाँ के राजा शिवनाभ को मंत्र उपदेश दिया और उन्हीं के हेतु प्राणसंगली का ग्रन्थ रचा। संगलदीप के राजा की गोष्टि का समाचार पढ़ने जोग है जो गुरु नानक के सविस्तर जीवन-चरित्र में प्राण-संगली के आदि में छपा है। फिर सुल्तानपुर को लौट कर वहाँ विश्राम किया और कुछ दिन पीछे अपनी तीसरी जात्रा में उत्तर को सिधारे। बद्री नारायण, नैपाल, सिकिम, भुटान आदि देशों की सैर करते हुए पहाड़ के रास्ते से लौट कर सुल्तानपुर में पधारे। चौथी जात्रा पच्छिम की संवत १५७० में शुरू हुई और सिंध, मक्का, जद्दा, मदीना, रूम, बग़दाद, ईरान, बिलुचिस्तान, क़ंधार, काबुल और कश्मीर घूमते हुए संवत १५७९ में कर्तारपुर में आन बिराजे और अनुमान चौबीस बरस के देशाटन के पीछे वहीं सोलह बरस विश्राम करके परमधाम को सिधारे। गुरु नानक ने ६९ बरस १० महीना १० दिन की अवस्था तक परमार्थ की दौलत दोनों हाथों से लुटाकर और लाखों जीवों को सिख (शिष्य) बना कर चोला छोड़ा।

॥ नाम ॥

साचा नामु अराधिया, जम लै भन्ना जाहि[1]।
नानक करनी सार है, गुरमुख घड़िया राहि[2] ॥ १ ॥
क्या लीता धनवंतिया, क्या छोड़्या निर्धनियाँ।
नानक सच्चे नाम बिनु, अग्गे दोवें सक्खणियाँ[3] ॥ २ ॥

(१) जम भाग जाता है। (२) गुरुमुख ने अपना रास्ता गढ़ या बना लिया है।
(३) आगे दोनों ख़ाली हाथ होंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इक सूही दूजी सोहणी, तीजी सोभावंती नारि ।
सुइने रुप्पे पच्चरी, नानक बिनु नावैँ कुड़्यार[1] ॥ ३ ॥
अट्ठे पहर मचंदड़ा, कच्चे कूड़े कंम[2] ।
नाम अराधन ना मिले, नानक हीन करंम ॥ ४ ॥
सहस स्याणप[3] नाम बिनु, करि देखै सभि बाद ।
सोई स्याणप नानका, हिरदे जिन के याद ॥ ५ ॥
भूषण पहिरे भोजन खाये, फूल बहे[4] नर अंधु ।
नानक नामु न चेतनी, लागि रहे दुर्गंधु ॥ ६ ॥

॥ चितावनी ॥

कलियाँ थीँ धउले भये[5], धउलियोँ भये सुपैदु ।
नानक मता मतौँ दियाँ, उज्जरि गइया खेड़ु[6] ॥ १ ॥
जागो रे जिन जागना, अब जागनि की बारि ।
फेरि कि जागो नानका, जब सोवउ पाँउ पसारि[7] ॥ २ ॥
जित मुह मिलनि मुमारखाँ, लक्खाँ मिलै असीस ।
ते मुह फेर तपाइयहि, तन मन सहे कसीस[8] ॥ ३ ॥
इक दब्बहि इक साड़ियहि, इक दिचनि ढंड लुड़ाइ[9] ।
गई मुमारख नानका, है है पहुती आय ॥ ४ ॥
मित्राँ दोस्त माल धन, छड्डि चले अति भाइ ।
संगि न कोई नानका, उह हंस[10] इकेला जाइ ॥ ५ ॥

---

(१) यद्यपि कोई स्त्री रक्त-वरण, सुंदर, शोभावाली और सोने रूपे से जड़ी हुई है तौ भी नाम बिना कूड़े के तुल्य है। (२) कच्चे और कूड़े कामोँ में आठ पहर जलता रहता है। (३) चतुरता। (४) फूल कर बैठे। (५) काले से भूरे बाल हुए। (६) सोचते २ खेल ही बर्बाद गया। (७) फिर क्या जागोगे जब कि मर जावगे। (८) जिस मुँह को मुबारकबाद और लाखोँ आसीस मिलती है वही मुँह जलाए जायँगे और तन मन को कष्ट होगा। (९) एक गाड़े जाते हैँ, एक जलाए जाते हैँ, और एक योँही डाल दिये जाते हैँ। (१०) जीव।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ भक्ति ॥

मैँ धरि[1] तेरी साहिबा, और नहीँ परवाहि ।
जगत पधाणूँ पंध सिर, गिरावेँ लैँदा साहि[2] ॥ १ ॥
जेही पिरीति लगंदियाँ, तोड़[3] निबाहू होइ ।
नानक दरगह जाँदियाँ, ठक[4] न सक्कै कोइ ॥ २ ॥
सै सै बारी कट्टियै, जे सीस कीचै कुरबान ।
नानक कीमति ना पवै, परिया दूर मकान[5] ॥ ३ ॥

॥ शूर ॥

सूरा एह न आखियन, जो लड़नि दलाँ मैँ जाय ।
सूरे सोई नानका, जो मंनणु[6] हुकम रजाय ॥ १ ॥
हिरदे जिन के हरि बसै, से जन कहियहि सूर ।
कही न जाई नानका, पूरि रह्या भरपूर ॥ २ ॥

॥ अहंकार ॥

कूड़े करहिँ तकब्बरी[7], हिंदू मूसलमान ।
लहन सजाईँ[8] नानका, बिनु नाँवैँ सुलतानु ॥ १ ॥

॥ दुबिधा ॥

मन की दुबिधा ना मिटै, मुक्ति कहाँ ते होइ ।
कउड़ी बदले नानका, जन्म चल्या नर खोइ ॥ १ ॥

॥ उपदेश ॥

जित वेले अमृत वसै[9], जीयाँ होवे दाति ।
तित वेले तू उठि बहु[10], त्रिह पहरे पिछली राति ॥ १ ॥

(१) सहारा। (२) जगत (मुसाफिर) मारग के सिर पर खड़ा है क्योँकि वह गिनती के दम भर रहा है। (३) अंत तक। (४) रोक। (५) जो सिर [अहं से तात्पर्य है] को कुरबान करै तो सौ सौ बार काट कर धरदे, ऐसे भक्त की महिमा कोई नहीँ जान सकता, उसका घर बहुत दूर पर [अर्थात ऊँचे लोक मेँ] हो गया। (६) मानते हैँ। (७) झूठे घमंड करते हैँ। (८) बिना नाम के बादशाह भी सजा (दंड) पावैँगे। (९) बरसे। (१०) उठ कर बैठ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

खत्री ब्रह्मण सूद बैस, जाती पूछि न देई दाति ।
नानक भागें पाइयै, त्रिह पहरे पिछली राति ॥ २ ॥

सबद न जानउ गुरू का, पार परउ कित घाट ।
ते नर डूबे नानका, जिन का बड़ बड़ ठाट[१] ॥ ३ ॥

धर अंबर विच वेलड़ी, तहँ लाल सुगंधा बूल[२] ।
अक्खर इक[३] नाँ आयो, नानक नहीँ कबूल ॥ ४ ॥

॥ मिश्रित ॥

रँडियाँ एह न आखियन, जिन के चलन भतार ।
रँडियाँ सेई नानका, जिन बिसरिया करतार[४] ॥ १ ॥

देखि अजाणाँ जट्टियाँ, पसँगु मुहणु किराड़ ।
तत्ते तावण लाइयहि, मुहि मिलनीयाँ अँगियार[५] ॥ २ ॥

देखि कै सूड़ी[६] झोपड़ी, चोरी करदे चोरु ।
वसि पये धर्मराय दे, कड्ढि लये सभ खोरु[७] ॥ ३ ॥

बरतु नेमु तीरथु भ्रमैं, बहुतेरा बोलणि कूड़[८] ।
अंतरि तीरथु नानका, सोधत नाहीँ मूड़[९] ॥ ४ ॥

लै फुरमान दिवान दा, खसि प्यादे खाहिँ ।
बाँही बद्धे मारियहि, मारैं दे कुरलाहिँ[१०] ॥ ५ ॥

पाधे मिस्सर अंधुले[११], काजी मुल्लाँ कोरु[१२] ।
(नानक) तिनाँ पास न भिटीयै, जो सबदे दे चोरु ॥ ६ ॥

---

(१) सामान । (२) फूल । (३) रकार की धुन अर्थात "राम" । (४) राँड [illegible] नहीँ कहलातीँ जिनके पति मर गये [चलन] हैँ, विधवा वह हैँ जिन्हों ने कर[illegible] को भुला दिया है । (५) जो बनिये अनजान जमींदारनियाँ को देख कर पासँग मा[illegible] हैँ वह तत्ते तंदूर में भूने जायँगे और उन के मुँह में अंगारे डाले जायँगे । ([illegible] सूनी । (७) वह जमराय के बस में पड़ गये जो सब कसर निकाल लेगा । ([illegible] बहुत बकवाद मिथ्या है । (९) अंतर के तीर्थ को मूरख नहीँ खोजते । (१०) दीव[illegible] का हुक्म लेकर प्यादे बकरे मार कर खाते हैँ, ऐसे लोग मुश्क बाँधकर मारे जा[illegible] और तब चिल्लायँगे । (११) पाधा और ब्राह्मण अंधे हैँ । (१२) कोरे ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुसाईं तुलसीदास जी

जीवन समय—१५८६ से १६८० तक।

जन्म स्थान—राजापुर गाँव परगना मऊ ज़िला बाँदा।

सतसंग स्थान—काशी। जाति और आश्रम—कान्यकुब्ज ब्राह्मण, भेष।

गुरू—नरहरिदासजी जो स्वामी रामानन्द के शिष्य थे।

इन को बाल्मीकि जी का अवतार कहते हैं और इस में संदेह नहीं कि इनकी हिन्दी भाषा की रामायण बाल्मीकि जी की संस्कृत रामायण से सुंदरता में कम नहीं बरन इस से सर्व साधारण का कहीं बढ़कर उपकार हुआ है। यह ३१ बरस तक सूरदास जी के समकालीन थे और नाभा जी (भक्त-माल के कर्त्ता) तो इन के परम मित्र और सतसंगी थे। एक बार बाबा मलूकदास से भी मेला हुआ था। गुसाईं जी मथुरा, वृन्दाबन, कुरुक्षेत्र, प्रयाग, चित्रकूट, जगन्नाथपुरी, सोरों आदि तीर्थों में घूमते रहे परन्तु मुख्य स्थान इन के सतसंग का काशी था और वहीं ९१ बरस की अवस्था में अस्सी घाट पर चोला छोड़ा। कथा है कि युवा अवस्था में इन की गाढ़ी प्रीति अपनी स्त्री के साथ थी, एक दिन वह मायके गई थी सो यह उसके बियोग में ऐसे बिकल हुए कि बरसात की रात में बढ़ी हुई नदी को एक मुर्दे पर बैठ कर पार किया और एक भारी साँप को जो उनकी स्त्री के कोठे से लटकता था पकड़ कर चढ़ गये और स्त्री के सामने जा खड़े हुए। स्त्री बोली कि जो कहीं तुम्हारा ऐसा प्रेम राम के साथ होता तो मट्टी से सोना बन जाते। पूर्ब संस्कार बश यह बचन गुसाईं जी के हृदय में धस गया और उसी दम राम की खोज में घरबार त्याग कर निकल पड़े। इनके ग्रंथों में रामायण और बिनय पत्रिका जक्त-प्रसिद्ध हैं जिनकी महिमा भारतवर्ष के गाँव २ में और फ़रंगिस्तान तथा अमरीका तक फैली हुई है।

॥ नाम ॥

राम नाम मनि दीप धरु, जीह[1] देहरीद्वार।
तुलसी भीतर बाहिरो, जो चाहसि उजियार॥ १॥

राम नाम को अंक है, सब साधन हैं सून।
अंक गये कछु हाथ नहिं, अंक रहे दसगून॥ २॥

प्रीति प्रतीति सुरीति से, रामनाम जपु राम।
तुलसी तेरो है भलो, आदि मध्य परिनाम॥ ३॥

---

(१) जीभ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब्रह्म राम तेँ नाम बड़, बरदायक बरदानि।
राम चरित सत कोटि[1] महँ, लिय महेस जिय जानि॥ ४

रे मन सब से निरसि कै, सरस राम से होहि।
भलो सिखावन देत है, निसि दिन तुलसी तोहि॥ ५

॥ प्रेम ॥

तुलसी के मत चातकहिँ, केवल प्रेम पियास।
पियत स्वाँति जल जान जग, याचक बारह मास॥ १

रटत रटत रसना लगी, तृषा सूखि गइ अंग।
तुलसी चातक प्रेम को, नित नूतन रुचि रंग॥ २

॥ विश्वास ॥

बिनु बिस्वासै भक्ति नहिँ, तेहि बिनु द्रवहिँ न राम।
राम कृपा बिनु सपनेहू, जीव न लहि बिस्राम॥ १

बढ़ि प्रतीत गठिबन्ध तेँ, बड़ो योग तेँ छेम।
बड़ो सुसेवक साइँ तेँ, बड़ो नेम तेँ प्रेम॥ २

॥ भक्तजन ॥

सबै कहावत राम के, सबहि राम की आस।
राम कहैँ जेहि आपनो, तेहि भजु तुलसीदास॥ १

तुलसी दिन भल साह कहँ, भली चोर कहँ रात।
निसिबासर ता कहँ भलो, मानै रामहिँ नात॥ २

॥ बिनय ॥

मो सम दीन न दीन हित, तुम समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंस मनि, हरहु बिषम भव भीर॥ १

---

(१) सौ करोड़ = एक अरब।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ सतसंग ॥

बिनु सतसंग न हरि कथा, तेहि बिन मोह न भाग।
मोह गये बिनु राम पद, होय न दृढ़ अनुराग ॥ १ ॥
साहिब तेँ सेवक बड़ो, जो निज धर्म सुजान।
राम बाँधि उतरे उदधि[1], लाँघि गयो हनुमान ॥ २ ॥

॥ सूरमा ॥

सूर समर करनी करहिँ, कहि न जनावहिँ आपु।
विद्यमान[2] रन पाय रिपु, कायर करहिँ प्रलापु[3] ॥

॥ उपदेश ॥

जूझे तेँ भल बूझिबो, भली जीति तेँ हारि।
डहँके तेँ डहकाइबो[4], भलो जो करिय बिचारि ॥ १ ॥
रोस[5] न रसना खोलिये, बरु खोलिय तरवार।
सुनत मधुर परिणाम हित, बोलिय बचन बिचार ॥ २ ॥
तुलसी जस भवितब्यता, तैसी मिलै सहाय।
आपुन आवै ताहि पै, की ताहिं तहाँ लै जाय ॥ ३ ॥
मंत्री गुरु अरु वैद्य जो, प्रिय बोलहिँ भय आस।
राज धर्म्म तन तीन कर, होइ बेगही नास ॥ ४ ॥
अवसर कौड़ी जो चुकै[6], बहुरि दिये का लाख।
दुइज न चंदा देखिये, उदय कहा भरि पाख ॥ ५ ॥
आपु आपु कहँ सब भलो, आपुन कहँ कोइ कोइ।
तुलसी सब कहँ जो भलो, सुजन सुराहिय सोइ ॥ ६ ॥
कलियुग सम युग आन नहिँ, जो नर करि बिस्वास।
गाइ राम गुन गन बिमल, भव तर बिनहिँ प्रयास ॥ ७ ॥

---

(१) समुद्र। (२) स्थित। (३) डींग। (४) ठगने से ठगा जाना अच्छा है।
(५) कड़ी जबान। (६) चूकै।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ साच ॥

मिथ्या माहुर सज्जनहिँ, खलहिँ गरल सम साच।
तुलसी छुवत पराय ज्योँ, पारद पावक आँच[1] ॥

॥ धीरज ॥

तुलसी असमय को सखा, धीरज धर्म बिबेक।
साहित साहस सत्य ब्रत, राम भरोसो एक ॥

॥ बिचारि ॥

लखै अघाने भूख ज्योँ, लखै जीति मेँ हारि।
तुलसी सुमति सराहिये, मग पग धरै बिचारि ॥

॥ काम क्रोध लोभ ॥

तात तीनि अति प्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान सुधाम मन, करहिँ निमिष महँ क्षोभ[2] ॥

॥ कपट ॥

हृदय कपट बरवेष[3] धरि, बचन कहै गढ़ि छोलि।
अब के लोग मयूर[4] ज्योँ, क्योँ मिलिये मन खोलि ॥ १ ॥
हँसनि मिलिनि बोलनि मधुर, कटु करतब मन माहँ।
छुवत जो सकुचै सुमति सो, तुलसी तिन की छाहँ ॥ २ ॥

॥ आशा ॥

तुलसी अद्भुत देवता, आसा देवी नाम।
सेये सोक समर्पई, बिमुख भये अभिराम[5] ॥

॥ कामिन ॥

काम क्रोध लोभादि मद, प्रबल मोह की धारि।
तिन महँ अति दारुन दुखद, माया रूपी नारि ॥ १ ॥
कहा न अबला कर सकै, कहा न सिंधु समाय।
कहा न पावक मैँ जरै, काल काहि नहिँ खाय ॥ २ ॥

---

(१) सज्जन को झूठ ज़हर सरीखा और दुर्जन को सच विष समान है वह इन से ऐसे भागते हैँ जैसे आग से पारा। (२) चलायमान। (३) अच्छा [illegible] (४) मोर। (५) सुख।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अमिय गारि गारेउ गरल, नारि करी करतार।
प्रेम बैर की जननि युग, जानहिं बिधि न गँवार ॥ ३ ॥

॥ निन्दा ॥

तुलसी जे कीरति चहहिँ, पर की कीरति खोइ।
तिन के मुँह मसि[1] लागिहै, मिटहि न मरिहैं धोइ ॥ १ ॥
परद्रोही परदार[2] रत, परधन परअपवाद[3]।
ते नर पामर[4] पापमय, देह धरे मनुजाद[5] ॥ २ ॥

॥ संस्कृत ॥

का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिये साच।
काम जो आवै कामरी, का लै करै कमाँच[6] ॥

॥ मिश्रित ॥

ग्रह गृहीत पुनि बात बस, तेहि पुनि बीछी मार।
ताहि पियाई बारुनी[7], कहहु कौन उपचार[8] ॥ १ ॥
तुलसी अपनो आचरन, भलो न लागत कासु।
तेहि न बसात जो खात नित, लहसुनहूँ की बासु ॥ २ ॥
मुखिया मुख सो चाहिये, खान पान को एक।
पालै पोषै सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक ॥ ३ ॥
हित पुनीत सब स्वारथहि, अरि असुद्ध बिनु जाड़।
निज मुख मानिकसम दसन[9], भूमि परे तेँ हाड़ ॥ ४ ॥
बरषि बिस्व सर्षित करत, हरत ताप औ प्यास।
तुलसी दोष न जलद[10] को, जो जल जरै जवास[11] ॥ ५ ॥
तुलसी पावस के समय, धरी कोकिलन मौन।
अब तो दादुर बोलिहैं, हमैं पूछिहै कौन ॥ ६ ॥

---

(१) स्याही। (२) पराई स्त्री। (३) दूसरों की निंदा। (४) नीच। (५) राक्षस। (६) दुशाला। (७) शराब। (८) इलाज, यत्न। (९) दाँत। (१०) बादल। (११) जवासा घास जो बरसात में जल जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

दादू दयाल

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

—:o:—

जीवन समय—१६०१ से १६६० तक। जन्म स्थान—अहमदाबाद, गुजरात देश। सतसंग स्थान—नराना नगर और भराना की पहाड़ी राजपूताना में। जाति—गुजराती ब्राह्मण दादू पंथियों के अनुसार; धुनियाँ लोक बाद अनुसार। आश्रम—गृहस्थ। गुरू—परम पुरुष एक बूढ़े साधू के भेष में।

यह अकबर बादशाह के सहकाली थे जो उन में बड़ी श्रद्धा रखता था। इन की क्षमा और दया का अंग इतना बड़ा था कि लोग दादू दयाल के नाम से पुकारने लगे। इन के मति के ५२ प्रसिद्ध अखाड़े राजपूताना, मारवाड़, पंजाब, गुजरात आदि देशों में हैं। इस पंथ में दो प्रकार के साधू हैं एक भेषधारी विरक्त जो गेरुआ वस्त्र पहिनते हैं, दूसरे नागा जो सफेद कपड़े पहिनते हैं और लेन देन खेती नौकरी वैद्यक आदि व्योहार करते हैं।

[पूरा जीवन-चरित्र दादू दयाल की बानी भाग १ में दिया है]

॥ गुरुदेव ॥

(दादू) गैब माहिँ गुरुदेव मिल्या, पाया हम परसाद।
मस्तक मेरे कर धर्‌या, देख्या अगम अगाध ॥ १ ॥
(दादू) सतगुरु सूँ सहजै मिल्या, लीया कंठ लगाइ।
दाया भई दयाल की, तब दीपक दिया जगाइ ॥ २ ॥
सतगुरु काढ़े केस गहि, डूबत इहि संसार।
दादू नाव चढ़ाइ करि, कीये पैली पार[1] ॥ ३ ॥
दादू उस गुरुदेव की, मैं बलिहारी जाउँ।
जहँ आसन अमर अलेख था, ले राखे उस ठाउँ ॥ ४ ॥
(दादू) सतगुरु मारे सबद सौं, निरखि निरखि निज ठौर।
राम अकेला रहि गया, चीत[2] न आवै और ॥ ५ ॥
सबद दूध घृत राम रस, कोइ साध बिलोवणहार।
दादू अमृत काढ़ि ले, गुरमुखि गहै बिचार ॥ ६ ॥

(१) पल्ली पार। (२) चित्त।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

देवै किरका[1] दरद का, टूटा जोड़ै तार।
दादू साधै सुरति को, सो गुर पीर हमार ॥ ७ ॥

सतगुर मिलै तो पाइये, भक्ति मुक्ति भंडार।
दादू सहजैं देखिये, साहिब का दीदार ॥ ८ ॥

(दादू) सतगुर माला मन दिया, पवन सुरति सूँ पोइ।
बिन हाथों निस दिन जपै, परम जाप यूँ होइ ॥ ९ ॥

(दादू) यहु मसीत[2] यहु देहुरा[3], सतगुर दिया दिखाय।
भीतरि सेवा बंदगी, बाहरि काहे जाइ ॥१०॥

मन ताजी[4] चेतन चढ़ै, ल्यौ[5] की करै लगाम।
सबद गुरू का ताजना[6], कोइ पहुँचे साध सुजान ॥ ११॥

॥ शब्द ॥

(दादू) सबदैं बंध्या सब रहै, सबदैं सब ही जाय।
सबदैं ही सब ऊपजै, सबदैं सबै समाय ॥ १ ॥

(दादू) सबदैं ही सचु पाइये, सबदैं ही संतोष।
सबदैं ही इस्थिर भया, सबदैं भागा सोक ॥ २ ॥

(दादू) सबदैं ही सूषिम भया, सबदैं सहज समान।
सबदैं ही निर्गुण मिलै, सबदैं निर्मल ज्ञान ॥ ३ ॥

(दादू) सबदैं ही मुक्ता भया, सबदैं समझै प्राण।
सबदैं ही सूझै सबै, सबदैं सुरझैं जाण[7] ॥ ४ ॥

पहली किया आप थैं, उतपत्ती ओंकार।
ओंकार थैं ऊपजे, पंच तत्त आकार ॥ ५ ॥

---

(१) किनका। (२) मसजिद। (३) मंदिर। (४) घोड़ा। (५) लौ। (६) कोड़ा। (७) ज्ञान।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पंच तत्त थैं घट भया, बहु बिधि सब बिस्तार।
दादू घट थैं ऊपजे, मैं तैं बरण बिचार ॥ ६ ॥
एक सबद सौं ऊनवै, बर्षन लागै आइ।
एक सबद सौं बीखरै, आप आप कौं जाइ ॥ ७ ॥
(दादू) सबद बाण गुर साध के, दूरि दिसंतर जाइ।
जेहिँ लागे सो ऊबरे, सूते लिये जगाइ ॥ ८ ॥
सबद जरै सो मिलि रहै, एकै रस पूरा।
कायर भागै जीव ले, पग माँडै सूरा ॥ ९ ॥
सबद सरोवर[1] सूभर[2] भर्या, हरि जल निर्मल नीर।
दादू पीवै प्रीत सौं, तिनके अखिल[3] सरीर ॥ १० ॥

॥ सुमिरन ॥

दादू नीका नाँव है, हरि हिरदे न बिसारि।
मूरति मन माहैं बसै, साँसै साँस सँभारि ॥ १ ॥
साँसै साँस सँभालताँ, इक दिन मिलि है आइ।
सुमिरण पैंड़ा सहज का, सतगुर दिया बताइ ॥ २ ॥
दादू राम सँभालि ले, जब लग सुखी सरीर।
फिर पीछैं पछिताहिगा, जब तन मन धरै न धीर ॥ ३ ॥
मेरे संसा को नहीं, जीवन मरन का राम।
सुपनैं हीं जनि बीसरै, मुख हिरदे हरि नाम ॥ ४ ॥
हरि भजि साफल[4] जीवना, पर उपगार समाइ।
दादू मरणा तहँ भला, जहँ पसु पंखी खाइ ॥ ५ ॥
(दादू) अगम बस्त पानैं[5] पड़ी, राखो मंझि छिपाइ।
छिन छिन सोई सँभालिये, मति वै बीसरि जाइ ॥ ६ ॥

(१) ताला़ब। (२) शुभ्र=प्रकाशमान। (३) पूरा। (४) सुफल। (५) हाथ

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(दादू) राम नाम निज औषधी, काटै कोटि बिकार।
बिषय ब्याधि थैं ऊबरै, काया कंचन सार ॥ ७ ॥
(दादू)सब सुख सरग पयाल[1] के, तोल तराजू बाहि।
हरि सुख एक पलक्क का, ता सम कह्या न जाय ॥ ८ ॥
कौन पटंतर[2] दीजिये, दूजा नाहीँ कोइ।
राम सरीखा राम है, सुमिर्याँ ही सुख होइ ॥ ९ ॥
नाँव लिया तब जाणिये, जे तन मन रहै समाइ।
आदि अंत मध एक रस, कबहूँ भूलि न जाइ ॥१०॥

॥ चितावनी ॥

(दादू) जे साहिब कौँ भावै नहीँ, सो बाट न बूझी रे।
साईँ सौँ सन्मुख रही, इस मन सौँ जूझी रे ॥ १ ॥
दादू अचेत न होइये, चेतन सौँ चित लाइ।
मनवाँ सोता नीँद भरि, साईँ संग जगाइ ॥ २ ॥
आपा पर सब दूरि करि, राम नाम रस लागि।
दादू औसर जात है, जागि सकै तो जागि ॥ ३ ॥
दुख दरिया संसार है, सुख का सागर राम।
सुख सागर चलि जाइये, दादू तजि बेकाम ॥ ४ ॥
(दादू) झाँती पाये पसु पिरी, हाँणे लाइ म बेर।
सांथ सभोई हल्यौ, पोइ पसंदो केर ॥ ५ ॥[3]
काल न सूझै कंध पर, मन चितवै बहु आस।
दादू जिव जाणै नहीँ, कठिन काल की पास[4] ॥ ६ ॥

---

(१) पाताल। (२) दृष्टांत (३) झाँकी पाकर प्रीतम का दर्शन कर, अब (हाँणे) देर (बेर) मत (म) लगा (लाइ)—साथी सभी (सभोई) चल दिये (हल्यौ) पीछे (पोइ) कौन (केर) देखेगा [पसँदो]। (४) फाँस।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जहँ जहँ दादू पग धरै, तहाँ काल का फंध।
सिर ऊपर साँधे खड़ा, अजहूँ न चेतै अंध ॥ ७ ॥
यहु बन हरिया देखि करि, फूल्यौ फिरै गँवार।
दादू यहु मन मिरगला, काल अहेड़ो लार ॥ ८ ॥
कहताँ सुनताँ देखताँ, लेताँ देताँ प्राण।
दादू सो कतहूँ गया, माटी धरी मसाण ॥ ९ ॥
पंथ दुहेला[२] दूरि घर, संग न साथी कोय।
उस मारग हम जाहिँगे, दादू क्यौँ सुख सोइ ॥ १० ॥
काल झाल मैँ जग जलै, भाजि न निकसै कोइ।
दादू सरणै साच कै, अभय अमर पद होइ ॥ ११ ॥
ये सज्जन दुर्जन भये, अंति काल की बार।
दादू इन मैँ को नहीँ, बिपति बटावणहार ॥ १२ ॥
काल हमारा कर गहै, दिन दिन खैँचत जाइ।
अजहुँ जीव जागै नहीँ, सोवत गई बिहाइ ॥ १३ ॥
धरती करते एक डग, दरिया करते फाल।
हाँकौँ परबत फाड़ते, सो भी खाये काल ॥ १४ ॥

॥ भक्ति औह लव ॥

जोग समाधि सुख सुरति सौँ, सहजैँ सहजैँ आव।
मुक्ता द्वारा महल का, इहै भगति का भाव ॥ १ ॥
ल्यौ लागी तब जाणिये, जे कबहूँ छूटि न जाइ।
जीवत यौँ लागी रहै, मूवाँ मंझि समाइ ॥ २ ॥
मन ताजी चेतन चढ़ै, ल्यौ की करै लगाम।
सबद गुरू का ताजना, कोइ पहुँचै साध सुजान ॥ ३ ॥

---

(१) कमान खीँचे। (२) कठिन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आदि अंत मधि एक रस, टूटै नहिँ धागा।
दादू एकै रहि गया, जब जाणी जागा ॥ ४ ॥
अर्थ अनूपम आप है, और अनरथ भाई।
दादू ऐसी जानि करि, ता सौँ ल्यौ लाई ॥ ५ ॥
सुरति अपूठी[1] फेरि करि, आतम माहैँ आण।
लागि रहै गुरदेव सौँ, दादू सोई सयाण ॥ ६ ॥
जहँ आतम तहँ राम है, सकल रह्या भरपूर।
अंतरगति ल्यौ लाइ रहु, दादू सेवग सूर ॥ ७ ॥
एक मना लागा रहै, अंत मिलैगा सोइ।
दादू जा के मन बसै, ता कौँ दरसन होइ ॥ ८ ॥
दादू निबहै त्यूँ चलै, धरि धीरज मन माहिँ।
परसैगा पिव एक दिन, दादू थाकै नाहिँ ॥ ९ ॥

॥ बिरह ॥

मन चित चातृक ज्यूँ रटै, पिव पिव लागी प्यास।
दादू दरसन कारने, पुरवहु मेरी आस ॥ १ ॥
(दादू)बिरहिनि दुख कासनि[2] कहै, कासनि देइ सँदेस।
पंथ निहारत पीव का, बिरहिनि पलटे केस[3] ॥ २ ॥
ना वहु मिलै न मैँ सुखी, कहु क्यूँ जीवन होइ।
जिन मुझ कौँ घायल किया, मेरी दारू[4] सोइ ॥ ३ ॥
(दादू) मैँ भिष्यारी मंगिता, दरसन देहु दयाल।
तुम दाता दुख भंजिता, मेरी करहु सँभाल ॥ ४ ॥
दीन दुनी सदकै[5] करौँ, टुक देखण दे दीदार।
तन मन भी छिन छिन करौँ, भिस्त दोजग[6] भी वार ॥ ५ ॥

(१) पीछे। (२) किस से। (३) बाल सपेद हो गये। (४) दवा। (५) न्योछावर। (६) स्वर्ग और नर्क।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बिरह अगिन तन जालिये, ज्ञान अगिनि दौं लाइ।
दादू नख सिख परजलै[1], तब राम बुझावै आइ॥ ६॥

अंदर पीड़ न ऊभरै, बाहर करै पुकार।
दादू सो क्यौं करि लहै, साहिब का दीदार॥ ७॥

(दादू) कर बिन सर बिन कमान बिन, मारै खैंचि कसीस[2]।
लागी चोट सरीर मैं, नख सिख सालै सीस॥ ८॥

(दादू) बिरह जगावै दरद कौं, दरद जगावै जीव।
जीव जगावै सुरति कौं, पंच पुकारै पीव॥ ९॥

(दादू) नैन हमारे ढीठ हैं, नाले नीर न जाहिं।
सूके सराँ सहेत वै, करँक भये गलि माहिं[3]॥ १०॥

(दादू) जब बिरहा आया दरद सौं, तब कड़वे लागे काम।
काया लागी काल है, मीठा लागा नाम॥ ११॥

जे कबहूँ बिरहिनि मरै, तौ सुरति बिरहिनी होइ।
दादू पिव पिव जीवताँ, मुवा भी टेरै सोइ॥ १२॥

मीयाँ मैंडा आव घर, वाँढी वत्ताँ लोइ।
दुखड़े मुँहडे गये, मराँ बिछोहे रोइ[4]॥ १३॥

॥ प्रेम ॥

प्रेम भगति जब ऊपजै, निहचल सहज समाध।
दादू पीवै प्रेम रस, सतगुर के परसाद॥ १॥

---

(१) भभक कर जलै। (२) कसकर। (३) कहावत है कि असह दुख में [illegible] भी सूख जाते हैं इसी मसल को दादू साहिब अलंकार में फ़र्माते हैं कि जैसे [illegible] (सरा) के जीव मछली कछुए मेंढक आदि ऐसे निडर (ढीठ) या बेपरवाह होते [illegible] कि तलैया से पानी के साथ बह कर नाले में अपनी रक्षा नहीं करते बल्कि [illegible] ही में पड़े रहते हैं और उसी के साथ (सहित) सूख कर चमड़ी (करंक) [illegible] जाते हैं ऐसी ही दशा हमारी आँखों की है कि आँसू की धारा को त्याग कर [illegible] की तहाँ सूख या वैठ गईं (४) हे मेरे मालिक मेरे घर आव अर्थात् मेरे मन [illegible] वासकर, मैं दुहागिन लोक में फिरती हूँ। मेरे दुख बढ़ गये हैं, और तेरे [illegible] में मरती हूँ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दादू राता राम का, पीवै प्रेम अघाइ ।
मतावला दीदार का, माँगै मुक्ति बलाइ ॥ २ ॥
ज्यूँ अमली के चित अमल है, सूरे के संग्राम ।
निरधन के चित धन बसै, यौं दादू के राम ॥ ३ ॥
जो कुछ दिया हम कौं, सो सब तुमहीं लेहु ।
तुम बिन मन मानै नहीं, दरस आपणा देहु ॥ ४ ॥
भोरे भोरे तन करै, वंडै करि कुरबाण ।
मीठा कौड़ा ना लगै, दादू तौहू साण[१] ॥ ५ ॥
जब लग सीस न सौंपिये, तब लग इसक न होइ ।
आसिक मरणै ना डरै, पिया पियाला सोइ ॥ ६ ॥
इसक मुहब्बत मस्त मन, तालिब दर दीदार ।
दोस्त दिल हर दम हजूर, यादगार हुसियार ॥ ७ ॥
दादू इसक अलाह का, जे कबहूँ प्रगटै आइ ।
(तौ)तन मन दिल अरवाह[२] का, सब पड़दा जलि जाय ॥ ८ ॥
दादू पाती प्रेम की, बिरला बाँचै कोइ ।
बेद पुरान पुस्तक पढ़ैं, प्रेम बिना क्या होइ ॥ ९ ॥
प्रीत जो मेरे पीव की, पैठी पिंजर माहिँ ।
रोम रोम पिव पिव करै, दादू दूसर नाहिँ ॥ १०॥
आसिक मासुक ह्वै गया, इसक कहावै सोइ ।
दादू उस मासूक का, अल्लहि आसिक होइ ॥११॥
इसक अलह की जाति है, इसक अलह का अंग ।
इसक अलह औजूद[३] है, इसक अलह का रंग ॥ १२॥

---

(१) अपने तन की प्रीतम के आगे बोटी २ करके कुरबानी करै और बाँट दे फिर भी वह मधुर प्रीतम कड़वा न लगै तब वह तुझे मिलै [साण=साथ]। (२) सुरत। (३) वजूद, व्यक्ति।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ बिश्वास ॥

(दादू) सहजैं सहजै होइगा, जे कुछ रचिया राम।
काहे कौं कलपै मरै, दुखी होत बेकाम ॥ १ ॥
(दादू) मनसा बाचा कर्मना, साहिब का बेसास[1]।
सेवग सिरजनहार का, करै कौन की आस ॥ २ ॥
(दादू) च्यंता कीयाँ कुछ नहीँ, च्यंता जिव कूँ खाय।
हूणा था सो ह्वै रह्या, जाणा है सो जाइ ॥ ३ ॥
(दादू) राजिक[2] रिजक[3] लिये खड़ा, देवै हाथौं हाथ।
पूरिक पूरा पासि है, सदा हमारे साथ ॥ ४ ॥

॥ दुबिधा ॥

जब हम ऊजड़ चालते, तब कहते मारग माहिँ।
दादू पहुँचे पंथ चलि, कहैँ यहु मारग नाहिँ ॥ १ ॥
द्वै पष उपजी परिहरै, निर्पष अनभै सार।
एक राम दूजा नहीँ, दादू लेहु बिचार ॥ २ ॥
दादू संसा आरसी, देखत दूजा होइ।
भरम गया दुबिध्या मिटी, तब दूसर नाहीँ कोइ ॥ ३ ॥

॥ समरथ ॥

समरथ सब बिधि साइयाँ, ता की मैं बलि जाउँ।
अंतर एक जु सो बसै, औराँ चित्त न लाउँ ॥ १ ॥
ज्यूँ राखैं त्यूँ रहैंगे, अपणे बल नाहीँ।
सबै तुम्हारे हाथि है, भाजि कत जाहीँ ॥ २ ॥
दादू दूजा क्यूँ कहै, सिर परि साहिब एक।
सो हम कूँ क्यूँ बीसरै, जे जुग जाहिँ अनेक ॥ ३ ॥

(१) विश्वास। (२) रोजी देने वाला। (३) रोजी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्म फिरावै जीव कौँ, कर्मों कौँ करतार।
करतार कौँ कोई नहीँ, दादू फेरनहार ॥ ४ ॥
आप अकेला सब करै, औरूँ के सिर देइ।
दादू सोभा दास कूँ, अपना नाम न लेइ ॥ ५ ॥

॥ बेहद ॥

देखि दिवाने ह्वै गये, दादू खरे सयान।
वार पार कोइ ना लहै, दादू है हैरान ॥ १ ॥
पार न देवै आपणा, गोप गुझ[1] मन माहिँ।
दादू कोई ना लहै, केते आवैँ जाहिँ ॥ २ ॥

॥ निज करता का निर्णय ॥

जाती[2] नूर अलाह का, सिफाती[3] अरवाह।
सिफाती सिजदा करै, जाती बेपरवाह ॥ १ ॥
वार पार नहिँ नूर का, दादू तेज अनंत।
कीमति नहिँ करतार की, ऐसा है भगवंत ॥ २ ॥
जीयेँ[4] तेल तिलन्नि मेँ, जीयेँ गंधि फुलन्नि।
जीयेँ माखण षीर मेँ, ईयेँ रब रूहन्नि[5] ॥ ३ ॥

॥ बिनय ॥

तिल तिल का अपराधी तेरा, रती रती का चोर।
पल पल का मैँ गुनही[6] तेरा, बकसौ औगुण मोर ॥ १ ॥
गुनहगार अपराधी तेरा, भाजि कहाँ हम जाहिँ।
दादू देख्या सोधि सब, तुम बिन कहिँ न समाहिँ ॥ २ ॥
आदि अंत लौँ आइ करि, सुकिरत कछू न कीन्ह।
माया मोह मद मंछरा[7], स्वाद सबै चित दीन्ह ॥ ३ ॥

(१) गुप्त और छिपा। (२) निर्गुण। (३) सर्गुण। (४) जैसे। (५) तैसे ही मालिक सुरतोँ मेँ है। (६) गुनहगार। (७) मत्सर=अहंकार।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दादू बंदीवान[१] है, तू बंदीछोड़ दिवान।
अब जनि राखौ बंदि मैं, मीराँ[२] मेहरबान ॥ ४ ॥
दिन दिन नौतम भगति दे, दिन दिन नौतम नाँव।
दिन दिन नौतम नेह दे, मैं बलिहारी जाँव ॥ ५ ॥
साईं सत संतोष दे, भाव भगति बेसास।
सिदक सबूरी साच दे, माँगै दादूदास ॥ ६ ॥
पलक माहिँ प्रगटै सही, जे जन करै पुकार।
दीन दुखी तब देखि करि, अति आतुर तिहिँ बार ॥ ७ ॥
आगैं पीछैं सँगि रहै, आप उठाये भार।
साध दुखी तब हरि दुखी, ऐसा सिरजनहार ॥ ८ ॥
अंतरजामी एक तूँ, आतम के आधार।
जे तुम छाड़हु हाथ थैं, तौ कौण सँबाहणहार[३] ॥ ९ ॥
तुम हौ तैसी कीजिये, तौ छूटैंगे जीव।
हम हैं ऐसी जनि करौ, मैं सदिकै जाऊँ पीव ॥ १० ॥
साहिब दर दादू खड़ा, निसि दिन करै पुकार।
मीराँ मेरा मिहर करि, साहिब दे दीदार ॥ ११ ॥
तुम कूँ हम से बहुत हैं, हम कूँ तुम से नाहिँ।
दादू कूँ जनि परिहरौ, तूँ रहु नैनहुँ माहिँ ॥ १२ ॥

॥ साध ॥

साधू जन संसार मैं, पारस परगट गाइ।
दादू केते ऊधरे, जेते परसे आइ ॥ १ ॥
साधू जन संसार मैं, सीतल चंदन बास।
दादू केते ऊधरे, जे आये उन पास ॥ २ ॥

(१) क़ैदी। (२) हे मालिक। (३) सम्हालनेवाला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जहँ अरंड अरु आक थे, तहँ चंदन ऊग्या माहिँ ।
दादू चंदन करि लिया, आक कहै को नाहिँ ॥ ३ ॥
साध मिलै तब ऊपजै, हिरदे हरि का हेत ।
दादू संगति साध की, कृपा करै तब देत ॥ ४ ॥
जब दरवौ तब दीजियौ, तुम पैँ माँगौं येहु ।
दिन प्रति दरसन साध का, प्रेम भगति दिढ़ देहु ॥ ५ ॥
दादू चंदन कदि कह्या, अपणा प्रेम प्रकास ।
दह दिसि परगट ह्वै रह्या, सीतल गंध सुबास ॥ ६ ॥
पर उपगारी संत सब, आये यहि कलि माहिँ ।
पिवैँ पिलावैँ राम रस, आप सुवारथ नाहिँ ॥ ७ ॥
साध सबद सुख बरखिहै, सीतल होइ सरीर ।
दादू अंतर आतमा, पीवै हरि जल नीर ॥ ८ ॥
औगुण छाड़ै गुण गहै, सोई सिरोमणि साध ।
गुण औगुण थैँ रहित है, सो निज ब्रह्म अगाध ॥ ९ ॥
बिष का अमृत कर लिया, पावक का पाणी ।
बाँका सूधा करि लिया, सो साध बिनाणी[1] ॥ १० ॥

॥ भेष ॥

ज्ञानी पंडित बहुत हैँ, दाता सूर अनेक ।
दादू भेष अनंत हैँ, लागि रह्या सो एक ॥ १ ॥
कनक कलस बिष सूँ भर्‌या, सो किस आवै काम ।
सो धनि कूटा चाम का, जा मैँ अमृत राम[2] ॥ २ ॥
स्वाँग साध बहु अंतरा, जेता धरनि अकास ।
साधू राता राम सूँ, स्वाँग जगत की आस ॥ ३ ॥

---

(१) विज्ञानी । (२) सोने का कलसा जिसमेँ बिष भरा हो बेकाम है, परंतु कूटे चमड़े का कुप्पा भी जिसमेँ नाम (राम) रूपी अमृत भरा हो धन्य (धनि) है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(दादू) स्वाँगी सब संसार है, साधू कोई एक।
हीरा दूरि दिसंतरा, कंकर और अनेक॥ ४॥
दादू एकै आतमा, साहिब है सब माहिँ।
साहिब के नाते मिलै, भेष पंथ के नाहिँ॥ ५॥
(दादू) जग दिखलावै बावरी, षोड़स करै सिँगार।
तहँ न सँवारै आप कूँ, जहँ भीतर भरतार॥ ६॥

॥ दुर्जन ॥

निगुणा गुण मानै नहीँ, कोटि करै जे कोइ।
दादू सब कुछ सौँपिये, सो फिर बैरी होइ॥ १॥
दादू सगुणा लीजिये, निगुणा दीजै डारि।
सगुणा सन्मुख राखिये, निगुणा नेह निवारि॥ २॥
दादू दूध पिलाइये, बिषहर बिष करि लेइ।
गुण का अवगुण करि लिया, ताही कौँ दुख देइ॥ ३॥
मूसा जलता देख करि, दादू हंस-दयाल।
मानसरोवर ले चल्या, पंखा काटै काल॥ ४॥

॥ सतसंग दुर्जन को ॥

सतगुर चंदन बावना, लागे रहैँ भुवंग।
दादू बिष छाड़ैँ नहीँ, कहा करै सतसंग॥ १॥
कोटि बरस लौँ राखिये, बंसा[2] चंदन पास।
दादू गुण लीये रहै, कदे न लागै बास॥ २॥
कोटि बरस लौँ राखिये, लोहा पारस संग।
दादू रोम का अंतरा, पलटै नाहीँ अंग॥ ३॥

---

(१) कथा है कि एक चूहे को आग में जलता देख कर एक हंस ने द[या]
करके रक्षा के लिये उसे अपने परोँ पर बैठा लिया और समुद्र पार ले [चला]
परंतु चूहे ने अपने सुभाव बस हंस के परोँ को काट डाला जिस से दो[नों]
समुद्र में गिर पड़े। (२) बाँस।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कोटि बरस लौं राखिये, पत्थर पानी माहिँ ।
दादू आड़ा अंग है, भीतर भेदै नाहिँ ॥ ४ ॥

॥ सार गहनी ॥

पहिली न्यारा मन करै, पीछै सहज सरीर ।
दादू हंस बिचार सौं, न्यारा कीया नीर ॥ १ ॥
मन हंसा मोती चुणै, कंकर दीया डारि ।
सतगुर कहि समझाइया, पाया भेद बिचारि ॥ २ ॥
दादू हंस परेखिये, उत्तिम करणी चाल ।
बगुला बैसे ध्यान धरि, परतषि कहिये काल ॥ ३ ॥
गऊ बच्छ का ज्ञान गहि, दूध रहै ल्यौ लाइ ।
सींग पूँछ पग परिहरै, अस्थन लागै धाइ ॥ ४ ॥

॥ मध्य ॥

सहज रूप मन का भया, जब द्वै द्वै मिटी तरंग ।
ताता सीला सम भया, तब दादू एकै अंग ॥ १ ॥
कुछ न कहावे आप कौं, काहू संगि न जाइ ।
दादू निर्पष ह्वै रहै, साहिब सौं ल्यौ लाइ ॥ २ ॥
ना हम छाड़ैं ना गहैं, ऐसा ज्ञान बिचार ।
मद्धि भाइ[१] सेवैं सदा, दादू मुकति दुवार ॥ ३ ॥
बैरागी बन मैं बसै, घरबारी घर माहिँ ।
राम निराला रहि गया, दादू इन मैं नाहिँ ॥ ४ ॥

॥ घट मठ ॥

(दादू) जा कारनि जग ढूँढिया, सो तौ घट ही माहिँ ।
मैं तैं पड़दा भरम का, ता थैं ज़ानत नाहिँ ॥ १ ॥
सब घटि माहैं रमि रह्या, बिरला बूझै कोइ ।
सोई बूझै राम को, जो राम सनेही होइ ॥ २ ॥

---

(१) मध्य भाव ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ सेवक ॥

सेवग सेवा करि डरै, हम थैं कछू न होइ।
तूँ है तैसी बंदगी, करि नहिँ जानै कोइ ॥ १ ॥
फल कारण सेवा करै, याचै त्रिभुवन राव।
दादू सो सेवग नहीँ, खेलै अपना डाव[1] ॥ २ ॥
सूरज सन्मुख आरसी, पावक किया प्रकास।
दादू साईं साध बिच, सहजैं निपजै दास ॥ ३ ॥

॥ मौन ॥

(दादू) मनहीँ माहैँ समझि करि, मनहीँ माहिँ समाइ।
मन हीँ माहैँ राखिये, बाहरि कहि न जनाइ ॥ १ ॥
जरणा[2] जोगी जुगि जुगि जीवै, झरना[3] मरि मरि जाइ।
दादू जोगी गुरमुखी, सहजैं रहै समाइ ॥ २ ॥

॥ सूरमा ॥

(दादू) जे मुझ होते लाख सिर, तौ लाखौँ देती वारि।
सह[4] मुझ दीया एक सिर, सोई सौँपै नारि ॥ १ ॥
सूरा चढ़ि संग्राम कौँ, पाछा पग क्यौँ देइ।
साहिब लाजै भाजताँ, धृग जीवन दादू तेइ ॥ २ ॥
काइर काम न आवई, यहु सूरे का खेत।
तन मन सौँपै राम कौँ, दादू सीस सहेत ॥ ३ ॥
जब लग लालच जीव का, (तब लग) निर्भय हुआ न जाइ।
काया माया मन तजै, तब चौड़े रहै बजाइ ॥ ४ ॥
काया कबज कमान करि, सार सबद करि तीर।
दादू यहु सर साँधि करि, मारै मोटे मीर[5] ॥ ५ ॥
(दादू) तन मन काम करीम के, आवै तो नीका।
जिस का तिस कौँ सौँपिये, सोच क्या जी का ॥ ६ ॥

(१) दाँव। (२) हजम करने वाला, गुप्त रखने वाला। (३) उबल पड़ने वा[ला]। (४) मालिक। (५) मन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दादू पाखर पहरि करि, सब को झूझण जाइ।
अंगि उघाड़ै सूरिवाँ, चोट मुँहै मुँह खाइ ॥ ७ ॥
(दादू कहै) जे तूँ राखै साइयाँ, तौ मारि न सक्कै कोइ।
बाल न बंका करि सकै, जे जग बैरी होइ ॥ ८ ॥

॥ पतिव्रता ॥

(दादू) मेरे हिरदे हरि बसै, दूजा नाहीँ और।
कहौ कहाँ धौँ राखिये, नहीँ आन कौँ ठौर ॥ १ ॥
(दादू) पीव न देख्या नैन भरि, कंठि न लागी धाइ।
सूती नहिँ गल बाँहि दे, बिच हीँ गई बिलाइ ॥ २ ॥
प्रेम प्रीति इसनेह बिन, सब झूठे सिंगार।
दादू आतम रत नहीँ, क्यौँ मानै भरतार ॥ ३ ॥
(दादू) हूँ सुख सूती नीँद भरि, जागै मेरा पीव।
क्योँ करि मेला होइगा, जागै नाहीँ जीव ॥ ४ ॥
सुन्दरि कबहूँ कंत का, मुख सौँ नाँव न लेइ।
अपणे पिव के कारणे, दादू तन मन देइ ॥ ५ ॥
तन भी तेरा मन भी तेरा, तेरा प्यंड परान।
सब कुछ तेरा तू है मेरा, यहु दादू को ज्ञान ॥ ६ ॥
(दादू) नीच ऊँच कुल सुंदरी, सेवा सारी होइ।
सोई सोहागनि कीजिये, रूप न पीजै धोइ ॥ ७ ॥

॥ बिभिचारिन ॥

नारी सेवग तब लगैँ, जब लग साईँ पास।
दादू परसै आन को, ता की कैसी आस ॥ १ ॥
कीया मन का भावताँ, मेटी आज्ञाकार।
क्या मुख ले दिखलाइये, दादू उस भरतार ॥ २ ॥
पतिबरता के एक है, बिभिचारणि के दोइ।
पतिबरता बिभिचारणी, मेला क्योँ करि होइ ॥ ३ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुरिष हमारा एक है, हम नारी बहु अंग।
जे जे जैसी ताहि सौं, खेलै तिस ही रंग ॥ ४ ॥

॥ पारख ॥

(दादू) जैसे माहैं जिव रहै, तैसी आवै बास।
मुखि बोलै तब जाणिये, अंतर का परकास ॥ १ ॥
मति बुधि बिबेक बिचार बिन, माणस पसू समान।
समझाया समझै नहीं दादू परम गियान ॥ २ ॥
काचा उछलै ऊफणै, काया हाँडी माहिँ।
दादू पाका मिलि रहै, जीव ब्रह्म द्वै नाहिँ ॥ ३ ॥
अंधे हीरा परखिया, कीया कौड़ी मोल।
दादू साधू जौहरी, हीरे मोल न तोल ॥ ४ ॥
(दादू) साहिब कसैं सेवग खरा, सेवग कौं सुख होइ।
साहिब करै सो सब भला, बुरा न कहिये कोइ ॥ ५ ॥

॥ परिचय ॥

(दादू) निरंतर पिउ पाइया, तीन लोक भरपूरि।
सब सेजौं साईं बसै, लोग बतावैं दूरि ॥ १ ॥
दादू देखौं निज पीव कौं, दूसर देखौं नाहिँ।
सबै दिसा सौं सोधि करि, पाया घट ही माहिँ ॥ २ ॥
पुहुप प्रेम बरिषै सदा, हरि जन खेलैं फाग।
ऐसा कौतिग देखिये, दादू मोटे भाग ॥ ३ ॥
(दादू) देही माहैं दोइ दिल, इक खाकी इक नूर।
खाकी दिल सूझै नहीं, नूरी मंझि हजूर ॥ ४ ॥
(दादू)जब दिल मिला दयाल सौं, तब अंतर कुछ नाहिँ।
ज्यौं पाला पानी कौं मिल्या, त्यौं हरि जन हरि माहिँ ॥ ५ ॥

॥ उपदेश ॥

पहिली था सो अब भया, अब सो आगैं होइ।
दादू तीनौं ठौर कौं, बूझै बिरला कोइ ॥ १ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जे जन बेधे प्रीति सौँ, ते जन सदा सजीव।
उलटि समाने आप मेँ, अंतर[१] नाहीँ पीव ॥ २ ॥
देह रहै संसार मेँ, जीव राम के पास।
दादू कुछ ब्यापै नहीँ, काल झाल दुख त्रास ॥ ३ ॥
दादू छूटै जीवताँ, मूआँ छूटै नाहिँ।
मूआँ पीछैँ छूटिये, तौ सब आये उस माहिँ ॥ ४ ॥
संगी सोई कीजिये, जे इस्थिर इहि संसार।
ना वहु खिरै न हम खपैँ, ऐसा लेहु बिचार ॥ ५ ॥
संगी सोई कीजिये, सुख दुख का साथी।
दादू जीवण मरण का, सो सदा सँगाती ॥ ६ ॥
कबहुँ न बिहड़ै सो भला, साधू दिढ़-मति होइ।
दादू हीरा एक रस, बाँधि गाँठड़ी सोइ ॥ ७ ॥

॥ करनी और कथनी ॥

दादू कथणी और कुछ, करणी करैँ कुछ और।
तिन थैँ मेरा जिव डरै, जिन के ठीक न ठौर ॥

॥ जीवत मृतक ॥

जीवत माटी ह्वै रहै, साईँ सनमुख होइ।
दादू पहिली मरि रहै, पीछैँ तौ सब कोइ ॥ १ ॥
आपा गर्ब गुमान तजि, मद मंछर हंकार।
गहै गरीबी बंदगी, सेवा सिरजनहार ॥ २ ॥
(दादू) मेरा बैरी मै मुवा, मुझै न मारै कोइ।
मैँ हीँ मुझ कौँ मारता, मैँ मरजीवा होइ ॥ ३ ॥
मेरे आगे मैं खड़ा, ता थैँ रह्या लुकाइ।
दादू परगट पीव है, जे यहु आपा जाइ ॥ ४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

(१) भेद, दूरी।

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दादू आप छिपाइये, जहाँ न देखै कोइ।
पिव कौँ देखि दिखाइये, त्यौँ त्यौँ आनँद होइ॥ ५॥
(दादू) साईँ कारण माँस का, लोही[1] पानी होइ।
सूकै आटा अस्थि[2] का, दादू पावै सोइ॥ ६॥

॥ साच ॥

साचा नाँव अलाह का, सोई सति करि जाणि।
निहचल करि ले बंदगी, दादू सो परवाणि॥ १॥
दुई दरोग[3] लोग कौँ भावै, साईँ साच पियारा।
कौण पंथ हम चलैँ कहौ धौँ, साधौ करौ बिचारा॥ २॥
औषद खाइ न पछि[4] रहै, बिषम ब्याधि क्यौँ जाइ।
दादू रोगी बावरा, दोस बैद कौँ लाइ॥ ३॥
जे हम जाण्या एक करि, तौ काहे लोक रिसाइ।
मेरा था सो मैँ लिया, लोगौँ का क्या जाइ॥ ४॥
दादू पैँड़े पाप के, कदे न दीजे पाँव।
जिहिँ पैँड़े मेरा पिव मिलै, तिहिँ पैँड़े का चाव॥ ५॥
ऊपरि आलम[5] सब करैं, साधू जन घट माहिँ।
दादू एता अंतरा, ता थैँ बनती नाहिँ॥ ६॥
झूठा साचा करि लिया, बिष अमृत जाना।
दुख कौँ सुख सब को कहै, ऐसा जगत दिवाना॥ ७॥
साचे का साहिब धणी, समरथ सिरजनहार।
पाखँड की यहु पिर्थमी[6], परपँच का संसार॥ ८॥
(दादू) पाखँडं पीव न पाइये, जे अंतरि साच न होइ।
ऊपरि थैँ क्यौंहीँ रहौ, भीतरि के मल धोइ॥ ९॥

(१) लोहू। (२) हड्डी। (३) झूठ। (४) पथ्य, खाने में परहेज। (५) संसार
(६) पृथ्वी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जे पहुँचे ते कहि गये, तिनकी एकै बाति ।
सबै सयाने एक मति, उनकी एकै जाति ॥ १० ॥

॥ दया ॥

काल जाल थैं काढ़ि करि, आतम अंगि लगाइ ।
जीव दया यहु पालिये, दादू अमृत खाइ ॥ १ ॥
भावहीण जे पिरथमी, दया बिहूणा देस ।
भगति नहीं भगवंत की, तहँ कैसा परवेस ॥ २ ॥
काला मुँह करि करद[1] का, दिल थैं दूरि निवार ।
सब सूरति सुबहान की, मुल्लाँ मुग्ध न मारि[2] ॥ ३ ॥

॥ बिचार ॥

कोटि अचारी एक बिचारी, तऊ न सरभरि[3] होइ ।
आचारी सब जग भर्या, बिचारी बिरला कोइ ॥ १ ॥
सहज बिचार सब सुख में रहै, दादू बड़ा बमेक[4] ।
मन इंद्री पसरैं नहीं, अंतरि राखै एक ॥ २ ॥
(दादू) सोचि करै सो सूरमा, करि सोचै सो कूर ।
करि सोच्याँ मुख स्याम है, सोच कर्याँ मुख नूर ॥ ३ ॥
जो मति पीछैं ऊपजै, सो मति पहिली होइ ।
कबहुँ न होवै जी दुखी, दादू सुखिया सोइ ॥ ४ ॥

॥ मान ॥

आपा मेटै हरि भजै, तन मन तजै बिकार ।
निरबैरी सब जीव सौं, दादू यहु मति सार ॥ १ ॥
किस सौं बैरी ह्वै रह्या, दूजा कोई नाहिँ ।
जिस के अँग थैं ऊपज्या, सोई है सब माहिँ ॥ २ ॥

---

(१) छुरी । (२) मुल्लाजी दीन जीवों को मत मारो क्योंकि वह मालिक ही की अंश हैं । (३) सरवरि=बराबरी । (४) बिबेक ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जहाँ राम तहँ मैं नहीं, मैं तहँ नाहीं राम।
दादू महल बरीक है, दुइ को नाहीं ठाम ॥ ३॥

॥ मन ॥

सोई सूर जे मन गहै, निमखि न चलने देइ।
जब हीं दादू पग भरै, तब हीं पाकड़ि लेइ ॥ १॥
जब लगि यहु मन थिर नहीं, तब लगि परस न होइ।
दादू मनवाँ थिर भया, सहजि मिलैगा सोइ ॥ २॥
यहु मन कागद की गुड़ी[१], उड़ि चढ़ी अकास।
दादू भीगै प्रेम जल, तब आइ रहै हम पास ॥ ३॥
सो कुछ हम थैं ना भया, जा पर रीझै राम।
दादू इस संसार में, हम आये बेकाम ॥ ४॥
इंद्री स्वारथ सब किया, मन माँगै सो दीन्ह।
जा कारण जग सिरजिया, सो दादू कछू न कीन्ह ॥ ५॥
(दादू) ध्यान धरैं का होत है, जे मन नहिं निर्मल होइ।
तौ बग[२] सब हीं ऊधरैं, जे यहि बिधि सीझै कोइ ॥ ६॥
(दादू) जिस का दर्पण ऊजला, सो दर्सण देखै माहिं।
जिस की मैली आरसी, सो मुख देखै नाहिं ॥ ७॥
जागत जहँ जहँ मन रहै, सोवत तहँ तहँ जाइ।
दादू जे जे मन बसै, सोइ सोइ देखै आइ ॥ ८॥
जहँ मन राखै जीवताँ, मरताँ तिस घरि जाइ।
दादू बासा प्राण का, जहँ पहली रह्या समाइ ॥ ९॥
जीवत लूटैं जगत सब, मिरतक लूटैं देव।
दादू कहाँ पुकारिये, करि करि मूए सेव ॥ १०॥

(१) गुड्डी, पतंग। (२) बकुला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ माया ॥

साहिब है पर हम नहीं, सब जग आवै जाइ।
दादू सुपिना देखिये, जागत गया बिलाइ ॥ १ ॥
(दादू) माया का सुख पंच दिन, गर्ब्यौ कहा गँवार।
सुपिनैं पायो राज धन, जात न लागै बार ॥ २ ॥
कालरि[१] खेत न नीपजै, जे बाहै[२] सौ बार।
दादू हाना बीज का, क्या पचि मरै गँवार ॥ ३ ॥
राहु गिलै[३] ज्यौं चंद कौं, गहन गिलै ज्यौं सूर।
कर्म गिलै यौं जीव कौं, नखसिख लागै पूर ॥ ४ ॥
कर्म कुहाड़ा[४] अंग बन, काटत बारम्बार।
अपने हाथौं आप कौं, काटत है संसार ॥ ५ ॥
(दादू) सब को बणिजे खार खलि[५], हीरा कोइ न लेइ।
हीरा लेगा जौहरी, जो माँगे सो देइ ॥ ६ ॥
सुर नर मुनियर बसि किये, ब्रह्मा बिस्नु महेस।
सकल लोक के सिर खड़ी, साधू के पग हेठ ॥ ७ ॥
(दादू) पहिली आप उपाइ करि, न्यारा पद निर्बाण।
ब्रह्मा बिस्नु महेस मिलि, बंध्या सकल बँधाण ॥ ८ ॥
दादू बाँधे बेद बिधि, भरम करम उरझाइ।
मरजादा माहैं रहे, सुमिरण किया न जाइ ॥ ९ ॥
(दादू) माया मीठी बोलणी, नै नै[६] लागै पाँइ।
दादू पैसै[७] पेट मैं, काढ़ि कलेजा खाइ ॥ १० ॥
भँवरा लुब्धी बास का, कँवल बँधाना आइ।
दिन दस माहैं देखताँ, दून्यूँ गये बिलाइ ॥ ११ ॥

---

(१) ऊसर। (२) जोतै। (३) ग्रसै। (४) कुल्हाड़ा। (५) संसार खारी और फोक चीजैं अर्थात कूड़ा करकट का गाहक है। (६) झुक झुक कर। (७) पैठे, घुसै।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ निन्दा ॥

(दादू) जिहिँ घर निंद्या साध की, सो घर गये समूल[1]।
तिन की नोव न पाइये, नाँव न ठाँव न धूल ॥ १॥
(दादू) निंद्या नाँव न लीजिये, सुपनै हीँ जिनि होइ।
ना हम कहैँ न तुम सुणौ, हम जिनि भाखै कोइ ॥ २॥
अणदेख्या अनरथ कहैँ, कलि प्रथमी का पाप।
धरती अंबर जब लगैँ, तब लग करैँ कलाप ॥ ३॥
(दादू) निंदक बपुरा जिनि मरै, पर-उपगारी सोइ।
हम कूँ करता ऊजला, आपण मैला होइ ॥ ४॥

॥ मांस अहार ॥

माँस अहारी मद पिवै, बिषै बिकारी सोइ।
दादू आतम राम बिन, दया कहाँ थैँ होइ ॥ १॥
आपस[2] कौँ मारै नहीँ, पर कौँ मारन जाहि।
दादू आपा मारै बिना, कैसे मिलै खुदाय ॥ २॥

॥ मिश्रित ॥

आपा उरझैँ उरझिया, दीसै सब संसार।
आपा सुरझैँ सुरझिया, यहु गुर-ज्ञान बिचार ॥ १॥
सब गुण सब ही जीव के, दादू ब्यापैँ आइ।
घर माहैँ जामै मरै, कोइ न जाणै ताहि ॥ २॥
दादू बेली आतमा, सहज फूल फल होइ।
सहज सहज सतगुर कहै, बूझै बिरला कोइ ॥ ३॥
हरि तरवर तत आतमा, बेली करि बिस्तार।
दादू लागै अमर फल, कोइ साधू सींचणहार ॥ ४॥
दया धर्म का रूखड़ा, सत सौँ बधता[3] जाइ।
संतोष सौँ फूलै फलै, दादू अमर फल खाइ ॥ ५॥

(१) जड़ से। (२) अपने को। (३) बढ़ता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माया बिहड़ै देखताँ, काया संग न जाइ।
कृत्तम बिहड़ै बावरे, अजरावर[1] ल्यौ लाइ ॥ ६ ॥
जेते गुण ब्यापैँ जीव कौँ, तेते तैँ तजै रे मन।
साहिब अपणे कारणे, भलो निबाह्यो पन[2] ॥ ७ ॥

बाबा मलूकदास।

जीवन समय—१६३१ से १७३९ तक। जन्म और सतसंग स्थान—मौज़ा कड़ा, ज़िला इलाहाबाद। जाति और आश्रम—खत्री कक्कड़, गृहस्थ। गुरू—विट्ठल-दास द्राविड़।

१०८ बरस की अवस्था मेँ अपने जन्म स्थान ही मेँ चोला छोड़ा। इन के पंथ की अनेक गद्दियाँ हिन्दुस्तान मेँ और (कहते हैँ कि) नैपाल और काबुल मेँ भी हैँ। जगन्नाथ जी मेँ इन के नाम का रोट अब तक जारी है।

[पूरा जीवन-चरित्र इन की बानी के आदि मेँ छपा है]

॥ गुरुदेव ॥

जीती बाजी गुर प्रताप तेँ, माया मोह निवार।
कह मलूक गुरु कृपा तेँ, उतरा भवजल पार ॥ १ ॥
सुखद पंथ गुरुदेव यह, दीन्हो माहिँ बताय।
ऐसो ऊपट पाय अब, जग मग चलै बलाय[3] ॥ २ ॥
भ्रम भागा गुरु बचन सुनि, मोह रहा नहिँ लेस।
तब माया छल हित किया, महा मोहनी भेस ॥ ३ ॥
ता को आवत देखि कै, कही बात समुझाय।
अब मैँ आया गुरु सरन, तेरी कछु न बसाय ॥ ४ ॥
मलुका सोई पीर है, जो जानै पर पीर।
जो पर पीर न जानही, सो काफ़िर बेपीर ॥ ५ ॥
बहुतक पीर कहावते, बहुत करत हैं भेस।
यह मन कहर खुदाय का, मारै सो दुरवेस ॥ ६ ॥

(१) बलवान, समरथ। (२) प्रतिज्ञा। (३) गुरुदेव का बताया हुआ ऐसा सुगम रास्ता मिलने पर संसारी रास्ते (जग मग) पर कौन चलेगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ नाम ॥

जीवहुँ तें प्यारे अधिक, लागैं मोहीं राम।
बिन हरि नाम नहीं मुझे, और किसी से काम ॥ १ ॥
कह मलूक हम जबहिं तें, लीन्ही हरि की ओट।
सोवत हैं सुख नींद भरि, डारि भरम की पोट ॥ २ ॥
राम नाम एकै रती, पाप के कोटि पहाड़।
ऐसी महिमा नाम की, जारि करै सब छार ॥ ३ ॥
धर्महिं का सौदा भला, दाया जग ब्योहार।
रामनाम की हाट लै, बैठा खोल किवार ॥ ४ ॥
साहिब मेरा सिर खड़ा, पलक पलक सुधि लेइ।
जबहीं गुरु किरपा करैं, तबहिं राम कछु देइ ॥ ५ ॥
मोदी सब संसार है, साहिब राजा राम।
जा पर चिट्ठी उतरै, सोई खरचै दाम ॥ ६ ॥

॥ सुमिरन ॥

सुमिरन ऐसा कीजिये, दूजा लखै न कोय।
ओंठ न फरकत देखिये, प्रेम राखिये गोय ॥ १ ॥
माला जपौं न कर[1] जपौं, जिभ्या कहौं न राम।
सुमिरन मेरा हरि करै, मैं पाया बिसराम ॥ २ ॥

॥ चितावनी ॥

गर्व भुलाने देंह के, रचि रचि बाँधे पाग।
सो देंही नित देखि के, चोंच सँवारे काग ॥ १ ॥
उतरे आइ सराय में, जाना है बड़ कोह[2]।
अटका आकिल[3] काम बस, ली भठियारी मोह ॥ २ ॥
जेते सुख संसार के, इकठे किये बटोरि।
कन थोरे काँकर घने, देखा फटक पछोरि ॥ ३ ॥

(१) हाथ यानी उँगलियों की पोर से गिनना। (२) कोस। (३) बुद्धिमान, स्या

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस जीने का गर्ब क्या, कहाँ देँह की प्रीत।
बात कहत ढह जात है, बारू की सी भीत॥ ४॥
मलूक कोटा झाँझरा, भीत परी भहराय।
ऐसा कोई ना मिला, (जो) फेर उठावै आय॥ ५॥
देँही होय न आपनी, समुझि परी है मोहिँ।
अबहीँ तेँ तजि राख तूँ, आखिर तजिहै तोहिँ॥ ६॥

॥ प्रेम ॥

प्रेम नेम जिन ना कियो, जीतो नाहीँ मैन[१]।
अलख पुरुष जिन ना लख्यो, छार परो तेहि नैन॥ १॥
कठिन पियाला प्रेम का, पियै जो हरि के हाथ।
चारो जुग माता रहै, उतरै जिय के साथ॥ २॥
बिना अमल माता रहै, बिन लस्कर बलवंत।
बिना बिलायत साहिबी, अंत माहिँ बेअंत॥ ३॥
रात न आवै नीँदड़ी, थरथर काँपे जीव।
ना जानूँ क्या करैगा, जालिम मेरा पीव॥ ४॥
मलूक सु माता सुंदरी, जहाँ भक्त औतार।
और सकल बाँझै भईँ, जनमे खर कतवार॥ ५॥
सोई पूत सपूत है, (जो) भक्ति करै चित लाय।
जरा मरन तेँ छुटि परै, अजर अमर ह्वै जाय॥ ६॥
सब बाजे हिरदे बजैं, प्रेम पखावज तार।
मंदिर ढूँढ़त को फिरै, मिल्यो बजावनहार॥ ७॥
करै पखावज प्रेम का, हृदे बजावै तार।
मनै नचावै मगन ह्वै, तिस का मता अपार॥ ८॥

(१) कामदेव।

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR LIBRARY. Jangamwadi Math, VARANASI.
CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो तेरे घट प्रेम है, तो कहि कहि न सुनाव।
अंतरजामी जानिहै, अंतरगत का भाव॥ ६॥

॥ विनय॥

नमो निरंजन निरंकार, अविगत पुरुष अलेख।
जिन संतन के हित धरयो, जुग जुग नाना भेख॥ १॥
हरि भक्तन के काज हित, जुग जुग करी सहाय।
सो सिव सेस न कहि सकै, कहा कहौं मैं गाय॥ २॥
राम राय असरन सरन, मोहिँ आपन करि लेहु।
संतन सँग सेवा करौँ, भक्ति मजूरी देहु॥ ३॥
भक्ति मजूरी दीजिये, कीजै भवजल पार।
बोरत है माया मुझे, गहे बाँह बरियार॥ ४॥

॥ साधु॥

जहाँ जहाँ बच्छा फिरै, तहाँ तहाँ फिरै गाय।
कहै मलूक जहँ संत जन, तहाँ रमैया जाय॥ १॥
भेष फकीरी जे करै, मन नहिँ आवै हाथ।
दिल फकीर जे हो रहै, साहिब तिन के साथ॥ २॥

॥ दुर्जन॥

मलूक बाद न कीजिये, क्रोधै देव बहाय।
हार मानु अनजान तेँ, बकि बकि मरै बलाय॥ १॥
कलपि डाहि[१] जे लेत हैँ, या तेँ पाप न और।
कह मलूक तेहि जीव को, तीन लोक नहिँ ठौर॥ २॥
मूरख को का बोधिये, मन में रहो बिचार।
पाहन मारे क्या भया, जहँ टूटै तरवार॥ ३॥
चार मास घन बरसिया, महा सुखम घन नीर।
ऐसी मुहकम[२] बख्तरी, लगा न एको तीर॥ ४॥

(१) कलपा और सता कर। (२) मज़बूत।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दाग जो लागा नील का, सौ मन साबुन धोय।
कोटि बार समझाइया, कौवा हंस न होय ॥ ५ ॥
दुर्जन दुष्ट कठोर अति, ता की जाति न ऐंड़।
स्वान पूँछ सुधरै नहीं, अंत टेढ़ की टेढ़ ॥ ६ ॥
चार पहर दिन होत रसोई, तनिक न निकसत टूक।
कह मलूक ता मँदिल में, सदा रहत हैं भूत ॥ ७ ॥

॥ माया ॥

माया मिसरी की छुरी, मत कोई पतियाय।
इन मारे रसबाद के, ब्रह्महिँ ब्रह्म लड़ाय ॥ १ ॥
नारी नाहिँ निहारिये, करै नैन की चोट।
कोइ इक हरिजन ऊबरे, पारब्रह्म की ओट ॥ २ ॥
नारी घोँटी अमल की, अमली सब संसार।
कोइ ऐसा सूफी[1] ना मिला, जा सँग उतरै पार ॥ ३ ॥

॥ मांस अहार ॥

पीर सभन की एक सी, मूरख जानत नाहिँ।
काँटा चूभे पीर है, गला काट कोउ खाय ॥ १ ॥
कुंजर चीँटी पसू नर, सब में साहिब एक।
काटै गला खुदाय का, करै सूरमा लेख ॥ २ ॥
सब कोउ साहिब बन्दते, हिन्दू मूसलमान।
साहिब तिन को बन्दता, जिस का ठौर इमान ॥ ३ ॥

॥ अनुभव ॥

जब लगि थो अँधियार घर, मूस थके सब चोर।
जब मंदिल दीपक बर्यो, वही चोर धन मोर ॥ १ ॥
मन मिरगा बिन मूड़ का, चहुँ दिसि चरने जाय।
हाँक लेआया ज्ञान तब, बाँधा ताँत लगाय ॥ २ ॥

(१) ज्ञानी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ दया ॥

दुखिया जनि कोइ दूखवै, दुखए अति दुख होय।
दुखिया रोइ पुकारिहै, सब गुड़ माटी होय॥ १॥
हरी डारि ना तोड़िये, लागै छूरा बान।
दास मलूका यों कहै, अपना सा जिव जान॥ २॥
जे दुखिया संसार मैं, खोवो तिन का दुक्ख।
दलिद्दर सौंप मलूक को, लोगन दीजै सुक्ख॥ ३॥
दया धर्म हिरदे बसै, बोलै अमृत बैन।
तेई ऊँचे जानिये, जिनके नीचे नैन॥ ४॥
सब पानी की चूपरी, एक दया जग सार।
जिन पर-आतम चीन्हिया, तेही उतरे पार॥ ५॥

॥ मन ॥

कोई जीति सकै नहीँ, यह मन जैसे देव।
या के जीते जीत है, अब मैं पायो भेव॥ १॥
तैँ मत जानै मन मुवा, तन करि डारा खेह।
ता का क्या इतबार है, जिन मारे सकल बिदेह॥ २॥

॥ मूर्त्ति पूजा, तीर्थ ॥

आतम राम न चीन्हही, पूजत फिरै पषान।
कैसेहु मुक्ति न होइगी, कोटिक सुनो पुरान॥ १॥
किरतिम देव न पूजिये, ठेस लगे फुटि जाय।
कहै मलूक सुभ आतमा, चारो जुग ठहराय॥ २॥
देवल पूजै कि देवता, की पूजै पाहाड़।
पूजन को जाँता भला, जो पीस खाय संसार॥ ३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हम जानत तीरथ बड़े, तीरथ हरि की आस।
जिन के हिरदे हरि बसै, कोटि तिरथ तिन पास ॥ ४ ॥
संध्या तर्पन सब तजा, तीरथ कबहुँ न जाउँ।
हरि हीरा हिरदे बसै, ताही भीतर न्हाउँ ॥ ५ ॥
मक्का मदिना द्वारिका, बद्री और केदार।
बिना दया सब झूठ है, कहै मलूक विचार ॥ ६ ॥
राम राय घट में बसै, ढूँढ़त फिरैं उजाड़।
कोइ कासी कोइ प्राग में, बहुत फिरैं झख मार ॥ ७ ॥

॥ मिश्रित ॥

अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका यों कहै, सब के दाता राम ॥ १ ॥
जहाँ जहाँ दुख पाइया, गुरु को थापा सोय।
जबहीं सिर टक्कर लगै, तब हरि सुमिरन होय ॥ २ ॥
आदर मान महत्त्व सत, बालापन को नेह।
ये चारो तबही गये, जबहिं कहा कछु देह ॥ ३ ॥
प्रभुता ही को सब मरै, प्रभु को मरै न कोय।
जो कोइ प्रभु को मरै, तो प्रभुता दासी होय ॥ ४ ॥
मानुष बैठे चुप करे, कदर न जानै कोय।
जबहीं मुख खोलै कली, प्रगट बास तब होय ॥ ५ ॥
सब कलियन में बास है, बिना बास नहिं कोय।
अति सुचित्त में पाइये, जो कोइ फूली होय ॥ ६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुन्दरदास जी

जीवन समय—१६५३ से १७४६ तक। जन्म स्थान—जयपुर की पहिली राजधानी द्यौसा नगर। सतसंग स्थान—फ़तेहपुर शेखावाटी। जाति—खँडेलवाल बनिया। आश्रम—भेष। गुरू—दादू दयाल।

सुंदरदास जी बाल साध और बाल कवि और संस्कृत के भारी पंडित और हिन्दी, पूरबी, पंजाबी, गुजराती, मारवाड़ी, फ़ारसी आदि भाषाएँ जानते थे। संस्कृत में कविता का रचना नापसंद था क्योंकि उस से सर्व साधारण का उपकार नहीं होता। यद्यपि बड़े गहरे भक्त थे परन्तु दिल्लगी का सुभाव था। इन के शिष्यों की पाँच गद्दियाँ फ़तेहपुर शेखावाटी, मोर, (बीकानेर) आदि स्थानों में हैं।

[पूरा जीवन-चरित्र सुंदर बिलास के आदि में छपा है]

॥ गुरुदेव ॥

दादू सतगुरु बंदिये, सो मेरे सिर-मौर।
सुन्दर बहिया जाय था, पकरि लगाया ठौर॥ १॥
सुन्दर सतगुरु बंदिये, सोई बंदन जोग।
औषध सबद दिवाइ करि, दूर कियो सब रोग॥ २॥
परमेसुर अरु परमगुरु, दोनौं एक समान।
सुन्दर कहत बिसेष यह, गुरु तें पावै ज्ञान॥ ३॥
सुन्दर सतगुरु आपु तें, किया अनुग्रह आइ।
मोह निसा में सोवतें, हमकौं लिया जगाइ॥ ४॥
सुन्दर सतगुरु सारिखा, कोऊ नहीं उदार।
ज्ञान खजीना खोलिया, सदा अटूट भँडार॥ ५॥
समदृष्टी सीतल सदा, अद्भुत जा की चाल।
ऐसा सतगुरु कीजिये, पल में करै निहाल॥ ६॥
सुन्दर सतगुरु मिहर करि, निकट बताया राम।
जहाँ तहाँ भटकत फिरैं, काहे को बेकाम॥ ७॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गोरखधंधा लोह में, कड़ी लोह ता माहिँ ।
सुंदर जानै ब्रह्म में, ब्रह्म जगत ह्वै नाहिँ ॥ ८ ॥
परमातम से आत्मा, जुदे रहे बहु काल ।
सुंदर मेला करि दिया, सतगुरु मिले दलाल ॥ ९ ॥
परमातम अरु आतमा, उपज्या यह अबिबेक ।
सुंदर भ्रम तेँ दोय थे, सतगुरु कीये एक ॥ १० ॥
सुंदर सूता जीव है, जाग्या ब्रह्म स्वरूप ।
जागन सोवन तेँ परे, सतगुरु कह्या अनूप ॥ ११ ॥
मूरख पावै अर्थ कौँ, पंडित पावै नाहिँ ।
सुंदर उलटी बात यह, है सतगुरु के माहिँ ॥ १२ ॥
सुंदर सतगुरु ब्रह्ममय, पर सिष की चम दृष्टि ।
सूधी ओर न देखई, देखै दर्पन पृष्ठ[१] ॥ १३ ॥
सुंदर काटै सोध करि, सतगुरु सोना[२] होइ ।
सिष सुबरन निर्मल करै, टाँका रहै न कोइ ॥ १४ ॥
नभमनि चिंतामनि कहै, हीरामनि मनिलाल ।
सकल सिरोमनि मुकटमनि, सतगुरु प्रगट दयाल ॥ १५ ॥
सुंदर सतगुरु आप तेँ, अतिही भये प्रसन्न ।
दूरि किया संदेह सब, जीव ब्रह्म नहिँ भिन्न ॥ १६ ॥
सुंदर सतगुरु हैँ सही, सुंदर सिच्छा दीन्ह ।
सुंदर बचन सुनाइ कै, सुंदर सुंदर कीन्ह ॥ १७ ॥

॥ सुमिरन ॥

सुंदर सतगुरु योँ कह्या, सकल सिरोमनि नाम ।
ता कौँ निसु दिन सुमरिये, सुखसागर सुखधाम ॥ १ ॥

(१) पीठ । (२) सोनार ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हिरदे में हरि सुमिरिये, अंतरजामी राइ।
सुंदर नीके जतन सौं, अपनौं बित्त छिपाइ॥ २॥

रंक हाथ हीरा चढ़्यो, ता कौ मोल न तोल।
घर घर डोलै बेचतो, सुंदर याही भोल[1]॥ ३॥

राम नाम मिसरी पियें, दूरि जाहिँ सब रोग।
सुंदर औषध कटुक सब, जप तप साधन जोग॥ ४॥

राम नाम जा के हिये, ताहि नवैँ सब कोइ।
ज्यौँ राजा की संक तेँ, सुन्दर अति डर होइ॥ ५॥

सुंदर सबही संत मिलि, सार लियौ हरि नाम।
तक्र[2] तजी घृत काढ़ि कै, और क्रिया किहिँ काम॥ ६॥

लीन भया बिचरत फिरै, छीन भया गुन देंह।
दीन भई सब कल्पना, सुन्दर सुमिरन येह॥ ७॥

भजन करत भय भागिया, सुमिरन भागा सोच।
जाप करत जैँरा[3] टल्या, सुन्दर साची लोच[4]॥ ८॥

सुंदर भजिये राम को, तजिये माया मोह।
पारस के परसे बिनाँ, दिन दिन छीजै लोह॥ ९॥

प्रीति सहित जे हरि भजैँ, तब हरि होहिँ प्रसन्न।
सुंदर स्वाद न प्रीति बिन, भूख बिना ज्यौँ अन्न॥ १०॥

एक भजन तन सौँ करै, एक भजन मन होइ।
सुंदर तन मन के परे, भजन अखंडित सोइ॥ ११॥

जाही कौ सुमिरन करै, ह्वै ताही को रूप।
सुमिरन कीयैँ ब्रह्म कं, सुंदर ह्वै चिद्रूप॥ १२॥

---

(१) भूला। (२) छाछ। (३) ईष्ट और मरत भैंस अर्थात व्याधि। (४) नरमी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ बिरह ॥

मारग जोवै बिरहिनी, चितवै पिय की ओर।
सुन्दर जियरे जक नहीं, कल न परत निस भोर ॥ १ ॥
सुन्दर बिरहिनि अधजरी, दुःख कहै मुख रोइ।
जरि बरि कै भस्मी भई, धुवाँ न निकसै कोइ ॥ २ ॥
ज्यों ठगमूरी खाइ कै, मुखहिं न बोलै बैन।
टुगर टुगर देख्या करै, सुन्दर बिरहा ऐन ॥ ३ ॥
लालन मेरा लाडिला, रूप बहुत तुझ माहिं।
सुन्दर राखै नैन में, पलक उघारै नाहिं ॥ ४ ॥
अब तुम प्रगटहु रामजी, हृदय हमारे आइ।
सुन्दर सुख संतोष ह्वै, आनँद अंग न माइ[१] ॥ ५ ॥

॥ बंदगी ॥

सुन्दर अंदर पैसि करि, दिल मैं गोता मारि।
तौ दिलही मैं पाइये, साईं सिरजनहारि ॥ १ ॥
सखुन हमारा मानिये, मत खोजे कहुँ दूर।
साईं सीने बीच है, सुंदर सदा हजूर ॥ २ ॥
जो यह उसका ह्वै रहै, तो वह इसका होइ।
सुन्दर बातौं ना मिलै, जब लग आप न खोइ ॥ ३ ॥
सुन्दर दिल की सेज पर, औरति है अरवाह[२]।
इस को जाग्या चाहिये, साहिब बेपरवाह ॥ ४ ॥
जो जागै तो पिय लहै, सोयें लहिये नाहिं।
सुन्दर करिये बंदगी, तौ जाग्या दिल माहिं ॥ ५ ॥

॥ पतिव्रत ॥

सुन्दर और न ध्याइये, एक बिना जगदीस।
सो सिर ऊपर राखिये, मन क्रम बिसवाबीस ॥ १ ॥

(१) समाय। (२) सुरत, जीवात्मा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुन्दर पतिब्रत राम सौं, सदा रहै इकतार।
सुख देवै तो अति सुखी, दुख तो सुखी अपार॥ २॥
जो पिय को ब्रत लै रहै, कंत पियारी सोइ।
अंजन मंजन दूरि करि, सुन्दर सनमुख होइ॥ ३॥
प्रीतम मेरा एक तूँ, सुन्दर और न कोइ।
गुप्त भया किस कारने, काहि न परगट होइ॥ ४॥

॥ उपदेश ॥

सुन्दर मनुषा देह की, महिमा कहिये काहि।
जाकौं बंछैं देवता, तूँ क्यौं खोवै ताहि॥ १॥
सुन्दर पंछी बिरछ पर, लियौ बसेरा आनि।
राति रहे दिन उठि गये, त्यौं कुटुंब सब जानि॥ २॥
सुन्दर तेरी मति गई, समझत नहीं लगार।
कूकर रथ नीचे चलै, हूँ खैंचत हौं भार॥ ३॥
सुन्दर यह औसर भलो, भजि ले सिरजनहार।
जैसें ताते लोह कौं, लेत मिलाइ लुहार॥ ४॥
सुन्दर योंही देखतें, औसर बीत्यो जाइ।
अँजुरी माहें नीर ज्यौं, किती बार ठहराइ॥ ५॥
दीया की बतियाँ कहैं, दीया किया न जाइ।
दीया करै सनेह करि, हीये जोति दिखाइ॥ ६॥
साईं दीया है सही, इसका दीया नाहिँ।
यह अपना दीया कहै, दीया लखै न माहिँ॥ ७॥

॥ चितावनी ॥

काल ग्रसत है बावरे, चेतन क्यौं न अजान।
सुन्दर काया कोट मैं, होइ रह्यो सुलतान॥ १॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुन्दर मछरी नीर मैं, बिचरत अपने ख्याल।
बगुला लेत उठाइ कैं, तोहि ग्रसै यों काल ॥ २ ॥
बेर बेर नहिं पाइये, सुन्दर मानुष देह।
राम भजन सेवा सुकृत[1], यह सौदा करि लेह ॥ ३ ॥
सुन्दर मानुष देह यह, ता मैं दोइ प्रकार।
या तें बूड़ै जगत महँ, या तें उतरै पार ॥ ४ ॥
सुन्दर काल महाबली, मारे मोटे मीर।
तूं है कौन कि गनति मैं, चेतत काहे न बीर ॥ ५ ॥
मेरे मंदिर माल धन, मेरो सकल कुटंब।
सुन्दर ज्यौं को त्यौं रहै, काल दियो जब बंब ॥ ६ ॥
सुन्दर गर्ब कहा करै, कहा मरोरै मूंछ।
काल चपेटो मारिहै, समुझि कहूं के भूंछ[2] ॥ ७ ॥
सुन्दर या संसार तें, काहि न निकसत भागि।
सुख सोवत क्यों बावरे, घर मैं लागी आगि ॥ ८ ॥
जो जो मन मैं कल्पना, सो सो कहिये काल।
सुन्दर तूं निःकल्प हो, छाड़ि कल्पना जाल ॥ ९ ॥
काल ग्रसै आकार कौं, जा मैं सकल उपाधि।
निराकार निर्लेप है, सुन्दर तहाँ न व्याधि ॥ १० ॥

॥ नारी पुरुष ॥

नारी पुरुष सनेह अति, देखैं जीवैं सोइ।
सुंदर नारी बीछुरै, आपु मृतक तब होइ ॥

॥ देहात्मा बिछोह ॥

सुन्दर देह परी रही, निकसि गयौ जब प्रान।
सब कोऊ यों कहतु है, अब ले जाहु मसान ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

(१) पुन्य कर्म। (२) भोंदू, मूर्ख।

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धरनीदास जी

—:❀:—

जन्म समय—सम्वत १७१३। जन्म और सतसंग स्थान—माँझी गाँ (जिला छपरा)। जाति और आश्रम—श्रीवास्तव्य कायस्थ, भेष। गुरु-चंद्रदास।

इन का पंथ अब तक जारी है और हज़ारों आदमी उस मत के हिन्दुस्त भर में फैले हैं। इन के दो ग्रंथ "सत्य प्रकाश" और "प्रेम प्रकाश" सुनने आये हैं।

[पूरे जीवन-चरित्र के लिये उन की बानी देखो]

॥ गुरुदेव ॥

धरनी जहँ लग देखिये, तहँ लौं सबै भिखारि।
दाता केवल सतगुरू, देत न मानै हारि ॥ १ ॥
धरनि फिरहिँ देसंतरो, धरि धरि के बहु भेस।
कोई कोई देखिहै, अंतर गुरु उपदेस ॥ २ ॥
धूवाँ के धौरेहरा, औ धूरी को धाम।
ऐसे जीवन जगत में, बिनु गुरु बिनु हरि नाम ॥ ३ ॥
धरनी सब दिन सुदिन है, कबहुँ कुदिन है नाहिँ।
लाभ चहूँ दिसि चौगुनो, (जो) गुरु सुमिरन हिये माहिँ ॥

॥ ध्यान ॥

धरनी ध्यान तहाँ धरौ, प्रगट जोति फहराहि।
मनि मानिक मोती झरै, चुगि चुगि हंस अघाहि ॥ १ ॥
धरनी ध्यान तहाँ धरौ, त्रिकुटी कुटी मँझार।
धर के बाहर अधर है, सनमुख सिरजनहार ॥ २ ॥

॥ चितावनी ॥

धरनी धरि रहु हरि ब्रतहिँ, परिहरि सब हो मोह।
धन सुत बंधु बिभव[1] जत, हावे अंत बिछोह ॥ १ ॥

(१) ऐश्वर्य।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धरनी धोख न लाइये, कबहीं अपनी ओर।
प्रभु सों प्रीति निबाहिये, जीवन है जग थोर ॥ २ ॥
गोरिया गरब करहु जिनि, अपने गोरे गात।
काल्हि परों चलि जाइहै, जैसे पियरे पात ॥ ३ ॥
धरनी चहुँ दिसि चरचिया[1], करि करि बहुत पुकार।
नाहीं हम हैं काहु के, नाहीं कोउ हमार ॥ ४ ॥

॥ बिरह ॥

धरनी धन वा बिरहनी, धारै नाहीं धीर।
बिहबल बिकल सदा चित, दुर्बल दुखित सरीर ॥ १ ॥
धरनी परबत पर पिया, चढ़ते बहुत डेरावँ।
कबहुँक पाँव जु डिगमिगै, पावों कतहुँ न ठाँव ॥ २ ॥
धरनी धरकत है हिया, करकत आहि करेज।
ढरकत लोचन भरि भरी, पीया नाहिन सेज ॥ ३ ॥
धरनी धवल[2] धरेहरहिं, चढ़ि चढ़ि चहुँ दिसि हेर।
आवत पिय नहिं दीखतो, भइली बहुत अबेर ॥ ४ ॥
धरनी सो दिन धन्न है, मिलब जबै हम नाह[3]।
संग पौंढ़ि सुख बिलसिहौं, सिर तर धरि के बाँह ॥ ५ ॥
धरनी धन की भूल हो, कछू बरनि नहिं जाय।
सनमुख रहती रैन दिन, मिलत नहीं पिय धाय ॥ ६ ॥

॥ प्रेम ॥

धरनी पलक परै नहीं, पिय की झलक सुहाय।
पुनि पुनि पीवत परम रस, तबहूँ प्यास न जाय ॥ १ ॥
धरनी धन तन जिवन यह, चाहे रहै कि जाय।
हरि के चरन हृदय धरि, अब तौ हेत बढ़ाय ॥ २ ॥

---

(१) ढूँढ़ा (२) सफेद। (३) पति।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धरनी सो धन धन्य हो, धन धन कुल उँजियार।
जा कर बाँह धइल पिया, आपन हाथ पसार ॥ ३॥
धरनी पिय जिन पावल, मेटि गइल सब दुंद।
अरध उरध सुर गावल, हिरदय होय अनंद ॥ ४॥
धरनी खेती भक्ति की, उपजे होत निहाल।
खर्चे खाये निबरै नहीं, परै न दुक्ख दुकाल ॥ ५॥
धरनी मन मिलबो कहा, जो तनिक माहिँ बिलगाय।
मन को मिलन सराहिये, जो एकमेक होइ जाय ॥ ६॥

॥ विनय ॥

धरनी जन की बीनती, करु करुनामय कान।
दीजै दरसन आपनो, माँगों कछु नहिँ आन ॥ १॥
धरनी बिलखि[1] बिनती करै, सुनिये प्रभू हमार।
सब अपराध छिमा करो, मैं हौं सरन तिहार ॥ २॥
धरनी सरनी रावरी, राम गरीब-निवाज।
कवन करैगो दूसरो, मोहिँ गरीब के काज ॥ ३॥
काहू के बहु बिभव भइ, काहू बहु परिवार।
धरनी कहत हमहिँ बल, ए हो राम तुम्हार ॥ ४॥
तिनुका दाँत के अंतरे, कर जोरे भुइँ सीस।
धरनी जन बिनती करै, जानु[2] परो जगदीस ॥ ५॥
धरनी नहिँ बैराग बल, नाहिँ जोग सन्यास।
मनसा बाचा कर्मना, बिस्वंभर बिस्वास ॥ ६॥
बिनती लीजे मानि करि, जानि दास को दास।
धरनी सरनी राखिये, अवर न दूसर आस ॥ ७॥

(१) रोकर। (२) जाँघ, चरन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ भेष ॥

कुल तजि भेष बनाइया, हिये न आयो साच।
धरनी प्रभु रीझै नहीँ, देखत ऐसो नाच ॥ १ ॥
भेष लियो दाया नहीँ, ध्यान धतूरा भाँग।
धरनी प्रभु काँचा नहीँ, जो भूलै ऐसे स्वाँग ॥ २ ॥

॥ घट मठ ॥

दिया दिया घर भीतरे[1], बाती तेल न आगि।
धरनी मन बच कर्मना, ता सोँ रहना लागि ॥ १ ॥
बिनु पग्रु निरत करो तहाँ, बिनु कर दैदै तारि।
बिनु नैनन छबि देखना, बिनु सरवन झनकारि ॥ २ ॥
धरनी अरध उरध चढ़ि, उदयो जोति सरूप।
देखु मनोहर मूरती, अतिहीँ रूप अनूप ॥ ३ ॥
तब लगि प्रगट पुकारिया, जब लगि निबरी नाहिँ।
धरनी जब निबरी परी, मन की मनहीँ माहिँ ॥ ४ ॥
धरनी हृदय पलंगरी, प्रीतम पौढ़े आय।
समा सुना जो स्रवन तेँ, कहे कवन पतियाय ॥ ५ ॥
धरनी तन मेँ तख्त है, ता ऊपर सुलतान।
लेत मोजरा सबहिँ को, जहँ लौँ जीव जहान ॥ ६ ॥

॥ मौन ॥

धरनी आपन मरम हो, कहिये नाहीँ काहि।
जाननहार सो जानि है, जैसो जो कछु आहि ॥

॥ कामिनी ॥

दामिनी ऐसी कामिनी, फाँसी ऐसो दाम।
धरनी दुइ तेँ बाचिये, कृपा करै जो राम ॥ १ ॥

(१) अंतर में दीपक धरा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धरनी ब्याही छोड़िये, जो हरिजन देखि लजाय।
बेस्या संग बिराजिये, जो भक्ति अंग ठहराय ॥ २॥

॥ मांस अहार ॥

धरनी जिव जिनि मारियो, माँसहिँ नाहीँ खाहु।
नंगे पाँव बबूर बन, होइ नाहिँ निरबाहु ॥ १॥
माँस अहारी जीयरा, सो पुनि कथै गियान।
नाँगी है घूँघट करै, धरनी देखि लजान ॥ २॥
धरनी यह मन जम्बुका[१], बहुत कुभोजन खात।
साधु संग मृग होइ रहु, सबद सुगंध बसात ॥ ३॥

॥ ब्राह्मण ॥

धरनी भरमी बाम्हने, बसहिँ भरम के देस।
करम चढ़ावहिँ आपु सिर, अवर जे ले उपदेस ॥ १॥
करनी पार उतारिहै, धरनी कियो पुकार।
साकित बाम्हन नहिँ भला, भक्ता भला चमार ॥ २॥
मास अहारी बाम्हना, सो पापी बहि जाउ।
धरनी सूद्र बइस्नवा, ताहि चरन सिर नाउ ॥ ३॥
धरनी सो पंडित नहीँ, जो पढ़ि गुन कथैं बनाय।
पंडित ताहि सराहिये, जो पढ़ा बिसरि सब जाय ॥ ४॥

॥ मिश्रित ॥

धरनी काहि असीसिये, औ दीजै काहि सराप।
दूजा कतहुँ न देखिये, सब घट आपै आप ॥ १॥
धरनी कथनी लोक की, ज्योँ गीदर को ज्ञान।
आगम भाखै और के, आपु परे मुख स्वान ॥ २॥
परमारथ को पंथ चहि, करते करम किसान।
ज्योँ घर मेँ घोड़ा अछत, गदहा करै पलान[२] ॥ ३॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

(१) स्यार। (२) काठी कसै।

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जगजीवन साहिब

इन के जीवन समय के विषय में दुमता है। "मिश्रवंधु विनोद" में इनका ग्रंथ-रचना काल सम्वत १८१८ लिखा है और पादरी जान-टामस ने भी इसी के लगभग कहा है परन्तु इन के सत्तनामी पंथवाले इन की जन्म तिथि माघ सुदी सत्तमी मंगलवार सम्वत १७२७ और मृत्यु तिथि वैशाख वदी सत्तमी मंगलवार सम्वत १८१७ बतलाते हैं जिस का प्रमाण उन के एक ग्रंथ से भी होता है जो मानने योग्य है। यह भारी गति के संत थे जिन की वानी दीनता और प्रेम रस में पगी हुई है। जाति के चँदेल क्षत्री थे और सदा गृहस्थ आश्रम ही में रहे। जन्म इन का जिला बारावंकी (अवध) के सरदहा गाँव में हुआ था और उसी जिले के कोटवा गाँव में उमर भर सतसंग कराया। भीखा पंथी इन को गुलाल साहिब का शिष्य बतलाते हैं और अपने गुरु घराने में शामिल करते हैं (देखो जीवन-चरित्र जगजीवन साहिब की वानी के भाग १ में) परन्तु सत्तनामियों के अनुसार इन के गुरू "विश्वेश्वर पुरी" थे जिन का भीखा पंथ से कोई सम्बन्ध नहीं था। इन के अनुयाई दहनी कलाई पर काला और सपेद धागा बाँधते हैं। इन के मुख्य ग्रंथ "ज्ञानप्रकाश," "महा प्रलय" और "प्रथम ग्रंथ" हैं।

॥ चितावनी ॥

मैं तैं गाफिल होहु नहिँ, समुझि कै सुद्धि सँभार।
जौने घर तैं आयहू, तहँ का करहु विचार ॥ १ ॥

काहे भूल गइसि तैं, का तोहि काँ हित लाग।
जवने पठवा कौल करि, तेहि कस दीन्ह्यो त्याग ॥ २ ॥

इहाँ तो कोऊ रहि नहीं, जो जो धरिहै देँह।
अंत काल दुख पाइहौ, नाम तैं करहु सनेह ॥ ३ ॥

तजु आसा सब झूँठ ही, सँग साथी नाहिँ कोय।
केउ केहू न उबारही, जेहि पर होय सो होय ॥ ४ ॥

मारहिँ काटहिँ बाँटहीँ, जानि मानि करु त्रास।
छाड़ि देहु गफिलाई, गहहु नाम की आस ॥ ५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जगजीवन गुरु सरनहीँ, अंतर धरि रहु ध्यान।
अजपा जपु परतीत करि, करिहैँ सब औसान॥ ६॥

॥ विनय ॥

पपिहै जाय पुकारेऊ, पंछिन आगे रोय।
तीनि लोक फिरि आयेऊँ, बिनु दुख लख्यो न कोय॥ १॥
जोगिन है जग ढूढ़ेऊँ, पहिरयोँ कुंडल कान।
पिय का अंत न पायेऊँ, खोजत जनम सिरान॥ २॥
बैठि मैँ रहेऊँ पिया सँग, नैनन सुरति निहारि।
चाँद सुरज दोउ देखेऊँ, नहिँ उनकी अनुहारि[१]॥ ३॥
माया रच्यो हिँडोलना, सब कोइ भूल्यो आय।
पेँग मारि वहिँ गिरि गयो, काहू अंत न पाय॥ ४॥
बिस्न औ ब्रह्मा भूलेऊ, भूल्यो आइ महेस।
मुनि जन इंदर भूलि सब, भूले गौरि गनेस॥ ५॥
सतगुरु सत खंभन गगन, सूरति डोरि लगाय।
उतरै गिरै न टूटई, भूलहि पेँग बढ़ाय॥ ६॥
जगजीवन कहि भाखही, संतन समझहु ज्ञान।
गगन लगन लै लावहू, निरखहु छबि निरबान॥ ७॥
माया बहुत अपरबल, अलख तुम्हार बनाउ।
जगजीवन बिनती करै, बहुरि न फेरि भुलाउ॥ ८॥

॥ उपदेश ॥

सदा सहाई दास पर, मनहिँ बिसारैँ नाहिँ।
जगजीवन साची कहै, कबहूँ न्यारे नाहिँ॥ १॥
सत समरथ तेँ राखि मन, करिय जगत को काम।
जगजीवन यह मंत्र है, सदा सुक्ख बिसराम॥ २॥

---

[१] बराबर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सत्त नाम जपु जीयरा, और बृथा करि जान।
माया तकि नहिँ भूलसो, समुझि पाछिला ज्ञान॥ ३॥
कहँवाँ तेँ चलि आयहू, कहाँ रहा अस्थान।
सो सुधि बिसरि गई तोहिँ, अब कस भयसि हेवान॥ ४॥
अबहूँ समुझि के देखु तैँ, तजु हंकार गुमान।
यहि परिहरि[१] सब जाइ है, होइ अंत नुकसान॥ ५॥
दीन लीन रहु निसु दिना, और सर्बसौ त्यागु।
अंतर बासा किये रहु, महा हितू तेँ लागु॥ ६॥
काया नगर सोहावना, सुख तब हीँ पै होय।
रमत रहै तेहिँ भीतरे, दुख नहिँ ब्यापै कोय॥ ७॥
मृत मंडल कोउ थिर नहीँ, आवा सो चलि जाय।
गाफिल है फंदा पर्यौ, जहँ तहँ गयो बिलाय॥ ८॥
जगजीवन गहि चरन गुरु, ऐनन[२] निरखि निहारि।
ऐसी जुगुती रहै जे, लेहैँ ताहि उबारि॥ ९॥

(१) छोड़ कर। (२) आँख से।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

यारी साहिब

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

——:०:——

इन का जीवन समय सम्वत १७२५ और १७८० के दर्मियान था। जाति के मुसलमान फ़क़ीरी भेष में थे और वीरू साहिब इन के गुरू थे। दिल्ली में अपने गुरू के जीवन समय में उन की सेवा में बराबर रहे और उन के बाद उन की गद्दी पर बैठे और वहीं चोला छोड़ा। दिल्ली में उनकी समाधि मौजूद है। सिवाय इन के बुल्ला साहिब के चार प्रसिद्ध चेले और थे—केशवदास, सूफ़ीशाह, शेख़नशाह, और हस्तमुहम्मद शाह।

॥ घट मठ ॥

जोति सरूपी आतमा, घट घट रहो समाय।
परम तत्त मन-भावनो, नेक न इत उत जाय॥ १॥
रूप रेख बरनौं कहा, कोटि सूर परगास।
अगम अगोचर रूप है, [कोउ] पावै हरि को दास॥ २॥
नैनन आगे देखिये, तेज पुंज जगदीस।
बाहर भीतर रमि रह्यो, सो धरि राखौ सीस॥ ३॥
बाजत अनहद बाँसुरी, तिरबेनी के तीर।
राग छतीसो होइ रहे, गरजत गगन गँभीर॥ ४॥
आठ पहर निरखत रहौ, सन्मुख सदा हजूर।
कह यारी घर ही मिलै, काहे जाते दूर॥ ५॥
बेला फूला गगन मैं, बंक नाल गहि मूल।
नाहिँ उपजै नहिँ बीनसै, सदा फूल के फूल॥ ६॥
दक्खिन दिसा मोर नइहरो, उत्तर पंथ ससुरार।
मान सरोवर ताल है, [तह] कामिनि करत सिँगार॥ ७॥
आतम नारि सुहागिनी, सुन्दर आपु संवारि।
पिय मिलबे को उठि चली, चौमुख दियना बारि॥ ८॥
धरनि[1] अकास के बाहरे, यारी पिय दीदार।
सेत छत्र तहँ जगमगै, सेत फटिक उँजियार॥ ९॥

---

(१) पृथ्वी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तारनहार समर्थ है, अवर न दूजा कोय।
कह यारी सतगुरु मिलै, [तो] अचल अरु अम्मर होय ॥१०॥

दरिया साहिब (बिहार वाले)

जीवन समय—१७३१ से १८३७ तक। जन्म और सतसंग स्थान—मौजा धरकंधा ज़िला आरा। जाति—क्षत्री (दरिया पंथियों के कथन अनुसार), मुसलमान (आम शुहरत से)। गुरू—परम पुरुष साधू के भेष में।

इन के अनुयाई इन्हें कबीर साहिब का अवतार मानते हैं। दरिया-पंथी खड़े हुए झुक कर मालिक की वंदगी करते हैं जिसे वह "कोरनिश" कहते हैं और फिर मत्था टेक कर सिरदा (सिजदा) करते हैं। हर एक साधू एक रखना (मिट्टी का हुक्का) और भरुका पानी पीने का अपने पास रखता है चाहे ज़रूरत हो या न हो। इन का मारवाड़वाले दरिया साहिब के साथ विचित्र मिलान दोनों की बानी के आदि में दिखलाया है।

॥ गुरुदेव ॥

दरिया भवजल अगम है, सतगुरु करहु जहाज।
तेहि पर हंस चढ़ाइ कै, जाय करहु सुख राज ॥ १ ॥
पहुँचै हंस सत सबद से, सतगुरु मिलै जो मीत।
कह दरिया सब भर्म तजि, बसै चरन मह चीत ॥ २ ॥
सतगुरु साहिब साच हहिँ, देखो सबद बिचारि।
गहो डोरि यह सबद की, तन मन डारो वारि ॥ ३ ॥
सत्त गुरू गमि ज्ञान करु, बिमल सदा परकास।
मम सतगुरु का दास हौं, पद पंकज की आस ॥ ४ ॥
सुकृत पिरेमहिं हितु करहु, सत बोहित[1] पतवार।
खेवट सतगुरु ज्ञान है, उतरि जाव भौ पार ॥ ५ ॥

॥ नाम ॥

सत्त नाम निजु सार है, अमर लोक के जाय।
कह दरिया सतगुरु मिलै, संसय सकल मिटाय ॥ १ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

(१) नाव।

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जा के पूँजी नाम है, कबहिँ न होखै हानि।
नाम बिहूना मानवा, जम के हाथ बिकानि ॥ २ ॥
हंस नाम अमृत नहिँ चाख्यो, नहिँ पाये पैसार[१]।
कह दरिया जग अरूझ्यो, इक नाम बिना संसार ॥ ३ ॥

॥ सुमिरन ॥

सुमिरन माला भेष नहिँ, नाहिँ मसी को अंक।
सत्त सुकृति दृढ़ लाइ कै, तब तोरै गढ़ बंक ॥ १ ॥
सुमिरहु सत्त नाम गति, प्रेम प्रीति चित लाय।
बिना नाम नहिँ बाचिहो, मिथ्या जनम गँवाय ॥ २ ॥

॥ शब्द ॥

जैसे तिल में फूल जो, बास जो रहा समाय।
ऐसे सबद सजीवनी, सब घट सुरति दिखाय ॥ १ ॥
कह दरिया सुन संत यह, सबदहि करो बिचार।
जब हीरा हिरंबर होइहै, तब छुटिहै संसार ॥ २ ॥

॥ चितावनी ॥

कोठा महल अटारिया, सुने स्रवन बहु राग।
सतगुरु सबद चीन्हे बिना, ज्यों पंछिन महँ काग ॥ १ ॥
कनक कामिनि के फंद में, ललची मन लपटाय।
कलपि कलपि जिव जाइहै, मिथ्या जनम गँवाय ॥ २ ॥
मातु पिता सुत बंधवा, सब मिलि करैं पुकार।
अकेल हंस चलि जातु है, कोइ नहिँ संग तुहार ॥ ३ ॥

॥ विश्वास ॥

भजन भरोसा एक बल, एक आस बिस्वास।
प्रीति प्रतीति इक नाम पर, (सोइ) संत बिबेकी दास ॥ १ ॥
है खुसबोई पास में, जानि परै नहिँ सोय।
भरम लगे भटकत फिरैं, तिरथ बरत सब कोय ॥ २ ॥

---

(१) घुसने न पावै।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ घट मठ ॥

दरिया तन से नहिँ जुदा, सब किछु तन के माहिँ ।
जोग जुगत सोँ पाइये, बिना जुगति किछु नाहिँ ॥ १ ॥
अछै बृच्छ ओइ पुरुष हहिँ, जिंदा अजर अमान ।
मुनिवर थाके पंडिता, बेद कथहि अनुमान ॥ २ ॥

॥ भेद ॥

तीनि लोक के ऊपरे, (तहँ) अभय लोक बिस्तार ।
सत्त सुकृत परवाना[१] पावै, पहुँचै जाय करार ॥ १ ॥
अगम पंथ की खेड़ि[२] यह, बूझै बिरला कोइ ।
सत साहिब सामरथ हहिँ, दरिया सबद बिलोइ[३] ॥ २ ॥
सोभा अगम अपार, हंस बंस सुख पावहीँ ।
कोइ ज्ञानी करै बिचार, प्रेम तत्तु जा के बसै ॥ ३ ॥
एकै सोँ अनंत भौ, फूटि डारि बिस्तार ।
अंतहूँ फिरि एक है, ताहि खोजु निजु सार ॥ ४ ॥

॥ परिचय ॥

अमी तत्तु अमृत पियै, देखहु सुरति लगाय ।
कहत सुनत नहिँ बनि परै, जो गति काहु लखाय ॥ १ ॥
सुधा अग्र परिमल झरै, छिरकहिँ बहुत सुढारि ।
दया दरस दीदार मेँ, मिटा कलपना झारि ॥ २ ॥
ढेवाहा[४] के मिलन सोँ, नैन भया खुसहाल ।
दिल मन मस्त मतवल हुआ, गूँगा गहिर रसाल[५] ॥ ३ ॥
निकट जाय जमराज नहिँ, सिर धुनि जम पछिताय ।
बुन्द सिन्ध मेँ मिलि रहा, कवन सके बिलगाय ॥ ४ ॥

(१) एक पाठ मेँ "परवाना" की जगह "का बीड़ा" है। (२) समाज। (३) मथो। (४) दरिया पंथियों के मूल मंत्र और इष्ट का नाम। (५) बोलनेवाला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ सूरमा ॥

सूरा सोई सराहिये, जो जूझै दल मन खोल।
कायर कादर बीचलै[1], मिला न सबद अमोल॥

॥ उपदेश ॥

काम क्रोध मद लोभ तज, गरब गरूरी झारि।
बिमल प्रेम मनि बारि के, राखु दृष्टि उंजियारि॥

॥ साच ॥

जहाँ साँच तहँ आपु हहिँ, निसि दिन होहिँ सहाय।
पल पल मनहिँ बिलोइये, मीठा मोल बिकाय॥

॥ दया ॥

जौँ लगि दया न ऊपजै, सम जुग जाहिँ अनंत।
तौँ लगि भगति न प्रेम पद, सुकृत सोक बिनु कंत॥

॥ मन ॥

कह दारया मन कैद करु, जो चाहो सत नाम।
करम काटि नर निजपुर, जाय बसै निजु धाम॥ १॥
मन के जीते जीतिया, मन हारे भौ हानि।
मनहिँ बिलोय ज्ञान करि मथनी, तब सुख उपजै जानि॥ २॥

॥ मान ॥

मन की ममता काल है, करम करावै जानि।
गरब मिलायो गरद में, रावन की भइ हानि॥

॥ कामिनी ॥

जो जिव फंदे नारि से, सो नहिँ बंस हमार।
बंस राखि नारी जो त्यागै, सो उतरै भव पार॥

॥ पंडित ॥

पंडित पढ़ि जिनि भूलहू, खोजहु मुक्ति कै भेव।
सास्तर गीता ज्ञान बिचारहु, करहु जमन[2] कै सेव॥ १॥

---

(१) फिसल जाय, पलट जाय। (२) जम जो गिनती में चौदह हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तब तोहिँ जानौं पंडिता, मुक्ती कहि देहु आय।
छप[1] लोक की बात कहु, तब मोर मन पतियाय ॥ २ ॥

॥ मिश्रित ॥

है मगु साफ बराबरे, मंदा लोचन माहिँ।
कवन दोष मगु भान कहँ, आपै सूझत नाहिँ ॥ १ ॥
पहिले गुड़ सक्कर हुआ, चीनी मिसरी कीन्ह।
मिसरी से कन्दा भया, यही सुहागिनि चीन्ह ॥ २ ॥
पाँच तत्त की कोठरी, ता में जाल जँजाल।
जीव तहाँ बासा करै, निपट नगीचे काल ॥ ३ ॥
दरिया दिल दरियाव है, अगम अपार बेअंत।
सब महँ तुम तुम में सभे, जानि मरम कोइ संत ॥ ४ ॥
बूड़े भेख अलेख स्वाँग धरि, काल बली धरि खाय।
बाचे सो जेहिँ भर्म नहिँ, सतगुरु भये सहाय ॥ ५ ॥
जंगम जोगी सेवड़ा, पड़े काल के हाथ।
कह दरिया सोइ बाचिहै, (जो) सत्त नाम के साथ ॥ ६ ॥

(१) "छप" अर्थात् गुप्त या छिपा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

दरिया साहिब (मारवाड़ वाले)

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जीवन समय—सम्वत १७३२ और १८४४ के दर्मियान। जन्म स्थान—जैतारन गाँव, मारवाड़। सतसंग स्थान—मौज़ा रैन परगना मेढ़ता। जाति—मुसलमान धुनियाँ। गुरू—प्रेमजी बीकानेरी।

इन के पिता जब यह सात बरस के थे मर गये जिस से यह अपने नाना के घर रैन गाँव में आकर रहे। इन्होंने महाराज बखतसिंहजी अपने देश के राजा को अपने गुरुमुख चेले सुखरामदास लोहार के द्वारा एक असाध रोग छुड़ा कर मंत्र-उपदेश किया।

॥ गुरुदेव ॥

दरिया सतगुरु भेँटिया, जा दिन जन्म सनाथ।
स्रवना सबद सुनाइ के, मस्तक दीन्हा हाथ॥ १॥
दरिया सतगुरु सबद की, लागी चोट सुठौर।
चंचल सोँ निस्चल भया, मिटि गइ मन की दौड़॥ २॥
डूबत रहा भवसिंध में, लोभ मोह की धार।
दरिया गुरु तैरू[1] मिला, कर दिया पैले पार॥ ३॥
जन दरिया सतगुरु मिला, कोई पुरुबले पुन्न।
जड़ु पलट चेतन किया, आनि मिलाया सुन्न॥ ४॥
दरिया गुरु किरपा करी, सबद लगाया एक।
लागतही चेतन भया, नेतर खुला अनेक॥ ५॥
जैसे सतगुरु तुम करी, मुझ से कछू न होय।
बिष भाँड़े बिष काढ़ करि, दिया अमी रस मोय॥ ६॥
गुरु आये घन गरज करि, अंतर कृपा उपाय।
तपता से सीतल किया, सोता लिया जगाय॥ ७॥
गुरु आये घन गरज करि, सबद किया परकास।
बीज पड़ा था भूमि में, भई फूल फल आस॥ ८॥

(१) तैराक।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह दरिया की बीनती, तुम सेती महराज।
तुम भृंगी मैं कीट हूँ, मेरी तुम को लाज ॥ ९ ॥
सतगुरु सा दाता नहीं, नहिं नाम सरीखा[1] देव।
सिष सुमिरन साचा करै, हो जाय अलख अभेव ॥१०॥
भवजल बहता जात था, संसय मोह की बाढ़।
दरिया मोहिं गुरु कृपा करि, पकड़ बाँह लिया काढ़ ॥११॥

॥ नाम ॥

दरिया सूरज ऊगिया, चहुँ दिसि भया उजास।
नाम प्रकासै देँह में, (तौ) सकल भरम का नास ॥ १ ॥
दरिया नर तन पाय करि, कीया चाहै काज।
राव रंग दोनों तरैं, जो बैठे नाम जहाज ॥ २ ॥
लोह पलट कंचन भया, करि पारस को संग।
दरिया परसै नाम को, सहजहिँ पलटै अंग ॥ ३ ॥
दरिया नाके नाम के, बिरला आवै कोय।
जो आवै तो परम पद, आवा गवन न होय ॥ ४ ॥
दरिया परछे[2] नाम के, दूजा दिया न जाय।
तन मन आतम वार करि, राखीजै उर माँय ॥ ५ ॥
दरिया सतगुरु सबद ले, करै नाम संजोग।
ज्ञान खुलै अरबल[3] बढ़ै, देँही रहै निरोग ॥ ६ ॥
दरिया अमल[4] है आसुरी, पियै होय सैतान।
नाम रसायन जो पियै, सदा छाक[5] गलतान ॥ ७ ॥

॥ सुमिरन ॥

नाम भजै गुरु सबद ले, तौ पलटै मन देँह।
दरिया छाना[6] क्यों रहै, भू पर बूठा[7] मेँह ॥ १ ॥

(१) बराबर। (२) बदले। (३) उमर। (४) नशा। (५) मस्त। (६) छप्पर। (७) बरसा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दरिया नाम है निरमला, पूरन ब्रह्म अगाध।
कहे सुने सुख ना लहै, सुमिरे पावे स्वाद ॥ २ ॥
दरिया सुमिरै नाम को, दूजी आस निवारि।
एक आस लागा रहै, तौ कधी न आवै हारि ॥ ३ ॥
दरिया सुमिरै नाम को, आतम को आधार।
काया काँची काँच सी, कंचन होत न बार ॥ ४ ॥
जो काया कंचन भई, रतनौं जड़िया चाम।
दरिया कहै किस काम का, जो मुख नाहीँ नाम ॥ ५ ॥

॥ बिरह ॥

दरिया हरि किरपा करी, बिरहा दिया पठाय।
यह बिरहा मेरे साध को, सोता लिया जगाय ॥ १ ॥
बिरह बियापी देँह में, किया निरंतर बास।
तालाबेली जीव में, सिसके साँस उसाँस ॥ २ ॥
दरिया बिरही साध का, तन पीला मन सूख।
रैन न आवै नीँदड़ी, दिवस न लागै भूख ॥ ३ ॥
बिरहिन पिउ के कारने, ढूँढ़न बनखँड जाय।
निसि बीती पिउ ना मिला, दरद रहा लिपटाय ॥ ४ ॥

॥ साध ॥

दरिया लच्छन साध का, क्या गिरही क्या भेष।
निहकपटी निरसंक रहि, बाहर भीतर एक ॥ १ ॥
सत्त सबद सत गुरुमुखी, मत गजंद[1] मुख दंत।
यह तो तोड़ै पोल गढ़, वह तोड़ै करम अनंत ॥ २ ॥
दाँत रहै हस्ती बिना, (तो) पोल न टूटै कोय।
कै कर धारै कामिनी, कै खेलाराँ[2] होय ॥ ३ ॥

(१) हाथी। (२) खिलौना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साध कह्यो भगवंत कह्यो, कहै ग्रन्थ और बेद।
दरिया लहै न गुरु बिना, तत्त नाम का भेद॥ ४॥
मतबादी जानै नहीँ, ततबादी की बात।
सूरज ऊगा उल्लुवा, गिनै अँधारी रात॥ ५॥
साधू जल का एक अँग, बरतै सहज सुभाव।
ऊँची दिसा न संचरै, निवन[१] जहाँ ढलकाव॥ ६॥
मच्छी पंछी साध का, दरिया मारग नाहिँ।
अपनी इच्छा से चलैँ, हुकम धनी के माहिँ॥ ७॥
दरिया संगत साध की, सहजै पलटै अंग।
जैसे संग मजीठ के, कपड़ा होय सुरंग॥ ८॥
जन दरिया अँग साध का, सीतल बचन सरीर।
निर्मल दसा कमोदिनी, मिले मिटावै पीर॥ ९॥

॥ सतसंग ॥

दरिया छुरी कसाब[२] की, पारस परसै आय।
लोह पलट कंचन भया, आमिष[३] भखा न जाय॥ १॥
लोह काला भीतर कठिन, पारस परसै सोय।
उर नरमी अति निरमला, बाहर पीला होय॥ २॥
पारस परसा जानिये, जो पलटै अँग अंग।
अंग अंग पलटै नहीँ, तौ है झूठा संग॥ ३॥

॥ सूरमा ॥

इष्टी स्वाँगी बहु मिले, हिरसी मिले अनंत।
दरिया ऐसा ना मिला, नाम रता कोइ संत॥ १॥
दरिया सूरा गुरमुखी, सहै सबद का घाव।
लागत ही सुधि बीसरै, भूलै आन सुभाव॥ २॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

(१) नीचा। (२) कसाई। (३) माँस।

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सबहि कटक[1] सूरा नहीँ, कटक माँहि कोइ सूर।
दरिया पड़ै पतंग ज्योँ, जब बाजै रन तूर॥ ३॥

पड़ै पतंगा अगिन मेँ, देँह की नाहिँ सँभाल।
दरिया सिष सतगुरु मिलै, तौ हो जाय निहाल॥ ४॥

दरिया खेत बुहारिया[2], चढ़ा दई की गोद।
कायर काँपै खड़बड़ै, सूरा के मन मोद॥ ५॥

सूर बीर की सभा मेँ, कायर बैठे आय।
सूरातन आवै नहीँ, कोटि भाँति समुझाय॥ ६॥

सूर न जानै कायरी, सूरातन से हेत।
पुरजा पुरजा ह्वै पड़ै, तहू न छाड़ै खेत॥ ७॥

सूरा के सिर साम[3] है, साधोँ के सिर राम।
दूजी दिस ताकैँ नहीँ, पड़ै जो करड़ा काम॥ ८॥

सूर चढ़ै संग्राम को, मन में संक न कोय।
आपा अरपै राम को, होनी होय सो होय॥ ९॥

दरिया सो सूरा नहीँ, जिन देँह करी चकचूर।
मन को जीति खड़ा रहै, मैँ बलिहारी सूर॥ १०॥

॥ भेद ॥

जन दरिया हिरदा बिचे, हुआ ज्ञान परकास।
हौद भरा जहँ प्रेम का, तहँ लेत हिलोरा दास॥ १॥

दरिया चढ़िया गगन को, मेरु उलंघा[4] डंड।
सुख उपजा साईँ मिला, भेँटा ब्रह्म अखंड॥ २॥

दरिया मेरु उलंघि करि, पहुँचा त्रिकुटी संध।
दुख भाजा सुख ऊपजा, मिटा भर्म का धुंध॥ ३॥

(१) फ़ौज। (२) साफ़ कर डाला—दूसरे पाठ में "जुहारिया" है जिस के अर्थ पुकारने या ललकारने के होते हैँ। (३) हथियार का नाम। (४) लाँघ गया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनंतहि चंदा ऊगिया, सूरज कोटि प्रकास।
बिन बादल बरषा घनी, छह रितु बारह मास ॥ ४ ॥
दरिया सूरज ऊगिया, सब भ्रम गया बिलाय।
उर में गंगा परगटी, सरवर काहे जाय ॥ ५ ॥
नौबत बाजै गगन में, बिन बादल घन गाज।
महल बिराजैं परम गुरु, दरिया के महराज ॥ ६ ॥
मन मेरू[1] से बावड़ै[2], त्रिकुटी लग ओंकार।
जन दरिया इन के परे, ररंकार निरधार ॥ ७ ॥
ररंकार धुन हौद में, गरक[3] भया कोइ दास।
जन दरिया ब्यापै नहीं, नींद भूख और प्यास ॥ ८ ॥
दरिया त्रिकुटी हद्द लग, कोइ पहुँचै संत सयान।
आगे अनहद ब्रह्म है, निराधार निरबान ॥ ९ ॥
दरिया अनहद अगिन का, अनुभव धूँवा जान।
दूरा सेती देखिये, परसे होय पिछान ॥ १० ॥
अगम दरीचा अगम घर, जहँ कोइ रूप न रेख।
जहँ दरिया दुबिधा नहीं, स्वामी सेवक एक ॥ ॥ ११ ॥
पाँच तत्त गुन तीन से, आतम भया उदास।
सरगुन निरगुन से मिला, चौथे पद में बास ॥ १२ ॥
मन बुधि चित पहुँचै नहीं, सबद[4] सकै नहिं जाय।
दरिया धन वे साधवा, जहाँ रहे लौ लाय ॥ १३ ॥

(१) पहाड़ अर्थात त्रिकुटी जिस के नीचे तक मन की गम है परन्तु ओंकार शब्द उस के परे से आता है। (२) लौट आवै। (३) डूब गया। (४) अनहद शब्द ब्रह्मांड में होता है चौथे लोक या निर्मल चेतन्य देश में जो उस के परे है सत्य शब्द गाजता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ पारख ॥

दरिया चिंतामनि रतन, धर्‌यो स्वान पै जाय।
स्वान सूँघि कानैं[१] भया, वह टूका ही चाय ॥ १ ॥
हीरा लेकर जौहरी, गया गँवारै देस।
देखा जिन कंकर कहा, भीतर परख न लेस ॥ २ ॥
पारख आइ चेतन[२] भया, मन दे लीना मोल।
गाँठ बाँध भीतर धसा, मिट गइ डावाँडोल ॥ ३ ॥

॥ जाग्रत ॥

दरिया सोता सकल जग, जागत नाहीँ कोय।
जागे मेँ फिर जागना, जागा कहिये सोय ॥ १ ॥
साध जगावै जीव को, मत[३] कोइ उट्ठै जाग।
जागे फिर सोवैं नहीँ, जन दरिया बड़ भाग ॥ २ ॥
माया मुख जागै सबै, सो सूता करि जान।
दरिया जागै ब्रह्म दिस, सो जागा परमान ॥ ३ ॥

॥ कपटी ॥

कबहुक भरिया समुँद सा, कबहुक नाहीँ छाँट[४]।
जन दरिया इत उत रता, ते कहिये किरकाँट[५] ॥ १ ॥
किरकाँटा किस काम का, पलट करै बहु रंग।
जन दरिया हंसा भला, जद तद एकै रंग ॥ २ ॥
दरिया बगुला ऊजला, उज्जल ही है हंस।
ये सरवर मोती चुगैं, वा के मुख मेँ मंस ॥ ३ ॥
बाहर से उज्जल दसा, भीतर मैला अंग।
ता सेती कौवा भला, तन मन एकहि रंग ॥ ४ ॥
सीखत ज्ञानी ज्ञान गम, करै ब्रह्म की बात।
दरिया बाहर चाँदना, भीतर काली रात ॥ ५ ॥

---

(१) किनारे। (२) पहिचाना। (३) कदाचित। (४) छींटा। (५) गिरगिट।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ उपदेश ॥

जन दरिया उपदेस दे, जा के भीतर चाय।
नातर गैला[1] जगत से, बकि बकि मरैं बलाय ॥ १ ॥
बिरही प्रेमी मोम-दिल, जन दरिया निहकाम।
आसिक दिल दीदार का, जा से कहिये राम ॥ २ ॥
दरिया गैला जगत से, समझ औ मुख से बोल।
नाम रतन की गाँठड़ी, गाहक बिन मत खोल ॥ ३ ॥
दरिया गैला जगत को, क्या कीजै सुलझाय।
सुलझाया सुलझै नहीँ, फिर सुलझ सुलझ उलझाय॥ ४ ॥
दरिया सौ अंधा बिचै, एक सुझाको जाय।
वह तो बात देखी कहै, वा के नाहीँ दाय[2] ॥ ५ ॥
कंचन कंचन ही सदा, काच काच सो काच।
दरिया झूठ सो झूठ है, साच साच सो साच ॥ ६ ॥
साध पुरुष देखी कहैँ, सुनी कहैँ नहिँ कोय।
कानोँ सुनी सो झूठ सब, देखी साची होय ॥ ७ ॥

दूलनदासजी

यह परम भक्त जगजीवन साहिब के गुरुमुख शिष्य थे इस लिये इन का जन्म समय उन के जन्म के अनुमान बीस पचीस बरस पीछे अर्थात अट्ठारहवेँ शतक के मध्य में मान लेना चाहिये। मिश्र-बन्धु बिनोद में इन का ग्रंथ-रचना काल सम्वत १८७० लिखा है परंतु सत्तनामियोँ के अनुसार इस के पहिले ठहरेगा। यह जाति के सोमवंशी छत्री थे, मौजा समेसी जिला लखनऊ में जन्म लिया और मौजा धर्म्मे जिला रायबरैली में रह कर सतसंग कराया; सदा गृहस्थ आश्रम ही में रहे।

॥ गुरु महिमा ॥

गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु हैँ, गुरु संकर गुरु साध।
दूलन गुरु गोबिन्द भजु, गुरुमत अगम अगाध ॥ १ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

(१) गँवार। (२) पसंद।

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पति सनमुख सो पतिब्रता, रन सनमुख सो सूर।
दूलन सत सनमुख सदा, गुरुमुख गनी[1] सो पूर॥ २॥
दूलन दुइ कर जोरि कै, याचै सतगुरु दानि।
राखहु सुरति हमारि दृढ़ चरन कँवल लपटानि॥ ३॥
श्रीसतगुरु मुख चंद्र तेँ, सबद सुधा झरि लाग।
हृदय सरोवर राखु भरि, दूलन जागे भागि॥ ४॥
दूलन गुरु तेँ बिषै बस, कपट करहिं जे लोग।
निर्फल तिन की सेव है, निर्फल तिन का जोग॥ ५॥

॥ नाम महिमा ॥

गावै सुरति सुन्दरी, बैठी सत अस्थान।
जन दूलन मन मोहिनो, नाम सुरंगी तान॥ १॥
दूलन यहि जग जनमि कै, हर दम रटना नाम।
केवल नाम सनेह बिनु, जन्म समूह[2] हराम॥ २॥
स्वास पलक माँ नाम भजु, बृथा स्वास जनि खोउ।
दूलन ऐसी स्वास को, आवन होउ न होउ॥ ३॥
स्वास पलक माँ जातु है, पलकहिँ माँ फिरि आउ।
दूलन ऐसी स्वास से, सुमिरि सुमिरि रट लाउ॥ ४॥
रसना रटि जेहि लागिगे, चाखि भयो मस्तान।
दूलन पायो परम पद, निरखि भयो निर्बान॥ ५॥
सुनत चिकार पिपील की, ताहि रटहु मन माहिँ।
दुलनदास बिस्वास भजु, साहिब बहिरा नाहिँ॥ ६॥
चितवन नीची ऊँच मन, नामहिँ जिकिर लगाय।
दूलन सूझै परम पद, अंधकार मिटि जाय॥ ७॥

(१) धनी, बेपरवाह। (२) समस्त।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ताति बाउ लागै नहीँ, आठौ पहर अनंद ।
दूलन नाम सनेह तेँ, दिन दिन दसा दुचंद ॥ ८ ॥
दूलन केवल नाम धुनि, हृदय निरंतर ठानु ।
लागत लागत लागिहै, जानत जानत जानु ॥ ९ ॥
दूलन केवल नाम लिय, तिन भेँटेउ जगदीस ।
तन मन छाकेउ दरस रस, थाकेउ पाँच पचीस ॥ १० ॥
सीतल हृदय सुचित्त है, तजि कुतर्क कुबिचार ।
दूलन चरनन परि रहै, नाम कि करत पुकार ॥ ११ ॥
गुरू बचन बिसरै नहीँ, कबहुँ न टूटै डोरि ।
पियत रहौ सहजै दुलन, नाम रसायन घोरि ॥ १२ ॥
दुलन नाम पारस परसि, भयो लोह तेँ सोन ।
कुन्दन होइ कि रेसमी, बहुरि न लोहा होन ॥ १३ ॥
दुलन भरोसे नाम के, तन तकिया धरि धीर ।
रहै गरीब अतीम[1] होइ, तिन काँ कही फकीर ॥ १४ ॥
अंध कूप संसार तेँ, सूरति आनहु फेरि ।
चरन सरन बैठारि कै, दुलन नाम रहु टेरि ॥ १५ ॥
चारा पील पिपील को, जो पहुँचावत रोज ।
दूलन ऐसे नाम की, कीन्ह चाहिये खोज ॥ १६ ॥
यहि कलि काल कुचाल तकि, आयो भागि डराइ ।
दूलन चरनन परि रहे, नाम की रटनि लगाइ ॥ १७ ॥
दुलन नाम रस चाखि सोइ, पुष्ट पुरुष परबीन ।
जिन के नाम हृदय नहीँ, भये ते हिजरा हीन ॥ १८ ॥
मरने की डर छोड़ि कै, नाम भजौ मन माहिँ ।
दूलन यहि जग जनमि कै, कोऊ अमर है नाहिँ ॥ १९ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Varanasi.
(१) जिसके मा बाप मर गये हैं ।

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नामी लोग सबै बड़े, काको कहिये छोट।
सब हित दूलनदास जिन, लीन्ह नाम की ओट ॥ २०॥
दूलन चरनन सीस दै, नाम रटहु मन माँह।
सदा सर्बदा जनम भरि, जा तेँ खैर सलाह ॥ २१॥
नाम पुकारत राम जी, लागहिँ भक्त गुहारि।
दूलन नाम सनेह की, गहि रहु डोरि सँभारि ॥ २२॥
राम नाम दुइ अच्छरै, रटै निरंतर कोइ।
दूलन दीपक बरि उठै, मन परतीत जो होइ ॥ २३॥

॥ शब्द महिमा ॥

सूर चंद नहिँ रैन दिन, नहिँ तहँ साँझ बिहान।
उठत सबद धुनि सुन्य माँ, जन दूलन अस्थान ॥ १ ॥
जगजीवन के चरन मन, जन दूलन आधार।
निसु दिन बाजै बाँसुरी, सत्य सबद झनकार ॥ २ ॥
चरचा बाद बिबाद की, संगति दीन्हेउ त्यागि।
दूलन माते अधर धुनि, भक्ति खुमारी[१] लागि ॥ ३ ॥
कोउ सुनै राग रु रागिनी, कोउ सुनै कथा पुरान।
जन दूलन अब का सुनै, जिन सुनी मुरलिया तान॥ ४ ॥
सबदै नानक नामदे, सबदै दास कबीर।
सबदै दूलन जगजिवन, सबदै गुरु अरु पीर ॥ ५ ॥

॥ चितावनी ॥

दूलन यह परिवार सब, नदी नाव संजोग।
उतरि परे जहँ तहँ चले, सबै बटाऊ लोग ॥ १ ॥
दूलन यहि जग आइ कै, का को रहो दिमाक[२]।
चंद रोज को जीवना, आखिर होना खाक ॥ २ ॥

(१) नशा। (२) अहंकार।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दूलन काया कबर है, कहँ लगि करौं बखान।
जीवत मनुआँ मरि रहै, फिरि नहिँ कबर समान[1] ॥ ३ ॥

॥ प्रेम ॥

दूलन सत मनि छबि लह्यौ, निरखि चरन धरि सीस।
लागि प्रेम रस मस्त है, थाके पाँच पचीस ॥ १ ॥
दुलन कृपा तेँ पाइये, भक्ति न हाँसी ख्याल।
काहू पाई सहज हीँ, कोउ ढूँढ़त फिरत बिहाल ॥ २ ॥
दूलन बिरवा प्रेम को, जामेउ जेहि घट माहिँ।
पाँच पचीसौ थकित भे, तेहि तरवर की छाहिँ ॥ ३ ॥
जग्य दान तप तीर्थ ब्रत, धर्म जे दूलनदास।
भक्ति-आसरित तप सबै, भक्ति न केहु को आस ॥ ४ ॥
दुलन तिरथ तप दान तेँ, और पाप मिटि जाइ।
भक्त-द्रोह अघ ना मिटै, करै जे कोटि उपाइ ॥ ५ ॥
धृग तन धृग मन धृग जनम, धृग जीवन जग माहिँ।
दूलन प्रीति लगाय जिन्ह, ओर निबाही नाहिँ ॥ ६ ॥
समरथ दूलनदास के, आस तोष[2] तुम राम।
तुम्हरे चरनन सीस दै, रटौँ तुम्हारो नाम ॥ ७ ॥

॥ धीरज ॥

दूलन सतगुरु मत कहै, धीरज बिना न ज्ञान।
निरफल जोग सँतोष बिन, कहौँ सबद परमान ॥ १ ॥
दूलन धीरज खंभ कहँ, जिकिरि बड़ेरा लाइ।
सुरत डोरी पोढ़ि करि, पाँच पचीस झुलाइ ॥ २ ॥

॥ बिनय ॥

साईँ तेरो सरन हौँ, अब की मोहिँ निवाज।
दूलन के प्रभु राखिये, यहि बाना की लाज ॥ १ ॥

(१) फिर तन रूपी कबर में न पैठैगा अर्थात आवागमन से छूट जायगा।
(२) आनंद।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
इत उत की लज्जा तुम्हैं, रामराय सिर मौर।
दूलन चरनन लगि रहे, राखि भरोसा तोर ॥ २ ॥
चहिये सो करिहै, सरम साईं तेरे दस्त।
बाँध्यो चरन सनेह मन, दुलनदास रस मस्त ॥ ३ ॥
तुला रासि तीनिउँ सदा, जा को मन इक ठौर[१]।
राम पियारे भक्त सोइ, दूलन के सिर मौर ॥ ४ ॥
दूलन एक गरीब के, हरि से हितू न और।
ज्यों जहाज के काग को, सूझै और न ठौर ॥ ५ ॥
त्रिभुवन करता रामजी, दास तुम्हार कहाइ।
तुम्हैं छाड़ि दूलन कहौ, केहि काँ याँचन जाइ ॥ ६ ॥
राम नाम दीपक सिखा, दूलन दिल ठहराय।
करम बिचारे सलभ[२] से, जरहिँ उड़ाय उड़ाय ॥ ७ ॥

॥ उपदेश ॥

बंधन सकल छुड़ाइ करि, चित चरनन तेँ बाँधु।
दुलनदास बिस्वास करि, साईं काँ औराधु ॥ १ ॥
ज्ञानी जानहिँ ज्ञान बिधि, मैँ बालक अज्ञान।
दूलन भजु बिस्वास मन, धुरपुर बाजु निसान ॥ २ ॥
दूलन चरनन लागि रहु, नाम की करत पुकार।
भक्ति सुधारस पेट भरु, का दहुँ लिखा लिलार ॥ ३ ॥
जग रहु जग तेँ अलग रहु, जोग जुगति की रीति।
दूलन हिरदे नाम तेँ, लाइ रहौ दृढ़ प्रीति ॥ ४ ॥

---

(१) जिस का मन एक ठौर अर्थात स्थिर है उस के तराजू की तीनों डोरियाँ सदा एक सम और तथी हैँ, भाव, तिरगुन का बेग नहीँ ब्यापता। (२) पतंगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ साधु महिमा ॥

दुलन साधु सब एक हैं, बाग फूल सम तूल[1]।
कोइ कुदरती सुबास है, और फूल के फूल ॥ १ ॥
जा दिन संत सताइया, ता छिन उलटि खलक्क[2]।
छत्र खसै धरनी धसै, तीनिउँ लोक गरक्क[3] ॥ २ ॥

॥ फुटकर ॥

भाग बड़े यहि जक्त भा, जेहि के मन बैराग।
बिषय भोग परिहरि दुलन, चरन कमल चित लाग ॥ १ ॥
दूलन पीतम जेहि चहैं, कही सुहागिल ताहि।
आपन आपन भाग है, साझा काहु क नाहिं ॥ २ ॥
सती अगिन की आँच सहि, लोह आँच सहि सूर।
दूलन सत आँचहि सहै, राम भक्त सो पूर ॥ ३ ॥
दूलन चोला चाम को, आयो पहिरि जहान।
इहाँ कमाई बसि भयो, सहना औ सुलतान ॥ ४ ॥
दूलन छोटे वै बड़े, मुसलमान का हिन्दु।
भूखे देवैं भौरियाँ, सेवैं गुरु गोबिन्दु ॥ ५ ॥
काल कर्म की गमि नहीं, नहिं पहुँचै भ्रम बान।
दूलन चरन सरन रहु, छेम कुसल अस्थान ॥ ६ ॥
दूलन यह तन जक्त भा, मन सेवै जगदीस।
जब देखो तबही पर्यो, चरनन दीन्हे सीस ॥ ७ ॥
कतहुँ प्रगट नैनन निकट, कतहूँ दूरि छिपानि।
दूलन दीनदयाल ज्यों, मालव मारू पानि[4] ॥ ८ ॥

———o:*:o———

(१) तुल्य=बराबर। (२) खलक़=सृष्टि। (३) डूब जाना। (४) संस्कृत में "मालव" मालवा देश को कहते हैं जहाँ पानी की बहुतायत है, और "मारू" राड़वार देश का नाम है जहाँ की भूमि बलुई (मरु) है और पानी का टोटा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

बुल्ला साहिब

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

——:※:——

जीवन-समय—सम्बत १७५० और १८२५ के दर्मियान। जन्म स्थान—ज़िला ग़ाज़ीपुर। सतसंग स्थान—भुरकुड़ा गाँव ज़िला ग़ाज़ीपुर। जाति—कुनबी। गुरू—यारी साहिब।

घरऊ नाम इनका बुलाकीराम था और पहिले गुलाल साहिब की सेवा में हरवाहे का काम करते थे। फिर गुलाल साहिब इनका चमत्कार देख कर इन के चेले हुए।

[देखो जीवन-चरित्र इन की बानी के आदि में]

॥ बेहद ॥

अछै रंग में रंगिया, दीन्ह्यो प्रान अकोल[1]।
उनमुनि मुद्रा भस्म धरि, बोलत अमृत बोल ॥ १ ॥
बोलत डोलत हँसि खेलत, आपुहिं करत कलोल।
अरज करौं बिनु दामहीं, बुल्लहिं लीजे मोल ॥ २ ॥
बिना नीर बिनु मालिहीं, बिनु सींचे रँग होय।
बिनु नैनन तहँ दरसनो, अस अचरज इक सोय ॥ ३ ॥
ना वह टूटै ना वह फूटै, ना कबहीं कुम्हिलाय।
सर्ब कला गुन आगरो[2], मोपै बरनि न जाय ॥ ४ ॥

॥ उपदेश ॥

आठ पहर चौंसठ घरी, जन बुल्ला धरु ध्यान।
नहिं जानो कौनी घरी, आइ मिलैं भगवान ॥ १ ॥
आठ पहर चौंसठ घरी, भरो पियाला प्रेम।
बुल्ला कहै बिचारि कै, इहै हमारो नेम ॥ २ ॥
जग आये जग जागिये, पगिये हरि के नाम।
बुल्ला कहै बिचारि कै, छोड़ि देहु तन धाम ॥ ३ ॥

---

(१) घूस, यहाँ न्योछावर का भाव है। (२) श्रेष्ठ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

केशवदासजी

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जीवन-समय इन महात्मा का सम्बत १७५० और १८२५ के दर्मियान पाया जाता है। यह जाति के बनिया और यारी साहिब के चेले थे अर्थात उसी गुरु घराने के थे जिस में पलटू साहिब सरीखे संत प्रगट हुए।

सूरति समानी ब्रह्म में, दुबिधा रह्यो न कोय।
केसो संभलि खेत मे, परै सो संभलि होय॥ १॥
सात दीप नौ खंड के, ऊपर अगम अवास।
सबद गुरू केसो भजै, सो जन पावै बास॥ २॥
आस लगैं बासा मिलै, जैसी जा की आस।
इक आसा जग बास है, इक आसा हरि पास॥ ३॥
आसा मनसा सब थकी, मन निज मनहिँ मिलान।
ज्यौँ सरिता समुँदर मिली, मिटिगो आवन जान॥ ४॥
जेहि घर केसो नहिँ भजन, जीवन प्रान अधार।
सो घर जम का गेह है, अंत भये ते छार॥ ५॥
जगजीवन घट घट बसै, करम करावन सोय।
बिन सतगुरु केसो कहै, केहि बिधि दरसन होय॥ ६॥
सतगुरु मिल्यो तो का भयो, घट नहिँ प्रेम प्रतीत।
अंतर कोर न भीँजई, ज्यौँ पत्थल जल भीत॥ ७॥
केसो दुबिधा डारि दे, निर्भय आतम सेव।
प्रान पुरुष घट घट बसै, सब महँ सबद अभेव॥ ८॥
पंच तत्त गुन तीन के, पिंजर गढ़े अनंत।
मन पंछी सो एक है, पारब्रह्म को तंत॥ ९॥
एसो संत कोइ जानिहै, सत्त सबद सुनि लेह।
केसो हरि सोँ मिलि रहो, न्यौछावर करि देँह॥ १०॥
भजन भलो भगवान को, और भजन सब धंध।
तन सरवर मन हंस है, केसो पूरन चंद॥ ११॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

चरनदासजी

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
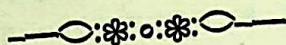
जीवन-समय—१७६० से १८३९ तक। जन्म स्थान—मौज़ा डेहरा, मेवात (राजपूताना)। सतसंग स्थान—दिल्ली (पंजाब)। जाति और आश्रम—दूसर बनिया, गृहस्थ। गुरू—शुकदेव मुनि।

इन का चरनदासी पंथ हिन्दुस्तान के बहुतेरे हिस्सों में फैला हुआ है। कहते हैं कि व्यास के पुत्र शुकदेव मुनि जिन्हें अमर बतलाते हैं इन्हें उन्नीस बरस की अवस्था में जंगल में मिले और शब्द मार्ग का उपदेश दिया। इन्होंने दिल्ली ही में चोला छोड़ा।

॥ गुरुदेव ॥

गुरु समान तिहुँ लोक में, और न दीखै कोय।
नाम लिये पातक नसैं, ध्यान किये हरि होय ॥ १ ॥
गुरु ही के परताप सूँ, मिटै जगत की ब्याध।
राग दोष दुख ना रहै, उपजै प्रेम अगाध ॥ २ ॥
गुरु के चरनन में धरो, चित बुधि मन हंकार।
जब कुछ आपा ना रहै, उतरै सबही भार ॥ ३ ॥
तुम दाता हम मंगता, स्री सुकदेव दयाल।
भक्ति दई ब्याधा गई, मेटे जग जंजाल ॥ ४ ॥
किसू काम के थे नहीं, कोई न कौड़ी देह।
गुरु सुकदेव कृपा करी, भई अमोलक देंह ॥ ५ ॥
ढूसर के बालक हुते, भक्ति बिना कंगाल।
गुरु सुकदेव कृपा करी, हरि धन किये निहाल ॥ ६ ॥
जा धन कूँ ठग ना लगै, धारी[1] सकै न लूट।
चोर चुराय सकै नहीँ, गाँठ गिरै नहिँ छूट ॥ ७ ॥
बलिहारी गुरु आपने, तन मन सदके[2] जाँव।
जीव ब्रह्म छिन में कियो, पाई भूली ठाँव ॥ ८ ॥

(१) धरकार जो लुटेरे होते हैं। (२) न्योछावर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जब सूँ गुरु किरपा करी, दरसन दीन्हे मोहिँ ।
रोम रोम में वै रमे, चरनदास नहिँ कोय ॥ ९ ॥
संतगुरु ऐसा सूरमा, करै सबद की चोट ।
मारै गोला प्रेम का, ढहै भरम का कोट ॥१०॥
मुख सेती बोलन थका, सुनै थका जो कान ।
पावन सूँ फिरबा थका, सतगुर मारा बान ॥ ११॥
मैं मिरगा[1] गुरु पारधी[2], सबद लगायो बान ।
चरनदास घायल गिरे, तन मन बीधे प्रान ॥१२॥
सतगुरु सबदी तेग[3] है, लागत दो करि देहि ।
पीठ फेरि कायर भजै, सूरा सनमुख लेहि ॥ १३॥
सतगुरु सबदी लागिया, नावक[4] का सा तीर ।
कसकत है निकसत नहीँ, होत प्रेम की पीर ॥ १४॥
सतगुरु सबदी बान है, अँग अँग डारे तोड़ ।
प्रेम खेत घायल गिरे, टाँका लगै न जोड़ ॥१५॥
सतगुरु के मारे मुए, बहुरि न उपजैँ आय ।
चौरासी बंधन छुटैँ, हरिपद पहुँचैँ जाय ॥ १६॥
गुरु के आगे जाय करि, बोलै साचे बोल ।
कछू कपट राखै नहीँ, अरज करै मन खोल ॥ १७॥
यह आपा तुम कूँ दिया, जित चाहौ तित राखि ।
चरनदास द्वारे परो, भावै झिड़कौ लाखि ॥ १८॥
हरि सेवा कृत सौ बरस, गुरु सेवा पल चार ।
तौ भी नहीँ बराबरी, बेदन कियो बिचार ॥ १९॥
हरि रूठैँ कुछ डर नहीँ, तू भी दे छुटकाय ।
गुरु को राखौ सीस पर, सब बिधि करैँ सहाय ॥ २०॥

(१) हिरन । (२) शिकारी । (३) तलवार । (४) गाँसी ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरू कहैं सो कीजिये, करैं सो कीजै नाहिं।
चरनदास की सीख सुन, यही राख मन माहिँ ॥ २१॥

॥ सुमिरन ॥

सकल सिरोमनि नाम है, सब धरमन के माहिँ।
अनन्य भक्त वह जानिये, सुमिरन भूलै नाहिँ ॥ १ ॥
मन ही मन में जाप करु, दरपन उज्जल होय।
दरसन होवै राम का, तिमिर जाय सब खोय ॥ २ ॥
करते अनहद ध्यान के, ब्रह्म रूप ह्वै जाय।
चरनदास यों कहत है, बाधा सब मिटि जाय ॥ ३ ॥
गगन मध्य जो पदुम है, बाजत अनहद तूर।
दल हजार को कँवल है, पहुँचै गुरुमत सूर ॥ ४ ॥

॥ अनहद ॥

जोग जुक्ति करि खोजि ले, सुरत निरत करि चीन्ह।
दस प्रकार अनहद बजै, होय जहाँ लयलीन ॥

॥ लव ॥

जग माहीँ न्यारे रहो, लगे रहो हरि ध्यान।
पृथवी पर देही रहै, परमेसुर में प्रान ॥

॥ विरह और प्रेम ॥

प्रेम बराबर जोग ना, प्रेम बराबर ज्ञान।
प्रेम भक्ति बिन साधिबो, सब ही थोथा ध्यान ॥ १ ॥
हिरदै माहीँ प्रेम जो, नैनों झलकै आय।
सोई छका हरि रस पगा, वा पग परसो धाय ॥ २ ॥
गद गद बानी कंठ में, आँसू टपकै नैन।
वह तो विरहिन राम की, तलफत है दिन रैन ॥ ३ ॥
हाय हाय हरि कब मिलैं, छाती फाटी जाय।
ऐसा दिन कब होयगा, दरसन करौं अघाय ॥ ४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पीव बिना तो जीवना, जग में भारी जान।
पिया मिलैं तो जीवना, नहीं तो छूटैं प्रान ॥ ५ ॥
मुख पियरो सूखे अधर[1], आँखैं खरी उदास।
आह जो निकसै दुख भरी, गहिरे लेत उसास[2] ॥ ६ ॥
वह बिरहिन बौरी भई, जानत ना कोइ भेद।
अगिन बरै हियरा जरै, भये कलेजे छेद ॥ ७ ॥
वा तन को बिरहा लगो, ज्यौं घुन लागो दार[3]।
दिन दिन पीरी होत है, पिया न बूझै सार ॥ ८ ॥
वै नहिँ बूझैं सार हो, बिरहिन कौन हवाल।
जब सुधि आवै लाल की, चुभत कलेजे भाल[4] ॥ ९ ॥
पीव चहौ कै मत चहौ, वह तौ पी की दास।
पिय के रँग राती रहै, जग सूँ होय उदास ॥ १०॥
पी पी करते दिन गया, रैनि गई पिय ध्यान।
बिरहिन के सहजै सधै, भक्ति जोग अरु ज्ञान ॥११॥
जाप करै तो पीव का, ध्यान करै तो पीव।
पिव बिरहिन का जीव है, जिव बिरहिन का पीव ॥ १२॥

॥ विनय ॥

सतगुरु से माँगूँ यही, मोहिँ गरीबी देहु।
दूर बड़प्पन कीजिये, नान्हा हीँ करि लेहु ॥ १ ॥
आदि पुरुष किरपा करौ, सब औगुन छुटि जाहिँ।
साध होन लच्छन मिलैँ, चरन कमल की छाँहिँ ॥ २ ॥
तुम्हरी सक्ति अपार है, लीला को नहिँ अंत।
चरनदास यौँ कहत है, ऐसे तुम भगवंत ॥ ३ ॥

(१) होंठ। (२) साँस। (३) दारु=लकड़ी। (४) गाँसी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुम्हरी कहा अस्तुति करूँ, मो पै कही न जाय।
इतनी सक्ति न जीभ को, महिमा कहै बनाय ॥ ४ ॥
किरपा करो अनाथ पर, तुम हो दीनानाथ।
हाथ जोड़ माँगूँ यही, मम सिर तुम्हरे हाथ ॥ ५ ॥
हिय हुलसौ आनँद भयो, रोम रोम भयो चैन।
भये पबित्तर कान ये, सुनि सुनि तुम्हरे बैन ॥ ६ ॥
गुरु ब्रह्मा गुरु बिस्नु, गुरू देवन के देवा।
सर्ब सिद्धि फल देव, गुरू तुम मुक्ति करेवा ॥ ७ ॥
गुरु केवट तुम होय, करो भवसागर पारी।
जीव ब्रह्म करि देत, हरो तुम ब्याधा सारी ॥ ८ ॥
आदि पुरुष परमात्मा, तुम्हैं नवाऊँ माथ।
चरनन पास निवास दे, कीजै मोहिँ सनाथ ॥ ९ ॥
तुम्हरी भक्ति न छोड़हूँ, तन मन सिर क्यों न जाव।
तुम साहिब मैं दास हूँ, भलो बनो है दाव ॥ १० ॥

॥ सार गहनी ॥

दूध मध्य ज्यों घीव है, मिहँदी माहीं रंग।
जतन बिना निकसै नहीं, चरनदास सो ढंग ॥ १ ॥
जो जानै या भेद कूँ, और करै परबेस।
सो अबिनासी होत है, छूटै सकल कलेस ॥ २ ॥
जग माहीं ऐसे रहो, ज्यों जिभ्या मुख माहिँ।
घीव घना भच्छन करै, तो भी चिकनी नाहिँ ॥ ३ ॥
ऐसा हो जो साध हो, लिये रहै बैराग।
चरन कमल मैं चित धरै, जग में रहै न पाग ॥ ४ ॥

॥ पतिव्रता ॥

पतिबरता वहि जानिये, आज्ञा करै न भंग।
पिय अपने के रँग रतै, और न सोहै ढंग ॥ १ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आज्ञाकारी पीव की, रहै पिया के संग।
तन मन सूँ सेवा करै, और न दूजो रंग॥ २॥
रंग होय तौ पीव को, आन पुरुष बिषरूप।
छाँह बुरी पर घरन की, अपनी भली जु धूप॥ ३॥
अपने घर का दुख भला, पर घर का सुख छार[1]।
ऐसे जानै कुल बधू, सो सतवंती[2] नार॥ ४॥
पति की ओर निहारिये, औरन सूँ क्या काम।
सबै देवता छोड़ि कै, जपिये हरि का नाम॥ ५॥
यह सिर नवै तो राम कूँ, नाहीं गिरियो टूट।
आन देव नहिँ परसिये, यह तन जावो छूट॥ ६॥
जब तू जानै पीव हीँ, वह अपनो करि लेहि।
परम धाम मेँ राखि करि, बाँह पकरि सुख देहि॥ ७॥
सतबादी सत सूँ रहो, सत हीँ मुख सूँ बोल।
एक ओर हरि नाम रख, एक ओर जग तोल॥ ८॥

॥ उपदेश॥

जग का कहा न मानिये, सतगुरु से ले बुद्धि।
ता कूँ हिये मेँ राखिये, करो सिताबी सुद्धि॥ १॥
अरसठ तीरथ तोहि बिषे, बाहर क्योँ भटकाय।
चरनदास योँ कहत है, उलटा ह्वै घट आय॥ २॥
भरमत भरमत आइया, पाई मानुष देँह।
ऐसो औसर फिर कहाँ, नाम सिताबी[3] लेह॥ ३॥
करै तपस्या नाम बिन, जोग जज्ञ अरु दान।
चरनदास योँ कहत है, सब ही थोथे जान॥ ४॥

(१) धूल, राख। (२) पतिव्रता। (३) जल्द।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिन को मन विरकत सदा, रहौ जहाँ चित होय।
घर बाहर दोउ एक सा, डारी दुबिधा खोय॥ ५॥
सतगुरु सरनै आय करि, कहा न मानै एक।
ते नर बहु दुख पाइ हैं, तिन कूँ सुख नहिं नेक॥ ६॥
आपै भजन करैं नहीं, औरै मने करैं।
चरनदास वै दुष्ट नर, भ्रम भ्रम नरक परैं॥ ७॥
औरन कूँ उपदेस करि, भजन करैं निष्काम।
चरनदास वै साध जन, पहुँचैं हरि के धाम॥ ८॥
भक्ति पदारथ उदय सूँ, होय सभी कल्यान।
पढ़ै सुनै सेवन करै, पावै पद निर्बान॥ ९॥
सब सूँ रखु निरबैरता, गहो दीनता ध्यान।
अंत मुक्ति पद पाइहौ, जग में होय न हानि॥ १०॥

॥ बैरागी की रहनी ॥

जग माहीं ऐसे रहौ, ज्यौं अम्बुज[१] सर[२] माहिं।
रहै नीर के आसरे, पै जल छूवत नाहिं॥ १॥
अब के चूके चूक है, फिर पछतावा होय।
जो तुम जक्त न छोड़िहौ, जन्म जायगो खोय॥ २॥

॥ साच ॥

मिटते सूँ मत प्रीति करि, रहते सूँ करि नेह।
झूठे कूँ तजि दीजिये, साचे में करि गेह[३]॥

॥ दया ॥

दुखी न काहू कूँ करै, दुख सुख निकट न जाय।
सम दृष्टी धीरज सदा, गुन सात्विक कूँ पाय॥ १॥
दया नम्रता दीनता, छिमा सील संतोष।
इन कूँ लै सुमिरन करै, निस्चै पावै मोख[४]॥ २॥

(१) कँवल (२) तालाब (३) घर (४) मुक्ति।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ काम ॥

तन मन जारै काम ही, चित करि डाँवाँडोल।
धरम सरम सब खोय के, रहै आप हिये खोल॥ १॥
नर नारी सब चेतियो, दीन्हो प्रगट दिखाय।
पर तिरिया पर पुरुस दोउ, भोग नरक को जाय॥ २॥

॥ क्रोध ॥

क्रोध महा चंडाल है, जानत है सब कोय।
जा के अँग बरनन करूँ, सुनियो सुरत समोय॥ १॥
जेहिं घट आवै धूम सूँ, करै बहुत ही ख्वार।
पत खोवै बुधि कूँ हनै, कहा पुरुस कहा नार॥ २॥

॥ लोभ ॥

लोभ नीच बर्नन करूँ, महा पाप की खानि।
मंत्री जा का झूठ है, बहुत अधर्मी जानि॥ १॥
तृस्ना जा की जोय[1] है, सो अंधा करि देय।
घटी बढ़ी सूझै नहीं, नहीं काल का भेय॥ २॥

॥ मोह ॥

मोह बड़ा दुख रूप है, ता कूँ मारि निकास।
प्रीति जगत की छोड़ि दै, तब होवै निर्बास॥ १॥
मोह बली सब सूँ अधिक, महिमा कही न जाय।
जा कूँ बाँध्यो जग सबै, छूटै ना बौराय॥ २॥

॥ मान ॥

अभिमानी चढ़ करि गिरे, गये बासना माहिं।
चौरासी भरमत भये, कबहीँ निकसैँ नाहिं॥ १॥
अभिमानी मीँजे गये, लूटि लिये धन बाम[2]।
निरअभिमानी ह्वै चले, पहुँचे हरि के धाम॥ २॥

(१) स्त्री। (२) स्त्री अर्थात् माया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चरनदास यों कहत है, सुनियो संत सुजान।
मुक्ति मूल आधीनता, नरक मूल अभिमान॥ ३॥
मन में लाइ बिचार कूँ, दीजै गर्ब निकार।
नान्हापन तब आइहै, छूटैं सकल बिकार॥ ४॥
पाँचो उतरैं भूत जब, होइहौ ब्रह्म अरूप।
आनँद पद को पाइहौ, जित है मुक्ति सरूप॥ ५॥

॥ निद्रा ॥

सोवन में नहिँ खोइये, जन्म पदारथ पाय।
चरन दास ह्वै जागिये, आलस सकल गँवाय॥ १॥
पहिले पहरे सब जगैं, दूजे भोगी मान।
तीजे पहरे चोर ही, चौथे जोगी जान॥ २॥
जागै ना पिछले पहर, करै न गुरुमत जाप।
मुँह फारे सोवत रहै, ता कूँ लागै पाप॥ ३॥
मरजादा की यह कही, क्या बिरकत परमान।
आठ पहर साठौं घरी, जागै हरि के ध्यान॥ ४॥
जो कोइ बिरही नाम के, तिन कूँ कैसी नींद।
सस्तर लागा नेह का, गया हिये को बींध॥ ५॥
सोये हैं संसार सूँ, जागे हरि की ओर।
नित कूँ इकरसही सदा, नहीँ साँझ नहिँ भोर॥ ६॥
उन कूँ नींद न आवई, राम मिलन की चीत।
सोवैं ना सुख सेज पै, तजि के हरि सा मीत॥ ७॥

॥ आशा ॥

ज्यौं किरपिन[1] बहु दाम हीँ, गाड़ि जिमीं के नीच।
सदा वाहि तकतै रहै, सुरति रहै ता बीच॥ १॥

---
(१) कंजूस।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तन छूटे हो सरप[१] ही, जा बैठे वा ठौर।
जहाँ आस तहँ बास है, कहूँ न भरमै और ॥ २ ॥

॥ अहार ॥

जो पावै सोई चरै, करै नहीँ पहिचान।
पीठ लदै हरि ना जपै, ता कूँ खर ही जान ॥ १ ॥
बहुता किये अहार ही, मैली रही जो बुद्धि।
हरि के निर्मल नाम की, कैसे आवै सुद्धि ॥ २ ॥
सूच्छम भोजन खाइये, रहिये ना परि सोय।
ऐसी मानुख देह कूँ, भक्ति बिना मत खोय ॥ ३ ॥

बुल्लेशाह

जीवन समय—१७६० के लगभग से १८१० तक। जन्म स्थान—रूम। सतसंग स्थान—मौ० .क़ुसूर, ज़ि० लाहौर। जाति और आश्रम—सैयद, भेष। गुरू—शाह इनायत।

यह एक नामी सूफ़ी और भक्त पंजाब में गुरु नानक के अनुमान डेढ़ सौ बरस पीछे प्रगट हुए। इन के जन्म का स्थान रूम था पर दस बरस की ही अवस्था में पंजाब आ गये थे। अनुमान पचास बरस की उमर में देहान्त इन का .क़ुसूर के गाँव में जहाँ इनकी गद्दी और समाधि मौजूद है सन ११७१ हिजरी=सम्वत १८१० विक्रमी में हुआ। इन्होँ ने अपना ब्याह नहीँ किया और सदा साधु के बाने में रहे। .क़ुरान और शरअ़ का खुल्लम खुल्ला खंडन करने के कारन मुसलमान मौलवियों और मुल्लाओं के साथ इन का भारी झगड़ा रहा।

॥ सार गहनी ॥

बुल्ला होर[२] ने गल्लड़ियाँ[३], इक अल्ला अल्ला दी गल्ल[४]।
कुज रौला पाया आलमाँ, कुज कागजाँ पाया झल्ल[५] ॥ १ ॥

---

(१) साँप। (२) और। (३) बकवाद। (४) बात। (५) कुछ तो विद्वानों ने रौला मचाया है और कुछ किताबों ने झमेला डाल दिया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुल्ला चल्ल सुन्यार दे, जित्थे गहना घड़िये लाख।
सूरत आपो आपनी, तूँ इको रूप ये आख ॥ २ ॥[1]
बुल्ला साडा उत्थे वासा, जित्थे बहुते अन्नेँ[2]।
ना कोइ साडी कद्र पछाने, ना को सानूँ मन्नेँ ॥ ३ ॥

॥ बिरह ॥

बुल्ला हिजरत[3] बिच अलाह दे, मेरा नित है खास अराम[4]।
नित नित मराँ ते नित जियाँ, मेरा नित नित कूच मुकाम॥

॥ प्रेम ॥

बुल्ला आसिक हो योँ रब्ब दा, मुलामत[5] होई लाख।
लोग काफर काफर आखदे[6], तूँ आहो आहो[7] आख॥

॥ तीर्थव्रत मूर्ति पूजा ॥

बुल्ला धर्मसाला विच धाड़वी[8] रहंदे, ठाकुरद्वारे ठग्ग।
मसीताँ विच कोस्ती[9] रहंदे, आसिक रहन अलग्ग ॥ १ ॥
बुल्ला धर्मसाला विच साला[10] नहिँ, जित्थे मोहनभोग जिवाय[11]।
विच्च मसीताँ धक्के मिलदे, मुल्लाँ थोड़े पाय ॥ २ ॥
ना खुदा मसीते लभदा, ना खुदा खाना काबे।
ना खुदा कुरान किताबाँ, ना खुदा नमाजे ॥ ३ ॥
ना खुदा मैँ तीरथ डिट्ठा, ऐँवेँ पैँडे झागे[12]।
बुल्ला शौह[13] जद मुरशिद मिल्ल गया, टूटे सब्ब तगादे[14] ॥ ४ ॥
बुल्लामक्केगयाँगल्लमुकदी[15] नहीँ, जिचर दिलोँ न आप मुकाय[16]।
गंगा गयाँ पाप नहिँ छुटदे, भावेँ सौ सौ गोते लाय ॥ ५ ॥

---

(१) सुनार के यहाँ चल जहाँ लाखोँ गहने गढ़े जाते हैँ जो हर एक जुदा जुदा सूरत का होता है पर तू उन्हेँ एक ही मूल वस्तु (अर्थात् सोना) कह। (२) अंधे। (३) बियोग। (४) सुख। (५) निन्दा। (६) कहेँ। (७) हाँ हाँ। (८) डाकू। (९) बदमाश। (१०) स्त्री का भाई अर्थात ससुराल। (११) खिलाया जाय। (१२) व्यर्थ रास्ता काटा। (१३) मालिक। (१४) कर्मों का तक़ाजा (१५) बात नहीँ ख़तम होती। (१६) जब तक अपने दिल से आपा न छोड़ दे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गया गयाँ गल्ल मुकदी नहीँ, भावेँ कितने पिंड भराय।
बुल्ले शाह गल्ल ताँई मुकदी, जब "मैँ" नूँ खड़्यालुटाय ॥ ६ ॥[1]

॥ उपदेश ॥

बुल्ला ग़ैन ग़रूरत साड़सुट्ट, हैँ मैँ खूह पाय[2]।
तन मन दी सुरत गँवाय दे, घर आप मिलेगा आय[3] ॥ १ ॥
बुल्ला हच्छे दिन ताँ पिच्छे गये, जब हरि किया न हेत।
अब पछुतावा क्या करे, जब चिड़ियाँ चुग लिया खेत ॥ २ ॥
बुल्ला दौलतमंदाँ ने बूहे[4], उत्ते चोबदार बहाये[5]।
पकड़ दरवाजा रब सच्चे दा, जित्थे दुख दिल दा मिट जाये ॥ ३ ॥
बुल्ले नूँ लोक मत्ती[6] देँ दे, तूँ जा बहु[7] विच्च मसीती।
विच्च मसीताँ की कुज होँदा, जे दिलोँ नमाज न लीती ॥ ४ ॥
बाहरोँ पाक कीते को होँदा, जो अंदरोँ न गई पलीती[8]।
बिन मुरशिद कामिल बुल्ला तेरी, ऐवेँ[9] गई इबादत कीती ॥ ५ ॥

॥ मिश्रित ॥

भट्ठ[10]नमाजाँ ते[11] चिक्कड़[12] रोजे, मुँह कलमे ते[13]फिर गइ स्याही
बुल्लाशाह शौह[14] अंदरोँ मिल्या, भुल्ली फिरे लुकाई ॥ १ ॥
बुल्ला रंगमहल्लीँ जा चढ्या, लोग पुच्छन आये खैर[15]।
असाँ एह कुज दुनिया तोँ वट्टिया[16], मुँह काला नीले पैर ॥ २ ॥
बुल्ला मन मँजोला मुंज दा, किते गोसे बहि के कुट्ट[17]।
एह खजाना तै नूँ असं[18] दा, तूँ समल[19]समल के लुट्ट ॥ ३ ॥

---

(१) बात जभी ख़तम होगी जब खड़े खड़े हैँ मैँ को लुटा दो। (२) अहंकार को जला डाल और हँगता को कुए मेँ डाल दे। (३) मालिक घर मेँ आप आकर मिलेगा। (४) दरवाज़ा। (५) बैठाये। (६) समझौती। (७) बैठ। (८) गंदगी, मैल। (९) व्यर्थ। (१०) भाड़ में पड़ै। (११) और। (१२) कीचड़ मेँ मिलै। (१३) पर। (१४) मालिक। (१५) कुशल। (१६) कमाया। (१७) मन मूँज के पूले समान है जैसे कहीँ एकान्त मेँ बैठ कर कूट। (१८) नवाँ आसमान। (१९) सम्हल कर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुल्ला वारे जाये उन्हाँ तोँ,[१] जिहड़े गल्लीं देन प्रचाय[२] ।
सुई सलाई दान करन, अहरन[३] लेन छपाय ॥ ४ ॥
बुल्ला वारे जाये उन्हाँ तोँ, जिहड़े मारन गप्प सड़प्प ।
कौड़ी लभे देनचा, बगुचा घाऊघप्प[४] ॥ ५ ॥
बुल्ला मुल्ला ते मसालची, दोहाँदा इक्को चित्त[५] ।
लोकाँ करदे चानना, आप हनेरे[६] विच्च ॥ ६ ॥

सहजोबाई

यह और दयाबाई सम्वत १८०० में वर्त्तमान थीं और महात्मा चरनदास जी की चेली और उनकी सजाती अर्थात दूसर बनियाइन गृहस्थ आश्रम में थीँ । दोनोँ मेवात (राजपूताना) की निवासी और आपस में संसारी और परमार्थी बहिन थीँ ।

॥ गुरुदेव ॥

हरि किरपा जो होय तो, नाहीँ होय तो नाहिँ ।
पै गुरु किरपा दया बिनु, सकल बुद्धि बहि जाहिँ ॥ १ ॥
गुरु मग दृढ़ पग राखिये, डिगमिग डिगमिग छाँड ।
सहजो टेक टरै नहीँ, सूर सती ज्योँ माँड ॥ २ ॥
गुरु बिन मारग ना चलै, गुरु बिन लहै न ज्ञान ।
गुरु बिन सहजो धुंध है, गुरु बिन पूरी हान ॥ ३ ॥
सतगुरु बिन भटकत फिरै, परसत पाथर नीर ।
सहजो कैसे मिटत है, जम जालिम की पीर ॥ ४ ॥
सिष का माना सतगुरू, गुरु झिड़कै लख बार ।
सहजो द्वार न छोड़िये, यही धारना धार ॥ ५ ॥

---

(१) ऐसोँ की बलिहारी जाउँ—यह व्यंग से कहा है । (२) जो बातों से पर्चाय लेँ । (३) निहाई अर्थात बड़ी चीज़ । (४) अगर कौड़ी पावैँ तो दे देँ और गठरी हज़म कर जायँ । (५) दोनोँ का एक ही मत है । (६) अँधेरे ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गुरु दरसन कर सहजिया, गुरु का कीजै ध्यान।
गुरु की सेवा कीजिये, तजिये कुल अभिमान ॥ ६ ॥
दीपक ले गुरु ज्ञान को, जगत अँधेरे माहिँ।
काम क्रोध मद मोह मैँ, सहजो उरझै नाहिँ ॥ ७ ॥
सहजो सतगुरु के मिले, भये और सूँ और।
काग पलट गति हंस है, पाई भूली ठौर ॥ ८ ॥
चिँउटी जहाँ न चढ़ि सकै, सरसोँ ना ठहराय।
सहजो कूँ वा देस मैँ, सतगुरु दई बसाय ॥ ६ ॥
सहजो गुरु रँगरेज सा, सबहीँ कूँ रँग देत।
जैसा तैसा बसन ह्वै, जो कोइ आवै सेत ॥ १० ॥

॥ झूठे गुरू ॥

सहजो गुरु बहुतक फिरैँ, ज्ञान ध्यान सुधि नाहिँ।
तार सकैँ नहिँ एक कूँ, गहैँ बहुत की बाँह ॥

॥ नाम ॥

पारस नाम अमोल है, धनवन्ते घर होय।
परख नहीँ कंगाल कूँ, सहजो डारै खोय ॥ १ ॥
सहजो जा घट नाम है, सो घट मंगल रूप।
नाम बिना धिरकार है, सुंदर धनवँत भूप ॥ २ ॥
सहजो भवसागर बहै, तिमिर बरस घन घोर।
ता मैँ नाम जहाज है, पार उतारै तोर ॥ ३ ॥
मैँह सहै सहजो कहै, सहै सीत औ घाम।
पर्बत बैठो तप करै, तौभी अधिको नाम ॥ ४ ॥
जागत मैँ सुमिरन करै, सोवत मैँ लौ लाय।
सहजो इकरस ह्वाँ रहै, तार टूटि नहिँ जाय ॥ ५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सील छिमा संतोष गहि, पाँचो इन्द्री जीत।
राम नाम ले सहजिया, मुक्ति होन की रीत ॥ ६ ॥

॥ सुमिरन ॥

एक घड़ी का मोल ना, दिन का कहा बखान।
सहजो ताहि न खोइये, बिना भजन भगवान ॥ १ ॥
सहजो सुमिरन कीजिये, हिरदे माहिँ दुराय[1]।
होठ होठ सूँ ना हिलै, सकै नहीँ कोइ पाय ॥ २ ॥
सहजो सुमिरन सब करैँ, सुमिरन माहिँ बिबेक।
सुमिरन कोई जानिहै, कोटाँ मद्धे एक ॥ ३ ॥
बैठे लेटे चालते, खान पान ब्यौहार।
जहाँ तहाँ सुमिरन करै, सहजो हिये निहार ॥ ४ ॥

॥ चितावनी ॥

सहजो भज हरि नाम कूँ, तजो जगत सूँ नेह।
अपना तो कोइ है नहीँ, अपनी सगी न देह ॥ १ ॥
यही कही गुरुदेवजू, यही पुकारैँ संत।
सहजो तज या जगत कूँ, तोहि तजैगो अंत ॥ २ ॥
जैसे सँड़सी लोह की, छिन पानी छिन आग।
ऐसे दुख सुख जगत के, सहजो तू मत पाग ॥ ३ ॥
अचरज जीवन जगत में, मरिबो साचो जान।
सहजो अवसर जात है, हरि सूँ ना पहिचान ॥ ४ ॥
जब लग चावल धान में, तब लग उपजै आय।
जग छिलके कूँ तजि निकस, मुक्ति रूप ह्वै जाय ॥ ५ ॥
दरद बटाय सकैँ नहीँ, मुए न चालैँ साथ।
सहजो क्योँकर आपने, सब नाते बरबाद ॥ ६ ॥

---

(१) छिपाकर, गुप्त।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सहजो जीवत सब सगे, मुए निकट नहिँ जायँ।
रोवैँ स्वारथ आपने, सुपने देख डरायँ॥ ७॥
सहजो धन माँगे कुटुँब, गाड़ा धरा बताय।
जो कछु है सो दे हमैँ, फिर पाछे मरिजाय॥ ८॥
मुख देखैँ ढाँपैँ भजे, तड़ दे तोड़ैँ नेह।
सहजो पति सुत निज हितू, जारि करैँगे खेह॥ ९॥
काढ़ काढ़ बेगी कहैँ, भीतर बाहर लोय।
जाव छुटे सहजो कहै, तन का सगा न कोय॥ १०॥
सहजो फिर पछितायगी, स्वास निकसि जब जाय।
जब लग रहै सरीर मेँ, राम सुमिर गुन गाय॥ ११॥
सहजो नौबत स्वास की, बाजत है दिन रैन।
मूरख सोवत है महा, चेतन कूँ नहिँ चैन॥ १२॥
यह रस्ता बहता रहै, थमै नहीँ छिन एक।
बहु आवैँ बहु जातु हैँ, सहजो आँखन देख॥ १३॥
जग देखत तुम जावगे, तुम देखत जग जाय।
सहजो योँही रीति है, मत कर सोच उपाय॥ १४॥
देह निकट तेरे पड़ी, जीव अमर है नित्त।
दुइ मेँ मूवा कौन सा, का सूँ तेरा हित्त॥ १५॥
कलप रोय पछिताय थक, नेह तजौगे कूर।
पहिले ही सूँ जो तजै, सहजो सो जन सूर॥ १६॥
आगे मुए सो जा चुके, तू भी रहै न कोय।
सहजो पर कूँ क्या झुरै, आपन ही कूँ रोय॥ १७॥

॥ प्रेम ॥

प्रेम दिवाने जो भये, मन भयो चकनाचूर।
छके रहैँ घूमत रहैँ, सहजो देखि हजूर॥ १॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रेम दिवाने जो भये, कहैं बहकते बैन।
सहजो मुख हाँसी छुटै, कबहूँ टपकै नैन ॥ २ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, जाति बरन गइ छूट।
सहजो जग बौरा कहै, लोग गये सब फूट[1] ॥ ३ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, नेम धरम गयो खोय।
सहजो नर नारी हँसैं, वा मन आनँद होय ॥ ४ ॥
प्रेम दिवाने जो भये, सहजो डिगमिग देह।
पाँव पड़ै कितकै किती, हरि सम्हाल तब लेह ॥ ५ ॥
कबहूँ हकधक हो रहै, उठैं प्रेम हित गाय।
सहजो आँख मुँदी रहै, कबहूँ सुधि हो जाय ॥ ६ ॥
मन में तो आनँद रहै, तन बौरा सब अंग।
ना काहू के संग है, सहजो ना कोइ संग ॥ ७ ॥

॥ साध ॥

सहजो साधन के मिले, मन भयो हरि के रूप।
चाह गई थिरता भई, रंक लख्यौ सोइ भूप ॥ १ ॥
साध मिले दुख सब गये, मंगल भये सरीर।
बचन सुनत ही मिटि गई, जनम मरन की पीर ॥ २ ॥
जो आवै सतसंग में, जाति बरन कुल खोय।
सहजो मैल कुचैल जल, मिलै सु गंगा होय ॥ ३ ॥
सहजो संगत साध की, काग हंस हो जाय।
तजि के भच्छ अभच्छ कूँ, मोती चुगि चुगि खाय ॥ ४ ॥
सहजो संगत साध की, छूटैं सकल बियाध।
दुर्मति पाप रहै नहीं, लागै रंग अगाध ॥ ५ ॥

---

(१) बिरादरी से अलग हो जाना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सहजो दरसन साध का, देखूँ वारूँ प्रान।
जिन की किरपा पाइये, निर्भय पद निर्बान ॥ ६ ॥ ॥

॥ काम ॥

काम क्रोध लोभ मोह मद, तजि भज हरि को नाम।
निस्चै सहजो मुक्ति हो, लहै अमरपुर धाम ॥ १ ॥
कामी मति भिष्टल[1] सदा, चलै चाल बिपरीत।
सील नहीं सहजो कहै, नैनन माहिँ अनीत ॥ २ ॥

॥ क्रोध ॥

सहजो क्रोधी अति बुरो, उलटी समझै बात।
सबही सूँ ऐँठो रहै, करै बचन की घात ॥ १ ॥
कूकर ज्यों भूसत फिरै, तामस मिलवाँ बोल।
घर बाहर दुख रूप है, बुधि रहै डाँवाडोल ॥ २ ॥

॥ लोभ ॥

नीच लोभ जा घट बसै, झूठ कपट सूँ काम।
बौरायो चहुँ दिसि फिरै, सहजो कारन दाम ॥ १ ॥
द्रब्य हेत हरि कूँ भजै, धनही की परतीत।
स्वारथ ले सब सू मिलै, अन्तर की नहिँ प्रीत ॥ २ ॥

॥ मोह ॥

मन मैला तन छीन है, हरि सूँ लगै न नेह।
दुखी रहै सहजो कहै, मोह बसै जा देह ॥ १ ॥
मोह मिरग काया बसै, कैसे उबरै खेत।
जो बोवै सोई चरै, लगै न हरि सूँ हेत ॥ २ ॥

॥ मान ॥

अभिमानी मुख धूर है, चहै बड़ाई आप।
डिंभ लिये फूलो फिरै, करतो डरै न पाप ॥ १ ॥

(१) भ्रष्ट।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रभुताई कूँ चहत हैं, प्रभु को चहै न कोय।
अभिमानी घट नीच है, सहजो ऊँच न होय ॥ २ ॥

॥ नन्हा महा उत्तम ॥

धन छोटापन सुख महा, धिरग बड़ाई ख्वार[1]।
सहजो नन्हा हूजिये, गुरु के बचन सम्हार ॥ १ ॥

सहजो तारे सब सुखी, गहै[2] चन्द और सूर।
साधू चाहै दीनता, चहै बड़ाई कूर[3] ॥ २ ॥

अभिमानी नाहर बड़ो, भरमत फिरत उजाड़।
सहजो नन्ही बाकरी, प्यार करै संसार ॥ ३ ॥

सीस कान मुख नासिका, ऊँचे ऊँचे नाँव।
सहजो नीचे कारने, सब कोउ पूजै पाँव ॥ ४ ॥

नन्ही चीँटी भवन में, जहाँ तहाँ रस लेह।
सहजो कुंजर अति बड़ो, सिर में डारै खेह ॥ ५ ॥

सहजो चंदा दूज का, दरस करै सब कोय।
नन्हे सूँ दिन दिन बढ़ै, अधिको चाँदन होय ॥ ६ ॥

बड़ा भये आदर नहीं, सहजो आँखिन देख।
कला सभी घट जायगी, कछू न रहसी रेख ॥ ७ ॥

सहजो नन्हा बालका, महल भूप के जाय।
नारी परदा ना करै, गोदहिं गोद खेलाय ॥ ८ ॥

बड़ा न जाने पाइहै, साहिब के दरबार।
द्वारे ही सूँ लागिहै, सहजो मोटी मार ॥ ९ ॥

बारे दीवे चाँदना, बड़ा भये अँधियार[4]।
सहजो त्रृन हलका तिरै, डूबै पत्थर भार ॥ १० ॥

---

(१) खराब। (२) ग्रहन लगता है। (३) दुष्ट। (४) दीवा या रोशनी "बढ़ा" देना मुहावरे में चिराग़ बुझा देने को कहते हैं—इस साखी का अर्थ यह है कि नन्हा सा दीवा जब बाला गया तो चाँदना करता है और जब "बढ़ाया" (बुझाया) गया तो अँधेरा हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भली गरीबी नवनता, सकै नहीँ कोइ मार।
सहजो रुई कपास की, काटै ना तरवार ॥११॥
चरनदास सतगुरु कही, सहजो कूँ यह चाल।
सकौ तो छोटा हूजिये, छूटै सब जंजाल ॥१२॥
साहन कूँ तो भय घना, सहजो निर्भय रंक।
कुंजर के पग बेड़ियाँ, चीँटी फिरै निसंक ॥१३॥
ऊँचे उज्जल भाग सूँ, आय मिले गुरुदेव।
प्रेम दिया नन्हा किया, पूरन पायो भेव ॥१४॥
सहजो पूरन भाग सूँ. पाय लिये सुखदान।
नख सिख आई दीनता, भजे बड़ाई मान ॥१५॥
औगुन थे सो सब गये, राज करैँ उनतीस[1]।
प्रेम झिला प्रीतम मिला, सहजो वारा सीस ॥१६॥

॥ अजपा जाप ॥

ऐसा सुमिरन कीजिये, सहज रहै लौ लाय।
बिनु जिभ्या बिनु तालुवै, अन्तर सुरति लगाय ॥ १ ॥
हंसा सोहं तार करि, सुरति मकरिया पोय।
उतर उतर फिरि फिरि चढ़ै, सहजो सुमिरन होय ॥ २ ॥
वरत[2] बाँध करि धरन मैँ, कला गगन मैँ खाय।
अर्ध उर्ध नट ज्यौँ फिरै, सहजो राम रिझाय ॥ ३ ॥
लगै सुन्न मैँ टकटकी, आसन पदम लगाय।
नाभि नासिका माहिँ करि, सहजो रहै समाय ॥ ४ ॥

(१) मन और ३ गुण और २५ प्रकृतियाँ। (२) रस्सी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सहज स्वास तीरथ बहै, सहजो जो कोइ न्हाय।
पाप पुन्न दोनों छुटैं, हरि पद पहुँचै जाय ॥ ५ ॥
हक्कारे[1] उठि नाम सूँ, सक्कारे होय लीन।
सहजो अजपा जाप यह, चरनदास कहि दीन ॥ ६ ॥
सब घट अजपा जाप है, हंसा सोहं पुर्ष।
सुरत हिये ठहराय के, सहजो या बिधि निर्ख ॥ ७ ॥
सब घट व्यापक राम है, देँही[2] नाना भेष।
राव रंक चंडाल घर, सहजो दीपक एक ॥ ८ ॥

॥ सत्त वैराग जगत मिथ्या ॥

आतम में जागत नहीं, सुपने सोवत लोग।
सहजो सुपने होत हैं, रोग भोग और जोग ॥ १ ॥
कोटि बरस इक छिन लगै, ज्ञान दृष्टि जो होय।
बिसरि जगत औरै बनै, सहजो सुपने सोय ॥ २ ॥
ऐसे ही सब स्वप्न है, स्वर्ग मितु पाताल।
तीन लोक छल रूप है, सहजो इन्दरजाल ॥ ३ ॥
अज्ञानी जानत नहीं, लिप्त भया करि भोग।
ज्ञानी तौ दृष्टा भये, सहजो खुसी न सोग ॥ ४ ॥
मन माहीं वैराग है, ब्रह्म माहिं गलतान।
सहजो जगत अनित्य है, आतम कूँ नित जान ॥ ५ ॥

(१) पुकारै। (२) शरीर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सहजो सुपने एक पल, बीतै बरस पचास।
आँख खुलै जब झूठ है, ऐसे ही घर बास॥ ६ ॥
मृग तृस्ना जल साच है, जब लगि निकट न जाय।
सहजो तब लगि जग बन्यौ, सतगुरु दृष्टि न पाय॥ ७ ॥
जैसे बालक जल बिषे, देखि देखि डरपाय।
समझ भई जब भर्म था, सहजो रहै खिसाय॥ ८ ॥
ज्ञानी कूँ जग झूठ है, अज्ञानी कूँ साच।
कोटि लाल कागद लिखे, सहजो बैठा बाँच॥ ९ ॥
जगत तरैयाँ भोर की, सहजो ठहरत नाहिँ।
जैसे मोती ओस की, पानी अँजुली माहिँ॥१०॥
धूवाँ को सो गढ़ बन्यो, मन में राज सँजोय।
झाँईं माईं सहजिया, कबहूँ साच न होय॥११॥
ऐसे ही जग झूठ है, आतम कूँ नित जान।
सहजो काल न खा सकै, ऐसो रूप पिछान॥१२॥

॥ सच्चिदानन्द ॥

नया पुराना होय ना, घुन नहिँ लागै जासु।
सहजो मारा ना मरै, भय नहिँ ब्यापै तासु॥ १ ॥
किरै[1] घटै छीजै नहीँ, ताहि न भिजवै नीर।
ना काहू के आसरे, ना काहू के सीर॥ २ ॥
रूप बरन वा के नहीँ, सहजो रंग न देँह।
मीत इष्ट वा के नहीँ, जाति पाँति नहिँ गेह॥ ३ ॥

(१) कीड़ा लगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सहजो उपजै ना मरै, सद्बासी नहिँ होय।
रात दिवस ता में नही, सीत ऊस्न नहिँ होय॥ ४॥

आग जलाय सकै नहीँ, सस्तर सकै न काटि।
धूप सुखाय सकै नहीँ, पवन सकै नहिँ आटि[1]॥ ५॥

मात पिता वा के नहीँ, नहीँ कुटुँब को साज।
सहजो वाहि न रंकता, ना काहू को राज॥ ६॥

आदि अंत ता के नहीँ, मध्य नहीँ तेहि माहि।
वार पार नहिँ सहजिया, लघू दीर्घ भी नाहिँ॥ ७॥

परलय में आवै नहीँ, उत्पति होय न फेर।
ब्रह्म अनादी सहजिया, घने हिराने हेर॥ ८॥

जा के किरिया करम ना, षट दर्सन को भेस।
गुन औगुन ना सहजिया, ऐसो पुरुष अलेस॥ ९॥

रूप नाम गुन सूँ रहित, पाँच तत्त सूँ दूर।
चरनदास गुरु ने कही, सहजो छिमा हजूर॥१०॥

आपा खोये पाइये, और जतन नहिँ कोय।
नीर छीर निर्ताय के, सहजो सुरति समोय॥११॥

॥ नित्य अनित्य सांख्य मत ॥

भिन्न भिन्न दोनोँ करै, वही सांख्य मत भेद।
जीवन और बिदेह सूँ, मुक्ति पाय तजि खेद॥ १॥

जाग्रत और सुषोपती, स्वप्न अवस्था तीन।
काया ही सूँ होत है, घटै बढ़ै ह्वै छीन॥ २॥

---

(१) उड़ाना, हटाना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुरिया इक रस आत्मा, इन तेँ परे निहार।
इन्द्री मन गहि ना सकै, सहजो तत्त अपार ॥ ३ ॥
जिभ्या चाखि सकै नहीँ, स्रवन सुनै नहिँ ताहि।
नैन बिलोकि सकै नहीँ, नासा तुचा न पाय ॥ ४ ॥
अनुभव ही सूँ जानिये, चित बुधि थकि थकि जाहिँ।
तीन भाँति हंकार की, सो भी पावै नाहिँ ॥ ५ ॥
जा के रस नहिँ रूप नहिँ, गंध नहीँ वा ठौर।
सबद नहीँ अस्पर्स नहिँ, सहजो वह कछु और ॥ ६ ॥
गुन तीनौँ सूँ है परे, ता मेँ रूप न रेख।
बोध रूप हो सहजिया, ब्रह्म दृष्टि करि देख ॥ ७ ॥

॥ निर्गुन सर्गुन संशय-निवारन भक्ति ॥

निराकार आकार सब, निर्गुन और गुनवंत।
है नाहीँ सूँ रहित है, सहजो योँ भगवंत ॥ १ ॥
नाम नहीँ औ नाम सब, रूप नहीँ सब रूप।
सहजो सब कछु ब्रह्म है, हरि परगट हरि गूप ॥ २ ॥
कहा कहूँ कहा कहि सकूँ, अचरज अलख अभेव।
सुने अचंभो सो लगै, सहजो ब्रह्म अलेव ॥ ३ ॥
भक्त हेत हरि आइया, पिरथी भार उतारि।
साधन की रच्छा करी, पापी डारे मारि ॥ ४ ॥
निर्गुन सूँ सर्गुन भये, भक्त उधारनहार।
सहजो की दंडौत है, ता कूँ बारम्बार ॥ ५ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ता के रूप अनन्त हैँ, जा के नाम अनेक।
ता के कौतुक बहुत हैँ, सहजो नाना भेष॥ ६॥
गीता मेँ स्रीकृस्न ने, बचन कहे सब खोल।
सब जीवन मेँ मैँ बसूँ, कै चर कहा अडोल॥ ७॥
मैँ अखंड ब्यापक सकल, सहज रहा भरपूर।
ज्ञानी पावै निकट हीँ, मूरख जानै दूर॥ ८॥
जोगी पावै जोग सूँ, ज्ञानी लहै बिचार।
सहजो पावै भक्ति सूँ, जा के प्रेम अधार॥ ९॥

॥ कर्म अनुसार जोनी ॥

उपजि उपजि फिरि फिरि मरौ, जम दे दारुन दुक्ख।
लाज नहीँ सहजो कहै, धिर्ग तुम्हारो मुक्ख॥ १॥
सहजो रहै मन बासना, तैसी पावै ठौर।
जहाँ आस तहँ बास है, निस्चै करी कड़ोर॥ २॥
देँह छुटै मन मेँ रहै, सहजो जैसी आस।
देँह जन्म जैसो मिलै, जैसे ही घर बास॥ ३॥
चौरासी के त्रास सुनि, जम किंकर की मार।
सहजो आई गुरु चरन, सुमिर्‍यो सिरजनहार॥ ४॥
धन जोबन सुख सम्पदा, बादर की सी छाहिँ।
सहजो आखिर धूप है, चौरासी के माहिँ॥ ५॥
चौरासी जोनी भुगत, पायो मनुष सरीर।
तहजो चूके भक्ति बिनु, फिर चौरासी पीर॥ ६॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

दयाबाई

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

[संक्षिप्त जीवन-चरित्र के लिये देखो सहजोबाई का संक्षिप्त जीवन-चरित्र पृष्ठ १५४]

॥ गुरुदेव ॥

जै जै परमानंद प्रभु, परम पुरुष अभिराम ।
अंतरजामी कृपानिधि, "दया" करत परनाम ॥ १ ॥
ब्रह्म रूप सागर सुधा, गहिरो अति गम्भीर ।
आनँद लहर सदा उठै, नहीँ धरत मन धीर ॥ २ ॥
जहाँ जाय मन मिटत है, ऐसो तत्त सरूप ।
अचरज देखि "दया" करै, बंदन भाव अनूप ॥ ३ ॥
चरनदास गुरुदेवजू, ब्रह्म-रूप सुख-धाम ।
ताप-हरन सब सुख-करन, "दया" करत परनाम ॥ ४ ॥
अंध कूप जग में पड़ी, "दया" करम बस आय ।
बूड़त लई निकासि करि, गुरु गुन ज्ञान गहाय ॥ ५ ॥
छके रहैं आनन्द में, आठ पहर गलतान ।
अद्भुत छबि जिनकी बनी, "दया" धरत मन ध्यान ॥ ६ ॥
सतगुरु सम कोउ है नहीँ, या जग में दातार ।
देत दान उपदेस सोँ, करैँ जीव भव पार ॥ ७ ॥
या जग में कोउ है नहीँ, गुरु सम दीन-दयाल ।
सरनागत कूँ जानि कै, भले करैँ प्रतिपाल ॥ ८ ॥
मनसा बाचा करि "दया", गुरु चरनौँ चित लाव ।
जग समुद्र के तरन कूँ, नाहिन आन उपाव ॥ ९ ॥
जे गुरु कूँ बंदन करैँ, "दया" प्रीति के भाय ।
आनँद मगन सदा रहैँ, तिरबिधि ताप नसाय ॥ १० ॥

(१) होरी ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
चरन कमल गुरुदेव के, जे सेवत हित लाय।
"दया" अमरपुर जात हैं, जग सुपनो बिसराय ॥११॥
सतगुरु ब्रह्म सरूप हैं, मनुष भाव मत जान।
देह भाव मानैं "दया", ते हैं पसू समान ॥१२॥
नित प्रति बंदन कीजिये, गुरु कूँ सीस नवाय।
"दया" सुखी करि देत हैं, हरि सरूप दरसाय ॥१३॥

॥ सुमिरन ॥

हरि भजते लागै नहीं, काल-ब्याल दुख-झाल।
ता तें राम सँभालिये, "दया" छोड़ि जग-जाल ॥ १ ॥
"दयादास" हरि नाम लै, या जग में यह सार।
हरि भजते हरि ही भये, पायौ भेद अपार ॥ २ ॥
मनमोहन को ध्याइये, तन मन करिये प्रीति।
हरि तज जे जग में पगे, देखौ बड़ी अनीति ॥ ३ ॥
जे जन हरि सुमिरन बिमुख, तासूँ मुख हुं न बोल।
राम रूप में जे पगे, तासूँ अंतर खोल ॥ ४ ॥
राम नाम के लेतही, पातक झरैं अनेक।
रे नर हरि के नाम की, राखो मन में टेक ॥ ५ ॥
सोवत जागत हरि भजो, हरि हिरदे न बिसार।
डोरी गहि हरि नाम की, "दया" न टूटै तार ॥ ६ ॥
"दया" जगत में यहि नफो[१], हरि सुमिरन कर लेहि।
छल-रूपी छिन-भंग है, पाँच तत्त की देहि ॥ ७ ॥
"दया" देह सूँ नेह तजि, हरि भजु आठो जाम।
मन निर्मल ह्वै तनिक में, पावै निज बिस्राम ॥ ८ ॥
"दया" नाव हरि नाम की, सतगुरु खेवनहार।
साधू जन के संग मिलि, तिरत न लागै बार ॥ ९ ॥

(१) नफा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ अजपा जाप ॥

पद्मासन सूँ बैठ करि, अंतर दृष्टि लगाव।
"दया" जाप अजपा जपो, सुरति स्वास मेँ लाव॥ १॥
अर्ध उर्ध मधि सुरति धरि, जपै जु अजपा जाप।
"दया" लहै निज धाम कूँ, छुटै सकल संताप॥ २॥
स्वासउस्वास बिचार करि, राखै सुरति लगाय।
"दया" ध्यान त्रिकुटी धरै, परमातम दरसाय॥ ३॥
बिन रसना बिन माल कर, अंतर सुमिरन होय।
"दया" दया गुरदेव की, बिरला जानै कोय॥ ४॥
सतगुरु के परताप तेँ, "दया" कियो निरधार।
अजपा सोहं जाप है, परम गम्य निज सार॥ ५॥
प्रथम पैठि पाताल सूँ, धमकि चढ़ै आकास।
"दया" सुरति नटिनी भई, बाँधि बरत[1] निज स्वास॥ ६॥
छिन छिन मेँ उतरत चढ़त, कला गगन मेँ लेत।
"दया" रीझि गुरदेवजू, दान अभय पद देत॥ ७॥
चनरदास गुरु कृपा तेँ, मनुवा भयो अपंग।
सुनत नाद अनहद "दया", आठो जाम अभंग॥ ८॥
घंटा ताल मृदंग धुनि, सिंह गरज पुनि होय।
"दया" सुनत गुरु कृपा तेँ, बिरला साधू कोय॥ ९॥
गगन मध्य मुरली बजै, मैँ जु सुनी निज कान।
"दया" दया गुरदेव की, परस्यो पद निर्बान॥१०॥
जहाँ काल अरु ज्वाल नहिँ, सीत उस्न नहिँ बीर।
"दया" परसि निज धाम कूँ, पायो भेद गँभीर॥११॥

---

(१) रस्सी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ चितावनी ॥

"दया कुँवर" या जक्त में, नहीं आपनो कोय।
स्वारथ-बंधी जीव है, राम नाम चित जोय ॥ १ ॥

"दया" सुपन संसार में, ना पचि मरिये बीर[१]।
बहुतक दिन बीते बृथा, अब भजिये रघुबीर ॥ २ ॥

"दया कुँवर" या जक्त में, नहीं रह्यो थिर कोय।
जैसो बास सराँय को, तैसो यह जग होय ॥ ३ ॥

जैसो मोती ओस को, तैसो यह संसार।
बिनसि जाय छिन एक में, "दया" प्रभू उर धार ॥ ४ ॥

भाई बंधु कुटुम्ब सब, भये इकट्ठे आय।
दिना पाँच[२] को खेल है, "दया" काल ग्रासि जाय ॥ ५ ॥

तात मात तुम्हरे गये, तुम भी भये तयार।
आज काल्ह में तुम चलौ, "दया" होहु हुसियार ॥ ६ ॥

असु[३] गज अरु कंचन "दया", जोरे लाख करोर।
हाथ झाड़ रीते[४] गये, भयो काल को जोर ॥ ७ ॥

तीन लोक नौ खंड के, लिये जीव सब हेर।
"दया" काल परचंड है, मारै सब कूँ घेर ॥ ८ ॥

बड़ो पेट है काल को, नेक न कहूँ अघाय।
राजा राना छत्र-पति, सब कूँ खाले जाय ॥ ९ ॥

बहे जात हैं जीव सब, काल नदी के माहिं।
"दया" भजन नौका[५] बिना, उपजि उपजि मरि जाहिं ॥ १० ॥

(१) बहिन, भाई। (२) दो दिन जन्म और मरन के छोड़ने से सप्ताह या हफ़्ते के पाँच दिन रह जाते हैं। (३) घोड़ा। (४) खाली (५) नाव।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छिन छिन बिनस्यो जात है, ऐसो जग निरमूल।
नाम रूप जो धूस[1] है, ताहि देखु मत भूल ॥११॥
बिनसत बादर बात[2] बसि, नभ में नाना भाँति।
इमि नर दीसत काल बसि, तऊ न उपजै साँति ॥१२॥
चरनदास सतगुरु मिले, समरथ परम कृपाल।
दीन जानि कीन्ही दया, मो पर भये दयाल ॥१३॥

॥ बिरह ॥

बिरह ज्वाल उपजी हिये, राम-सनेही आय।
मन-मोहन सोहन सरस, तुम देखन दा[3] चाय ॥ १ ॥
बिरह बिथा सूँ हूँ बिकल, दरसन कारन पीव।
"दया" दया की लहर कर, क्यों तलफावो जीव ॥ २ ॥
जनम जनम के बीछुरे, हरि अब रह्यो न जाय।
क्यों मन कूँ दुख देत हौ, बिरह तपाय तपाय ॥ ३ ॥
काग उड़ावत थके कर[4], नैन निहारत बाट।
प्रेम सिन्ध में पर्‌यो मन, ना निकसन को घाट ॥ ४ ॥
बौरी ह्वै चितवत फिरूँ, हरि आवैं केहिँ ओर।
छिन ऊठूँ छिन गिरि परूँ, राम-दुखी मन मोर ॥ ५ ॥
सोवत जागत एक पल, नाहिन बिसरूँ तोहिँ।
करुना-सागर दया-निधि, हरि लीजे सुधि मोहिँ ॥ ६ ॥

---

(१) मिट्टी का ऊँचा ढेर जो क़िले के चारो ओर पुश्ते की तरह बना देते हैं जिस में शत्रु की तोप के गोले घुस कर रह जायँ और गढ़ तक न पहुँच सकैं। (२) हवा। (३) का (४) कौवों के बैठने और बोली से पीतम के आने का शगुन और अशगुन बिचारते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ प्रेम ॥

"दया" प्रेम-उनमत्त जे, तन की तनि[१] सुधि नाहिँ।
झुके रहै हरि रस छके, थके नेम ब्रत नाहिँ ॥ १ ॥
"दया" प्रेम प्रगट्यौ तिन्हैँ, तन की तनि[१] न सँभार।
हरि रस में माते फिरैँ, गृह बन कौन बिचार ॥ २ ॥
प्रेम मगन जे साधवा, बिचरत रहत निसंक।
हरि रस के माते "दया", गिनैँ राव न रंक ॥ ३ ॥
प्रेम मगन जे साध जन, तिन गति कही न जात।
रोय रोय गावत हँसत, "दया" अटपटी बात ॥ ४ ॥
हरि रस माते जे रहैँ, तिन को मतो अगाध।
त्रिभुवन की संपति "दया", तृन सम जानत साध ॥ ५ ॥
प्रेम मगन गद्गद् बचन, पुलकि रोम सब अंग।
पुलकि रह्यो मन रूप मेँ, "दया" न ह्वै चित भंग ॥ ६ ॥
कहूँ धरत पग परत कहुँ, डिगमिगात सब देँह।
दया मगन हरि रूप मेँ, दिन दिन अधिक सनेह ॥ ७ ॥
चित चिंता हरि रूप बिन, मो मन कछु न सुहाय।
हरि हरखित हमकूँ "दया" कब रे मिलैगे आय ॥ ८ ॥
प्रेम-पुंज प्रगटै जहाँ, तहाँ प्रगट हरि होयँ।
"दया" दया करि देत हैँ, स्री हरि दर्सन सोय ॥ ९ ॥

॥ बिनय मालिका (संक्षिप्त) ॥

केहि बिधि रीझत हौ प्रभू, का कहि टेरूँ नाथ।
लहरि मिहरि जब हीं करो, तब हीँ होउँ सनाथ ॥ १ ॥

---

(१) जरा भी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भयमोचन अरु सर्बमय, ब्यापक अचल अखंड।
दयासिंधु भगवान जू, ता कै सब ब्रह्मंड ॥ २ ॥
चौरासी चरखान[१] को, दुःख सह्यो नहिँ जाय।
दयादास ता तैँ लई, सरन तिहारी आय ॥ ३ ॥
कर्म फाँस छूटै नहीँ, थकित भयो बल मोर।
अब की बेर उबारि लो, ठाकुर बंदी-छोर ॥ ४ ॥
भवजल नदी भयावनी, किस बिधि उतरूँ पार।
साहिब मेरी अरज है, सुनिये बारम्बार ॥ ५ ॥
पैरत थाको हे प्रभू, सूझत वार न पार।
मिहर मौज जब हीँ करौ, तब पाऊँ दरबार ॥ ६ ॥
कर्म रूप दरियाव से, लीजै मोहिँ बचाय।
चरन कमल तर राखिये, मिहर जहाज चढ़ाय ॥ ७ ॥
निरपच्छी के पच्छ तुम, निराधार के धार।
मेरे तुम हीँ नाथ इक, जीवन प्रान अधार ॥ ८ ॥
काहू बल अप[२] देह को, काहू राजहि मान।
मोहिँ भरोसो तेरही, दीनबंधु भगवान ॥ ९ ॥
हौँ गरीब सुन गोबिँदा, तुही गरीब-निवाज।
दयादास आधीन के, सदा सुधारन काज ॥१०॥
हौ अनाथ के नाथ तुम, नेक निहारो मोहिँ।
दयादास तन हे प्रभू, लहर मिहर की होहि ॥११॥

(१) चार खान। (२) अपने।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नर देही दीन्ही जबै, कीन्ही कोटि करार।
भक्ति कबूली आदि मेँ, जग मेँ भयो लबार ॥१२॥

कछू दोष तुम्हरो नहीँ, हमरी है तकसीर।
बीचहिँ बीच बिवस भयो, पाँच पचीस के भीर ॥१३॥

ऐँचा खैँची करत हैँ, अपनी अपनी ओर।
अब की बेर उबारि लो, त्रिभुवन बंदी-छोर ॥१४॥

तुम ठाकुर त्रैलोक-पति, ये ठग बस करि देहु।
दयादास आधीन की, यह बिनता सुनि लेहु ॥१५॥

हौँ पाँवर[1] तुम हौ प्रभू, अधम-उधारन ईस!
दयादास पर दया हो, दयासिंधु जगदीस ॥१६॥

ठग पापी कपटी कुटिल, ये लच्छन मोहिँ माहिँ।
जैसो तैसो तेर हौ, अरु काहू को नाहिँ ॥१७॥

जेते करम हैँ पाप के, मोसे बचे न एक।
मेरी ओर लखो कहा, बिर्द बानो तन देख[2] ॥१८॥

अधम-उधारन बिरद[3] सुन, निडर रह्यो मन माहिँ।
बिर्द बानो की हार देव, की तारो गहि बाँहिँ ॥१९॥

असंख जीव तरि तरि गये, लै लै तुम्हरो नाम।
अब की बेरी बाप जी, परो मुगध[4] से काम ॥२०॥

जो जा की ताकै सरन, ता को ताहि खभार[5]।
तुम सब जानत नाथ जू, कहा कहौँ बिस्तार ॥२१॥

---

(१) नीच। (२) बिरद अर्थात नीच के उद्धार करने का जो बाना आप ने धरा है उस की ओर देखिये। (३) यहाँ बिरद का अर्थ यश है। (४) मूढ़। (५) फ़िकर, भार।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पूजा अरचन बंदगी, नहिँ सुमिरन नहिँ ध्यान।
प्रभुजी अब राखे बनै, बिर्द बाने की कान[1] ॥२२॥

नहिँ संजम नहिँ साधना, नहिँ तीरथ ब्रत दान।
मात भरोसे रहत है, ज्योँ बालक नादान ॥२३॥

लाख चूक सुत से परै, सो कछु तजि नहिँ देह।
पोष चुचुक[2] ले गोद मैँ, दिन दिन दूनोँ नेह ॥२४॥

दुख तजि सुख की चाह नहिँ, नहिँ बैकुंठ बिवान।
चरन कमल चित चहत हौँ, मोहिँ तुम्हारी आन[3] ॥२५॥

तन मद धन मद राज मद, अंत काल मिटि जाय।
जिन के मद तेरो प्रभू, तेहि जम काल डेराय ॥२६॥

धूप हरै छाया करै, भोजन को फल देत।
सरनाये[4] की करत है, सब काहू पर हेत ॥२७॥

कलप बृच्छ के निकट हीँ, सकल कल्पना जाय।
दयादास ता तेँ लई, सरन तिहारी आय ॥२८॥

देँह धरौँ संसार मैँ, तेरो कहि सब कोय।
हाँसी होय तौ तेरिही, मेरी कछू न होय ॥२९॥

जो नहिँ अधम उधारनो, तौ नहिँ गहते फेँट।
बिर्द की पैज[5] सम्हारि लो, सकल चूक को मेट ॥३०॥

जो मेरे करमन लखो, तौ नहिँ होत उबार।
दयादास पर दया करि, दीजै चूक बिसार ॥३१॥

---

(१) लाज। (२) चुमकार के। (३) टेक, सौगंद। (४) सरन आये। (५) प्रन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हौ अनाथ तोहिँ बिनय करि, भय सोँ करूँ पुकार।
दयादास तन हेर प्रभु, अब के पार उतार ॥३२॥
मलयागिर के निकटहीँ, सब चंदन ह्वै जात।
छूटै करम कुबासना, महा सुगँध महकात ॥३३॥
लोहा पारस के निकट, कंचन ही सो होय।
जितना चाहै लै करै, लोहा कहै न कोय ॥३४॥
जैसे सूरज के उदय, सकल तिमिर नसि जाय।
मिहर तुम्हारी हे प्रभू, क्योँ अज्ञान रहाय ॥३५॥
अनँत भानु तुम्हरी मिहर, कृपा करो जब होय।
दयादास सूझै अगम, दिब्य दृष्टि तन होय ॥३६॥
तीन लोक मेँ हे प्रभू, तुम हीँ करो सो होय।
सुर नर मुनि गंधर्ब जे, मेटि सकैँ नहिँ कोय ॥३७॥
बेर बेर चूकत गयोँ, दीजे गुसा[1] बिसार।
मिहरबान होइ रावरे[2], मेरी ओर निहार ॥३८॥
दया दीन पर करत हौ, सो किमि लेखी जाहि।
बेद बिरद बोलत फिरै, तीन लोक के माहिँ ॥३९॥
बज्रै तिनका करत हौ, तिनकै बज्र बनाय।
मिहर तुम्हारी हे प्रभू, सागर गिरि[3] उतराय ॥४०॥
बड़े बड़े पापी अधम, तारत लगी न बार।
पूँजी लगै कछु नंद की, हे प्रभु हमरी बार[4] ॥४१॥

---

(१) अप्रसन्नता। (२) हुजूर। (३) पहाड़। (४) नन्दजी श्रीकृष्ण के पिता का नाम है—दयादास की विनती है कि हे प्रभु आप ने बड़े बड़े पापियोँ को तार दिया अब मेरे तारने के लिये क्या आप की पूँजी चुक गई और अपने बाबा से लेनी पड़ेगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सीस नवै तौ तुमहिं कूँ, तुमहिं सुँ भाखूँ दीन।
जो झगरूँ तौ तुमहिं सूँ, तुम चरनन आधीन ॥४२॥
और नजर आवै नहीं, रंग राव का साह।
चिरहटा के पंख ज्यौं, थोथो काम दिखाह ॥४३॥
तेरी दिसि आसा लगी, भ्रमत फिरूँ सब दीप।
स्वाँती मिलै सनाथ हो, जैसे चातृक सीप ॥४४॥
चित चातृक रटना लगी, स्वाँति बूँद की आस।
दया-सिंध भगवानजू, पुजवौ अब की आस ॥४५॥
कब को टेरत दीन भो[2], सुनौ न नाथ पुकार।
की सरवन ऊँचौ सुनो, की बिर्द दियो बिसार ॥४६॥
सुनत दीनता दास की, बिलम कहूँ नहिं कीन्ह।
दयादास मन-कामना, मनभाई कर दीन्ह ॥४७॥

॥ साधु ॥

जगत-सनेही जीव है, राम-सनेही साध।
तन मन धन तजि हरि भजैं, जिन का मता अगाध ॥ १ ॥
दया दान अरु दीनता, दीना-नाथ दयाल।
हिरदै सीतल दृष्टि सम, निरखत करैं निहाल ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ नहिं, खट बिकार करि हीन।
पंथ कुपंथ न जानहीं, ब्रह्म भाव रस लीन ॥ ३ ॥
साध संग संसार में, दुरलभ मनुष सरीर।
सतसंगति सूँ मिटत है, त्रिबिध ताप की पीर ॥ ४ ॥

(१) जिस तरह चिड़िया का बच्चा डैना फड़फड़ाता है पर उड़ नहीं सकता ऐसी ही मेरी दशा है। (२) होकर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

साधू सिंह समान है, गरजत अनुभव ज्ञान।
करम भरम सब भजि गये, "दया" दुर्यो[1] अज्ञान ॥ ५ ॥
साध रूप हरि आप हैं, पावन परम पुरान।
मेटैं दुबिधा जीव की, सब का करैं कल्यान ॥ ६ ॥
साध संग छिन एक को, पुन्न न बरन्यो जाय।
रति[2] उपजै हरि नाम सूँ, सबही पाप बिलाय ॥ ७ ॥
कोटि जग्य ब्रत नेम तिथि, साध संग में होय।
बिषय ब्याधि सब मिटत हैं, सांति रूप सुख जोय ॥ ८ ॥
साधन के संसा नहीं, "दया" सर्ब सुख जान।
मन की दुबिधा मेटि करि, कियो राम-रस पान ॥ ९ ॥
साधू बिरला जक्त में, हर्ष सोक करि हीन।
कहन सुनन कूँ बहुत हैं, जन जन आगे दीन ॥ १०॥
कलि केवल संसार में, और न कोउ उपाय।
साध संग हरि नाम बिन, मन की तपन न जाय ॥ ११॥
साध संग जग में बड़ो, जो करि जानै कोय।
आधो छिन सतसंग को, कलमख डारै खोय ॥ १२॥

॥ सूरमा ॥

जग तजि हरि भजि दया गहि, कूर कपट सब छाड़ि।
हरि सन्मुख गुरु-ज्ञान गहि, मनहीं सूँ रन माँड़ि[3] ॥ १ ॥
सूरा वही सराहिये, बिन सिर लड़त कबंद[4]।
लोक लाज कुल कान कूँ, तोड़ि होत निर्बंद ॥ २ ॥

---

(१) दूर हुआ। (२) लौ, प्रेम। (३) लड़ाई ठानो। (४) एक राक्षस का नाम जिस का सिर गदा की चोट लगने से धड़ के भीतर घुस गया था लेकिन फिर भी वह बराबर लड़ता था।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुनत सबद नीसान[1] कूँ, मन मैं उठत उमंग।
ज्ञान गुरज[2] हथियार गहि, करत जुद्ध अरि[3] संग ॥ ३ ॥
जो पग धरत सो दृढ़ धरत, पग पाछे नहिँ देत।
अहंकार कूँ मार करि, राम रूप जस लेत ॥ ४ ॥
आप मरन भय दूर करि, मारत रिपु[3] को जाय।
महा मोह दल दलन करि, रहै सरूप समाय ॥ ५ ॥
सूरा सन्मुख समर[4] मैं, घायल होत निसंक।
यौँ साधू संसार मैँ, जग के सहै कलंक ॥ ६ ॥
कायर कंपै देख करि, साधू को संग्राम।
सीस उतारै भुइँ धरै, जब पावै निज ठाम ॥ ७ ॥

॥ परिचय ॥

पिय को रूप अनूप लखि कोटि भान उँजियार।
"दया" सकल दुख मिटि गयो, प्रगट भयो सुख सार ॥ १ ॥
अनँत भान उँजियार तहँ, प्रगटी अद्भुत जोत।
चकचौंधी सी लगत है, मनसा सीतल होत ॥ २ ॥
सेत सिँहासन पीव को, महा तेजमय धाम।
पुरुषोत्तम राजत तहाँ, "दया" करत परनाम ॥ ३ ॥
बिन दामिनि उँजियार अति, बिन घन परत फुहार।
मगन भयो मनुवाँ तहाँ, दया निहार निहार ॥ ४ ॥
वही एक व्यापक सकल, ज्योँ मनिका[5] में डोर।
थिर चर कीट पतंग मैँ, "दया' न दूजो और ॥ ५ ॥

(१) डंका। (२) गदा, सोटा। (३) दुश्मन। (४) लड़ाई। (५) माला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ मिश्रित ॥

महा मोह की नींद में, सोवत सब संसार।
"दया" जगी गुरु दया सूँ, ज्ञान भान उँजियार ॥ १ ॥
भोर भयो गुरु ज्ञान सूँ, मिटी नींद अज्ञान।
रैन अबिद्या मिटि गई, प्रगट्यो अनुभव भान ॥ २ ॥
जागत ही अज्ञान सूँ, दरस्यो हरि गुरु रूप।
जिनके चरन परस "दया", पायो तत्व अनूप ॥ ३ ॥
अबिनासी चेतन पुरुष, जग झूठो जंजाल।
हरि चितवन में मन मगन, सुख पायो तत्काल ॥ ४ ॥
"दया" रूप अद्भुत लख्यो, अक्री[1] अमर अगाध।
निरखत ही सब मिटि गई, काल ज्वाल अरु ब्याध ॥ ५ ॥
नेत नेत करि बेद जेहिँ, गावत है दिन रैन।
"दया कुँवर" चरनदास गुरु, मोहिँ लखायौ सैन ॥ ६ ॥
सकल ठौर में रहत है, सब गुन रहित अपार।
"दया कुँवर" सूँ दया करि, सतगुरु कह्यो बिचार ॥ ७ ॥
अजर अमर अविगत अमित, अनुभय अलख अभेव।
अबिनासी आनन्दमय, अभय सो आनँद देव ॥ ८ ॥
सब साधन की दास हूँ, मो में नहिँ कछु ज्ञान।
हरि जन मो पै दया करि, अपनी लीजै जान ॥ ९ ॥

---

(१) निराकार।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग़रीबदासजी

जीवन समय—१७७४ से १८३५ तक। जन्म और सतसंग स्थान—मौज़ा छुड़ानी ज़िला रुहतक (पंजाब)। जाति और आश्रम—जाट, गृहस्थ। गुरू—कबीर साहिब।

बाईस बरस की अवस्था में इन महात्मा ने अपनी सत्रह हज़ार साखी और चौपाई के ग्रंथ क़ी रचना आरंभ की जिस में कबीर साहिब की सात हज़ार साखी शामिल हैं। उसी ग्रंथ के चुने हुए अंग और कड़ियाँ विचित्र टिप्पनी और जीवन-चरित्र के साथ वेलवेडियर प्रेस इलाहाबाद में छपी हैं।

॥ गुरुदेव ॥

पुर पट्टन पर लोक है, अदली सतगुरु सार।
भगति हेत से ऊतरे, पाया हम दीदार ॥ १ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला, अललपच्छ[1] की जात।
काया माया ना उहाँ, नहीं पिंड नहिँ नात ॥ २ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला, उजल हिरंबर आद।
भलका ज्ञान कमान का, घालत है सर साध ॥ ३ ॥

ऐसा सतगुर हम मिला, सुन्न बिदेसी आप।
रोम रोम परकास है, देँही अजपा जाप ॥ ४ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला, मगन किये मुस्ताक।
प्याला प्रेम पिलाइया, गगन मँडल गरगाप[2] ॥ ५ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला, गलताना[2] गुलजार।
वार पार की मति नहीं, नहिँ हलका नहिँ भार ॥ ६ ॥

ऐसा सतगुरु हम मिला, बेपरवाह अबंध।
परम हंस पूरन पुरुष, रोम रोम रबि चंद ॥ ७ ॥

---

(१) एक आकाशी चिड़िया जो आकाश ही में अंडा देती है और अंडे से पृथ्वी पर पहुँचने के पहिले बच्चा निकल कर ऊपर को उड़ जाता है। (२) मतवाला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऐसा सतगुरु हम मिला, तेज पुंज का अंग।
झिलमिल नूर जहूर है, रूप रेख नहिँ रंग ॥ ८॥
ऐसा सतगुरु हम मिला, तेज पुंज की लोय[1]।
तन मन अरपौँ सीस हू, होनी होय सो होय ॥ ९ ॥
ऐसा सतगुरु हम मिला, खोले बज्र कपाट।
अगम भूमि मेँ गम करी, उतरे औघट घाट ॥१०॥
ऐसा सतगुरु हम मिला, मारी गाँसी सैन।
रोम रोम मेँ सालती, पलक नहीँ है चैन ॥११॥
माया का रस पीय कर, फूटि गये दोउ नैन।
ऐसा सतगुरु हम मिला, बास दिया सुख चैन ॥१२॥
सतगुरु के लच्छन कहूँ, अचल बिहंगम चाल।
हम अमरापुर ले गया, ज्ञान सबद के नाल ॥१३॥
जिंदा जोगी जगत-गुरु, मालिक मुरसिद पीव।
काल करम लागै नहीँ, नहिँ संका नहिँ सीँव[2] ॥१४॥
सतगुरु मारा बान कस, कैबर गाँसी खैँच।
भरम करम सब जरि गये, लई कुबुधि सब ऐँच ॥१५॥
सतगुरु आये दया करि, ऐसे दीन-दयाल।
बंदि छुड़ाई बिरद सुनि, जठर अगिन प्रतिपाल ॥१६॥
जोनी संकट मेटिहैँ, अधो मुखी नहिँ आय।
ऐसा सतगुरु सेइये, जम से लेत छुड़ाय ॥१७॥
ऐसा सतगुरु हम मिला, भवसागर के माँहि।
नौका नाम चढ़ाय करि, ले राखे निज ठाँहि ॥१८॥

---

(१) लौ। (२) सीमा, हद।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऐसा सतगुरु हम मिला, भवसागर के बीच।
खेवट सब कूँ खेवता, क्या उत्तम क्या नीच ॥१९॥
साचा सतगुरु जो मिलै, हंसा पावै थीर।
झकझोलै जूनी मिटै, मुरसिद गहिर गँभीर ॥२०॥
साहिब से सतगुरु भये, सतगुरु से भये साध।
ये तीनों अँग एक हैं, गति कछु अगम अगाध ॥२१॥
सतगुरु के सदके करूँ, तन मन धन कुरबान।
दिल के अंदर देहरा, तहाँ मिले भगवान ॥२२॥
दरस परस देवल धुजा, फरकै दिन राती।
जोत अखंडित जगमगै, दीपक बिन बाती ॥२३॥
ऐसा सतगुरु सेइये, सबद समाना होय।
भवसागर में डूबते, पार लगावै सोय ॥२४॥
सतगुरु पूरन ब्रह्म है, सतगुरु आप अलेख।
सतगुरु रमता राम है, या में मीन न मेख ॥२५॥
सतगुरु आदि अनादि है, सतगुरु मध अरु मूल।
सतगुरु कूँ सिजदा करूँ, एक पलक नहिं भूल ॥२६॥
पुर पट्टन की पैंठ में, सतगुरु ले गया मोय।
सिर साँटे सौदा हुआ, अगली पिछली खोय ॥२७॥
सतगुरु पारस रूप है, हमरी लोहा जात।
पलक बीच कंचन करै, पलटै पिंडा गात ॥२८॥
पुर पट्टन की पैंठ में, सतगुरु ले गया साथ।
जहँ हीरे मानिक बिकैं, पारस लागा हाथ ॥२९॥
पुर पट्टन की पैंठ में, प्रेम पियाले खूब।
जहँ हम सतगुरु लेगया, मतवाला महबूब ॥३०॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हम पसुआ-जन[1] जीव हैँ, सतगुरु जाति भिरंग।
मुरदे से जिन्दा करैँ, पलट धरत हैँ अंग[2] ॥३१॥

॥ नाम ॥

पारस तुम्हरा नाम है, लोहा हमरी जात।
जड़ सेती जड़ पलटिया, तुम कूँ केतिक बात ॥ १ ॥
ऐसा अविगत नाम है, आदि अंत नहिँ कोय।
वार पार कीमत नहीँ, अचल निरंतर सोय ॥ २ ॥
ऐसा अविगत नाम है, अगम अगोचर नूर।
सुन्न सनेही आदि है, सकल लोक भरपूर ॥ ३ ॥
दुहूँ दीन मध ऐब है, अलह अलख पहिचान।
नाम निरंतर लीजिये, भगत हेत उत्पान ॥ ४ ॥
सकल बियापी सुरत मेँ, मन पवना गहि राख।
रोम रोम धुनि होत है, सतगुरु बोले साख ॥ ५ ॥
अचल अभंगी नाम है, गलताना दम लीन[3]।
सुरत निरत के अंतरे, बाजे अनहद बीन ॥ ६ ॥
अगम अनाहद भूमि है, जहाँ नाम का दीप।
एक पलक बिछुरै नहीँ, रहता नैनोँ बीच ॥ ७ ॥
ऐसा निरमल नाम है, निरमल करै सरीर।
और ज्ञान मँडलीक[4] हैँ, चकवै[5] ज्ञान कबीर ॥ ८ ॥
नामै निःचल निरमला, अनँत लोक मेँ गाज।
निरगुन सरगुन क्या कहै, प्रगटा संतोँ काज ॥ ९ ॥

---

(१) नरपशु। (२) जैसे भृंगी (लखोहरी) झींगुर वग़ैरह को मार कर अपने खोंते में उस पर बैठ कर अपने चीँकार शब्द से जिला कर उसको अपना ऐसा रूप वाला बना लेती है। (२) महव, रत। (४) छोटे छोटे मंडल के राजा। (५) चक्रवर्ती राजा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अबिनासी के नाम में, कौन नाम निज मूल।
सुरत निरत से खोजि ले, बास बड़ी अक[1] फूल ॥१०॥
फूल सही सरगुन कहा, निरगुन गंध सुगंध।
मन माली के बाग में, भँवर रहा कहँ बंध ॥११॥
नाम बिना सूना नगर, पड़ा सकल में सोर।
लूट न लूटी बंदगी, हो गया हंसा भोर ॥१२॥
नाम रसायन पीजिये, यहि औसर यहि दाव।
फिर पीछे पछतायगा, चला चली हो जाव ॥१३॥
राम नाम निज सार है, मूल मंत्र मन माहिँ।
पिँड ब्रह्मंड से रहित है, जननी जाया नाहिँ ॥१४॥
नाम रटत नहिँ ढील कर, हर दम नाम उचार।
अमी महा रस पीजिये, बहुतक बारंबार ॥१५॥
गगन मँडल में रहत है, अबिनासी आलेख।
जुगन जुगन सतसंग है, धरि धरि खेलै भेख ॥१६॥
काया माया खंड है, खंड राज अरु पाट।
अमर नाम निज बंदगी, सतगुरु से भइ साँट ॥१७॥
अमर अनाहद नाम है, निरभय अपरंपार।
रहता रमता राम है, सतगुरु चरन जुहार ॥१८॥
बिन रसना है बंदगी, बिन चस्माँ दीदार।
बिन सरवन बानी सुनै, निर्मल तत्त निहार ॥१९॥
मैं सौदागर नाम का, टाँडे[2] पड़ा वहीर[3]।
लदते लदते लादिये, बहुर न फेरा[4] बीर ॥२०॥
नाम बिना क्या होत है, जप तप संजम ध्यान।
बाहर भरमै मानवी, अभि अंतर में जान ॥२१॥

(१) या। (२) बंजारों का झुंड। (३) माल, जिन्स। (४) आवागमन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाम बिना निपजै नहीँ, जप तप करिहैँ कोटि।
लख चौरासी त्यार है, मूड़ मूड़ाया घोँटि ॥२२॥
नाम सरोवर सार है, सोहं सुरत लगाय।
ज्ञान गलीचे बैठ करि, सुन्न सरोवर न्हाय ॥२३॥
मान सरोवरं न्हाइये, परमहंस का मेल।
बिना चुंच मोती चुँगै, अगम अगोचर खेल ॥२४॥
ऐसा नाम अगाध है, अबिनासी गंभीर।
हद् जीवोँ से दूर है, बेहदियोँ के तीर ॥२५॥
ऐसा नाम अगाध है, बेकीमत करतार।
सेस सहस फन रटत है, अजहुँ न पाया पार ॥२६॥

॥ सुमिरन ॥

नाम जपा तो क्या हुआ, उर में नहीँ यकीन।
चोर मुसै घर लूटहीँ, पाँच पचीसो तीन ॥ १ ॥
कोटि गऊ जे दान दे, कोटि जज्ञ जेवनार।
कोटि कूप तीरथ खनै[1], मिटै नहीँ जम मार ॥ २ ॥
कोटिन तीरथ ब्रत करै, कोटिन गज करि दान।
कोटि अस्व बिप्रोँ दिये, मिटै न खैँचा तान ॥ ३ ॥
सुमिरन तब ही जानिये, जब रोम रोम धुनि होय।
कुंज कमल में बैठ करि, माला फेरै सोय ॥ ४ ॥

॥ अनहद ॥

गगन गरज घन बरषहीँ, बाजै अनहद तूर।
लै लागी तब जानिये, सन्मुख सदा हजूर ॥ १ ॥

(१) खोदै।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गगन गरज घन बरषहीं, बाजै दीरघ नाद।
अमरापुर आसन करैं, जिन के मते अगाध ॥ २ ॥

॥ भक्ति ॥

बिना भगति क्या होत है, कासी करवत[1] लेह।
मिटै नहीं मन बासना, बहु बिधि भरम सँदेह ॥ १ ॥
भगति बिना क्या होत है, भरम रहा संसार।
रत्ती कंचन पाय नहिँ, रावन चलती बार[2] ॥ २ ॥
सुरत लगै अरु मन लगै, लगै निरत धुन ध्यान।
चार जुगन की बंदगी, एक पलक परमान ॥ ३ ॥
सुरत लगै अरु मन लगै, लगै निरत तिस माहिँ।
एक पलक तहँ संचरै, कोटि पाप अघ जाहिँ ॥ ४ ॥
अविगत की अविगत कथा, अविगत है सब ख्याल।
अविगत सोँ अविगत मिलै, कर जोरै तब काल ॥ ५ ॥
नाम रसायन पीजिये, चोखा फूल चुवाय।
सुन्न सरोवर हंस मन, पीया प्रेम अघाय ॥ ६ ॥
अधम-उधारन भगति है, अधम-उधारन नावँ।
अधम-उधारन संत हैँ, जिनके मैँ बलि जावँ ॥ ७ ॥
कहता दास गरीब है, बाँदी-जाद[3] गुलाम।
तुम हो तैसी कीजिये, भगति हिरंबर नाम ॥ ८ ॥
जैसे माता गर्भ को, राखै जतन बनाय।
ठेस लगै ता छीन है, ऐसे भगति दुराय[4] ॥ ९ ॥

(१) काशी में काशी करवत एक स्थान है जहाँ एक कुए में आरे लगे थे। और लोग उस पर मुक्ति के हेतु कट मरते थे। (२) कहते हैँ कि लंका सोने की बनी थी लेकिन रावन जो राम-द्रोही था मरते समय खाली हाथ गया। (३) खाना-ज़ाद। (४) छिपाय।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ लव ॥

लै लागी तब जानिये, जग सूँ रहै उदास।
नाम रटै निरदुंद है, अनहदपुर में बास ॥ १ ॥
लै लागी तब जानिये, हर दम नाम ऊचार।
एकै मन एकै दसा, साईं के दरबार ॥ २ ॥
ये पुरपट्टन ये गली, बहुरि न देखै आय।
सतगुरु सूँ सौदा हुआ, भर ले माल अघाय ॥ ३ ॥
ज्ञान जोग अरु भगति ले, सील सँतोष बिबेक।
लै लागी तब जानिये, जब दिल आवै एक ॥ ४ ॥
गगन गरजि भाठी चुए, हीरा घंटिक सार।
लै लागी तब जानिये, उतरै नहीँ खुमार ॥ ५ ॥

॥ चितावनी ॥

पानी की इक बूँद सूँ, साज बनाया जीव।
अंदर बहुत अँदेस था, बाहर बिसरा पीव[1] ॥ १ ॥
धरनीधर जाना नहीँ, कीन्हा कोटि जतन्न।
जल से साज बनाय करि, मानुष किया रतन्न ॥ २ ॥
अधोमुखी जब रहे थे, तल सिर ऊपर पाँव।
राखनहारा राखिया, जठर अगिन की लाव[2] ॥ ३ ॥
तुही तुही तुतकार थी, जपता अजपा जाप।
बाहर आकर भरमिया, बहुत उठाये पाप ॥ ४ ॥
जठर अगिन से राखिया, ना साईं गुन भूल।
वह साहिब दरहाल है, क्योँ बोवत है सूल ॥ ५ ॥

(१) पुराणों में कथा है कि जब प्राणी गर्भ में आता है तब उसे ईश्वर का निरंतर दर्शन होता है और ईश्वर से प्रार्थना किया करता है कि इस मलाशय से मुझे बाहर कीजिये मैं प्रतिदिन आप का ध्यान किया करूँगा, परन्तु बाहर आते ही संसार की माया से अज्ञानी होकर उस को भूल जाता है। (२) लवर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आध घड़ी की अध घड़ी, आध घड़ी की आध।
साधू सेती गोस्टी[1], जो कीजै सो लाभ ॥ ६ ॥
पाव घड़ी तो याद कर, नीमाना सन[2] खोय।
सतगुरु हेला देत है, बिषै सूल नहिँ बोय ॥ ७ ॥
अलिफ अलह कूँ याद कर, कादिर कूँ कुरबान।
साईँ सेती तोड़ कर, राखा अधम जहान ॥ ८ ॥
अलिफ अलह कूँ याद कर, जिन्ह कीन्हा यह साज।
उस साहिब कूँ याद कर, पाला[3] बिन जल नाज ॥ ९ ॥
संसारी में आन करि, कहा किया रे मूढ़।
सूआ सेमर सेइया, लागे डोँड़े टूट ॥१०॥
आदि समय चेता नहीँ, अंत समय अँधियार।
मद्ध समय माया रते, पाकड़ लिये गँवार ॥११॥
अंत समय बीतै घनी, तन मन धरै न धीर।
उस साहिब कूँ याद कर, जिन्ह यह धरा सरीर ॥१२॥
यह माटी का महल है, ता से कैसा नेह।
जो साईँ मिलि जात है, तौ पारायन देँह ॥१३॥
यह माटी का महल है, छार मिलै छिन माहिँ।
चार सकस[4] काँधे धरे, मरघट कूँ ले जाहिँ ॥१४॥
जार बार तन फूँकिया, होगा हाहाकार।
चेत सकै तो चेतिये, सतगुरु कहैँ पुकार ॥१५॥
जार बार तन फूँकिये, मरघट मंडन माँड।
या तन की होरी बनी, मिटी न जन की डाँड ॥१६॥
माया हुई तो क्या हुआ, भूल रहा नर भूत।
पिता कहैगा कौन कूँ, तू बेस्वा का पूत ॥१७॥

(१) बात चीत। (२) पूरा बरस। (३) पालन किया। (४) आदमी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Varanasi

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लख चौरासी बंध तें, सतगुरु लेत छुड़ाय।
जे उर अंतर नाम है, जोनी बहुरि न जाय॥ १८॥
इस माटी के महल में, मन बाँधी बिष पोट।
अहरन[1] पर हीरा धरा, ताहि सहै घन चोट॥ १९॥
काचा हीरा किरच है, नहीं सहै घन मार।
ऐसा मन यह है रहा, लेखा ले करतार॥ २०॥
हीरा घन की चोट सहि, साचे कूँ नहिँ आँच।
वह दरगह[2] में क्या कहै, जाके संग हैं पाँच[3]॥ २१॥
संतों सेतीं ओलने[4], संसारी से नेह।
सो दरगह में मारिये, सिर में देकर खेह॥ २२॥
मात पिता सुत बंधवा, देखैं कुल के लोग।
रे नर देखत फूँकिये, करते हैं सब सोग॥ २३॥
महल मँडेरी नीम सब, चलै कौन के साथ।
कागा रौला हो रहा, कछू न लागा हाथ॥ २४॥
पंछी उड़ै अकास कूँ, कित कूँ कीन्हा गौन।
यह मन ऐसे जात है, जैसे बुद्बुद्[5] पौन॥ २५॥
धन संचै तो सील का, दूजा परम सँतोख।
ज्ञान रतन भाजन[6] भरो, असल खजाना रोक॥ २६॥
दया धर्म दो मुकट हैं, बुद्धि बिबेक बिचार।
हर दम हाजिर हूजिये, सौदा त्यारंत्यार॥ २७॥
नाम अभय पद निरमला, अटल अनूपम एक।
यह सौदा सत कीजिये, बनिजी बनिज अलेख॥ २८॥

---

(१) निहाई। (२) दरबार। (३) पाँच दूत। (४) शिकायत। (५) बुलबुला।
(६) बरतन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गगन मँडल में रमि रहा, तेरा संगी सोय।
बाहर भरमे हानि है, अंतर दीपक जोय॥ २९॥
चित के अंदर चाँदना, कोटि सूर ससि भान।
दिल के अंदर देहरा, काहे पूजि पषान॥ ३०॥
रतन रसायन नाम है, मुक्ता महल मजीत[१]।
अंधे कूँ सूझै नहीँ, आगे जलै अँगीठ॥ ३१॥
रतन खजाना नाम है, माल अजोख अपार।
यह सौदा सत कीजिये, दुगुने तिगुने चार॥ ३२॥
मन माया की डुगडुगी, बाजत है मिरदंग।
चेत सकै तो चेतिये, जाना तुझे निहंग[२]॥ ३३॥
फूँक फाँक फारिग किया, कहीँ न पाया खोज।
चेत सकै तो चेतिये, ये माया के चोज[३]॥ ३४॥
ज्योँ कुंजर सिर धुनत है, अगला[४] जनम सुझंत।
अब की हेले[५] नर करैं, तो सेऊँ पूरे संत॥ ३५॥

॥ बिश्वास ॥

सील संतोष बिबेक बुधि, दया धर्म इक तार।
बिन निहचै पावै नहीँ, साहिब का दीदार॥ १॥
कासी मरै सो जाय मुक्ति कूँ, मगहर गदहा होई।
पुरुष कबीर चले मगहर कूँ, ऐसा निहचा जोई[६]॥ २॥

---

(१) मस्जिद। (२) नंगा। (३) बिलास। (४) पुरबला। (५) बार। (६) कबीर साहिब काशी से जाकर मगहर में रहे थे और वहीं शरीर त्याग किया मगहर को मगहर देश बोलते हैं। और लोगोँ का विश्वास है कि वहाँ मरने से गधे की जोनि मिलती है क्योंकि गुरुद्रोही राजा त्रिशंकु का शरीर जो अधर में लटक रहा है उस की छाया उस भूमि पर पड़ने से वह अपवित्र हो गई है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ दुविधा ॥

हरष सोग है स्वान गति, संसा सरप सरीर।
राग द्वेष बड़ रोग है, जम के परे जँजीर ॥ १ ॥
करम भरम भारी लगे, संसा सूल बबूल।
डाली पातों डोलते, परसत नाहीं मूल ॥ २ ॥

॥ समरथ ॥

समरथ का सरना लिया, ताहि न चाँपै काल।
पारब्रह्म का ध्यान धर, होत न बाँका बाल ॥ १ ॥
चरन कमल के ध्यान से, कोटि बिघन टल जाहिँ।
राजा होवै लोक का, जहाँ परै हुम[1] छाँहिँ ॥ २ ॥

॥ वेहद ॥

गगन मँडल में रमि रहा, गलताना महबूब।
वार पार नहिँ छेव[2] है, अबिचल मूरत खूब ॥ १ ॥
अजब महल बारीक है, अजब सुरत बारीक।
अजब निरत बारीक है, महल धसे बिन बीक[3] ॥ २ ॥
पारब्रह्म बिन परख है, कीमत मोल न तोल।
बिना वजन अरु राग है, बहुरंगी अनबोल ॥ ३ ॥
सजन सलोना राम है, अब मत अंतहिँ जाय।
बाहर भीतर एक है, सब घट रहा समाय ॥ ४ ॥
सजन सलोना राम है, अचल अभंगी एक।
आदि अंत जा के नहीं, ज्यों का त्योंहीं देख ॥ ५ ॥
तुमहीं सोहं सुरत हो, तुमहीं मन अरु पौन।
इस में दूसर कौन है, आवै जाय सो कौन ॥ ६ ॥

---

(१) हुमा चिड़िया जिस की निस्बत कहते हैं कि उस का साया पड़ने से आदमी बादशाह हो जाता है। (२) आकार, खंड। (३) डर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस में दूसर कर्म है, बँधो अबिद्या गाँठ।
पाँच पचीसो ले गये, अपने अपने बाट ॥ ७ ॥

॥ विनय ॥

साहिब मेरी बीनती, सुनो गरीब-निवाज।
जल की बूँद महल रचा, भला बनाया साज़ ॥ १ ॥
साहिब मेरी बीनती, सुनिये अर्स[1] अवाज।
मादर पिदर करीम तू, पुत्र पिता को लाज ॥ २ ॥
साहिब मेरी बीनती, कर जोरैं करतार।
तन मन धन कुरबान है, दीजै मोहिँ दीदार ॥ ३ ॥
सील सँतोष बिबेक बुध, दया धर्म इकतार।
अक्कल यकीन इमान रख, गही बस्तु निज सार ॥ ४ ॥
साहिब तेरी साहिबी, कैसे जानी जाय।
त्रिसरेनू[2] से झीन है, नैनों रहा समाय ॥ ५ ॥
अनँत कोटि ब्रह्मंड का, रचनहार जगदीस।
ऐसा सूच्छम रूप धरि, आन बिराजा सीस ॥ ६ ॥
साहिब पुरुष करीम तूँ, अविगत अपरंपार।
पल पल माहैं बंदगी, निरधारों आधार ॥ ७ ॥
दरदमंद दरवेस तूँ, दिल-दाना महबूब।
अचल बिसंभर बसि रहा, सूरत मूरत खूब ॥ ८ ॥
सुरत निरत से झीन है, जगन्नाथ जगदीस।
त्रिकुटी छाजे पुर रहै, है ईसन का ईस ॥ ९ ॥
साहिब तेरी साहिबी, कहा कहूँ करतार।
पलक पलक की दीठ में, पूरन ब्रह्म हमार ॥ १० ॥

---

(१) सातवाँ आसमान। (२) तीन परमाणु का एक त्रिसरेणु होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एते करता कहाँ हैं, वह तो साहिब एक।
जैसे फूटी आरसी, टूक टूक में देख ॥११॥
करौं बीनती बंदगी, साहिब पुरुष सुभान।
संख असंखी बरन है, कैसे रचा जहान ॥१२॥
साहिब तेरी साहिबी, समझ परै नहिं मोहिं।
एता रूप जहान जग, कैसे सिरजा तोहिं ॥१३॥
एक बीज इक बिंदु है, एक महल इक द्वार।
चरन कमल कुरबान जाँ, सिरजे रूप अपार ॥१४॥
मौला जल से थल करै, थल से जल कर देत।
साहिब तेरी साहिबी, स्याम कहूँ की सेत ॥१५॥
साहिब मेरा मिहरबाँ, सुनिये अर्स अवाज।
पंजा राखो सीस पर, जमहीं होत तिरास ॥१६॥
मादर पिदर परान तूँ, साहिब समरथ आप।
रोम रोम धुनि होत है, सबद सिंधु परकास ॥१७॥
तन मन धन जगदीस का, रती सुमेर समान।
मिहर दया कर मुझ दिया, तन मन वारौं प्रान ॥१८॥
यह माया जगदीस की, अपनी कहैं गँवार।
जमपुर धक्के खायँगे, नाहक करैं बिगार ॥१९॥
मैं समरथ के आसरे, दमक दमक करतार।
गफलत मेरी दूर कर, खड़ा रहूँ दरबार ॥२०॥
सुनो पुरुष मेरी बीनती, साहिब दीन-दयाल।
पतित-उधारन साइयाँ, तुम हो नजर निहाल ॥२१॥
नागदमन[1] निरगुन जड़ी, ऐसा तुम्हरा नाम।
तच्छक तीछा डरत है, हर दम जप ले नाम ॥२२॥

---

(१) नाम साँप की जड़ी का।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आतम इंद्री कारने, मत भटकावै मोहिँ।
जगन्नाथ जगदीस गुरु, सरना आया तोहिँ ॥ २३॥
हुमा छाँह जा पर परै, पिरथी-नाथ कहाय।
पसु पंछी आदम सबै, सनमुख परखै ताय ॥ २४॥
दिब्य-दृष्टि देवा दयाल, सतगुरु संत सुजान।
तिरलोकी के जीव कूँ, परख लेत परवान ॥ २५॥
अगले पिछले जन्म कूँ, जानत है जगदीस।
मुंडमाल सिव के गले, पहिर रहे ज्यों ईस[1] ॥ २६॥
दम सूँ दम कूँ समझि ले, उठत बैठ आराध।
रंचक ध्यान समान सुध, पूरन सकल मुराद ॥ २७॥
अनंत कोटि ब्रह्मंड में, बटक[2] बीज बिस्तार।
सुरत सरूपी पुरुष है, तन मन धन सब वार ॥ २८॥
रतन अमोली फूल है, सो साहिब के सीस।
जो रँग नाहीं स्रिष्टि में, देखा बिस्वे बीस ॥ २९॥
सतगुरु के सदके करूँ, अनँत कोटि ब्रह्मंड।
निरगुन नाम निरंजना, मेटत है जम दंड ॥ ३०॥
दिल के अंदर देहरा, जा देवल में देव।
हर दम साखी-भूत है, करो तासु की सेव ॥ ३१॥
जल का महल बनाइया, धन समरथ साईं।
कारीगर कुरबान जाँ, कुछ कीमत नाईं ॥ ३२॥

---

(१) एक समय पारबतीजी ने शिवजी से पूछा कि यह मुंडमाल जो आप पहिने हुए हैँ उसमेँ किन किन के सिर हैँ। शिवजी बोले कि तुम हमको इतनी प्रिय हो कि जितने जन्म तुमने धरे हैँ तुम्हारे हर एक शरीर का मुंड मैँने अपने गले में डाल रक्खा है। (२) बड़ का पेड़।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कोटि जतन करि राखिया, जठरा के माईं ।
गर्भ बास की बीनती, सुनि पुरुष गुसाईं ॥ ३३॥
अष्ट कमल दल आरती, हर दम हरि होई ।
नाभि कमल में प्रान-नाथ, राखे निरमोई ॥ ३४॥
माया की बुरकी[1] पड़ी, मारग नहिँ पावै ।
दस इंद्री लारे लगी, अब कौन छुटावै ॥ ३५॥
बड़वा नल का द्वार है, नाभी के नीचे ।
जो सतगुरु भेदी मिलै, तहँ अमृत सींचे ॥ ३६॥
मन माया मौजूद है, काया गढ़ माहीँ ।
बीच पुरंजन[2] बसत है, सो पावै नाहीँ ॥ ३७॥
पाँच भार[3] जो आदि है, जा के सँग डोलै ।
तीन लोक कूँ खा गई, मुख से नहिँ बोलै ॥ ३८॥
बड़ी कुसंगन सुपचनी, सुध बुध बिसरावै ।
चिंता चेरी चूहरी[4], नित नाद बजावै ॥ ३९॥
बीच पुरंजन बैठ कर, बहु नाच नचावै ।
लोक परगने बाँट कर, बड़दच्छा[5] ध्यावै ॥ ४०॥
मनसा मालिन आनकर, नित सेज बिछावै ।
तहाँ पुरंजन बैठ कर, नित भोग करावै ॥ ४१॥
तीन लोक की मेदनी[6], सब हाजिर होई ।
मन रंगी के रंग में, रंगा सब कोई ॥ ४२॥
आसन असथल उठ गये, कुछ पिंड न आना ।
फेर पुरंजन आनकर, घाला घमसाना ॥ ४३॥

(१) परदा। (२) निरंजन, त्रिलोकीनाथ। (३) बोझ अर्थात तत्व। (४) भंगन। (५) वरिष्ठा। (६) पृथ्वी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुरमति दूती और है, इक दारुन माया।
जैसे काँजी[1] दूध मेँ, घृत खंड कराया ॥ ४४॥
द्वादस कोटि कटक चढ़ै, कुछ गिनती नाहीँ।
लालच लोचन की बहै, जिन फौजाँ माहीँ ॥ ४५॥
संसा सोच सराय मेँ, सूतक दिन राती।
जीवतही जूती परै, जम तोरै छाती ॥ ४६॥
रहजन[2] कोटि अनंत हैँ, काया गढ़ माहीँ।
ममता माया बिस्तरी, तिर्गुन तन माहीँ ॥ ४७॥
बाँकी फौज पुरंजना, कुछ पार न पावै।
मन राजा के राज मेँ, क्या भगति करावै ॥ ४८॥
मन के मारे मुनि बहे, नारद से ज्ञानी।
सिंगी रिषि पारासरा, कीन्हे रजधानी ॥ ४९॥
डरै पुरंजन एक से, जो जाना जाई।
निज मन का आरंभ करि, सुरती लौ लाई ॥ ५०॥
सील सँतोष बिबेक से, जा के दरबाना।
काम क्रोध भागे जबै, गढ देखा सामाँ ॥ ५१॥
लोभ मोह मारे परे, सना सब भागी।
सतगुरु के परताप से, जब आतम जागी ॥ ५२॥
पुरुष पुरंजन पाकड़ा, गढ़ घेरा जाई।
निज मन की फौजाँ धसीँ, काया गढ़ माहीँ ॥ ५३॥
अकल यकीन इमान औ, मनसा भइ थीरं।
अजपा तारी धुन लगी, जम कटे जँजीरं ॥ ५४॥

---

(१) सिरका। (२) बटमार, ठग।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

थाक्यो मन पिंगल चढ़ा, परवान परेवा[१]।
कोटि पद्म की दामिनी, गरजत बहु भेवा ॥ ५५॥
प्रान अपान[२] समान कर, सुरती लौ लाई।
दुहुबर कोट ढहाइया, अरु तहँ बड़ खाँई ॥ ५६॥
भरम बुरज भाने सबै, सोलह सुर धाई।
सत्रह सुरती हंसिनी, सब खबरैं लाई ॥ ५७॥

॥ साध ॥

धन जननी धन भूमि धन, धन नगरी धन देस।
धन करनी धन सुकुल धन, जहाँ साध परबेस ॥ १ ॥
साईं सरिखे संत हैं, या में मीन न मेख।
परदा अंग अनादि है, बाहर भीतर एक ॥ २ ॥
साईं सरिखे देख ले, बरतावै जे कोय।
सप्त कोस जल चढ़ गया, जहाँ साध मुख धोय[३] ॥ ३ ॥
बृच्छ नदी औ साध जन, तीनौं एक सुभाव।
जल न्हावै फल बृच्छ दे, साध लखावै नाँव ॥ ४ ॥
ऐसे साधू संत जन, पारब्रह्म की जात।
सदा रते हरि नाम सूँ, अंतर नाहीं घात ॥ ५ ॥
साध समुंदर कमल गति, माहैं साईं गंध।
जिन में दूजी भिन्न क्या, सो साधू निरबंध ॥ ६ ॥
नौ नेजे जो जल चढ़ै, कमल न भीँजै गात।
माहैं ज्ञान सुगंध सर[४], आदि अंत का साथ ॥ ७ ॥

(१) कबूतर के समान। (२) नीचे की वायु। (३) गिरनार पहाड़ जहाँ अच्छे साधू रहते हैं वहाँ से सात कोस नीचे हनुमान धारा गिरती है। (४) तालाब।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संत सरोवर हंस हैं, भच्छन करैं बिचार।
पुहुप बासना ज्यूँ रहैं, राई रंच न भार[१] ॥ ८ ॥
साध कमल मध बासना, ऐसा हलका अंग।
मैल मनोरथ ना रहै, निरमल धारा गंग ॥ ९ ॥
साध संगत हरि भक्ति बिनु, कोई न पावै पार।
निरमल आदि अनादि हैं, गंदा सब संसार ॥ १० ॥
ज्यूँ जल में पाषान है, भीँजत नाहीँ अंग।
चकमक लागे अगिन है, कहा करै सतसंग ॥ ११ ॥
साध संत के औन[२] में, बसैँ हजूर अमान।
जा घर निंदा साध की, सो घर डूबे जान ॥ १२ ॥
संत सकल के मुकट है, साईँ साध समान।
बड़ भागी वे हंस हैं, जिन संतों नाल पिछान ॥ १३ ॥
साध सगे हैं जगत में, संत सगाई साच।
साधू ढूँढ़न नीकलूँ, बहु बिधि काछूँ काछ ॥ १४ ॥
साईं सरिखे साध हैं, इन सम तुल नहिं और।
संत करैं सोइ होत है, साहिब अपनी ठौर ॥ १५ ॥
संतौं कारन सब रचा, सकल जमीं असमान।
चंद सूर पानी पवन, जग तीरथ औ दान ॥ १६ ॥
ज्यूँ बच्छा गउ की नजर में, यूँ साईं औ संत।
हरि जन के पीछे फिरैं, भक्त बछल भगवंत ॥ १७ ॥
पंडित कोटि अनंत हैं, ज्ञानी कोटि अनंत।
स्रोता कोटि अनंत हैं, बिरले साधू संत ॥ १८ ॥

(१) जैसे फूल में सुगंध जिस का रत्ती भर बोझ नहीं होता। (२) आँख, घर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिन्ह मिलते सुख ऊपजै, मेटैं कोटि उपाध।
भुवन चतुरदस ढूँढ़िये, परम सनेही साध ॥ १९॥
राम सरीखे साध हैं, साध सरीखे राम।
सतगुरु को सिजदा करूँ, जिन्ह दीन्हा निज नाम ॥ २०॥

॥ बैराग ॥

बैराग नाम है त्याग का, पाँच पचीसौ माहिं।
जब लग संसा सरप है, तब लग त्यागी नाहिं ॥ १ ॥
बैराग नाम है त्याग का, पाँच पचिसौ संग।
ऊपर की कैंचल तजी, अंतर बिषय भुवंग ॥ २ ॥
असन बसन सब तज गये, तज गये गाँव गिरेह।
माहैं संसा सूल है, दुरलभ तजना येह ॥ ३ ॥
बाज कुही[1] गत ज्ञान की, गगन गरज गरजंत।
लूटै सुन्न अकास तैं, संसा सरप भछंत ॥ ४ ॥
नित ही जामै नित मरै, संसय माहिं सरीर।
जिन का संसा मिट गया, सो पीरन सिर पीर ॥ ५ ॥
ज्ञान ध्यान दो सार है, तीजे तत्त अनूप।
चौथे मन लागा रहै, सो भूपन सिर भूप ॥ ६ ॥
मन की झीनी ना तजी, दिल ही माहिं दलाल।
हर दम सौदा करत है, करम कुसंगति काल ॥ ७ ॥
मन सेती खोटी गढ़ै, तन सूँ सुमिरन कीन्ह।
माला फेरे क्या हुआ, दुर कुट्टन बेदीन ॥ ८ ॥
तन मन एक वजूद कर, सुरत निरत लौ लाय।
बेड़ा पार समुद्र होइ, एक पलक ठहराय ॥ ९ ॥

(१) शिकरा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चार पदारथ एक कर, सुरत निरत मन पौन।
असल फकीरी जोग यह, गगन मँडल कूँ गौन ॥१०॥

॥ सतसंग सज्जन को ॥

संगत कीजै साध की, संसारी भटकंत।
पिंजर सूआ बसत है, किस कूँ बूझै पंथ ॥ १ ॥
साधोँ की संगत करै, बड़ भागी बड़ देव।
आपन तो संसा नहीँ, और उतारै खेव ॥ २ ॥
संगत सुर की कीजिये, असुरन सूँ क्या हेत।
डार मूल पावै नहीँ, ज्योँ मूली का खेत ॥ ३ ॥
दम सुमार आधार रख, पलकोँ मद्ध धियान।
संतोँ की संगति करै, समझि बूझि गुरु ज्ञान ॥ ४ ॥
नाम रते निरगुन कला, मानस नहीँ मुरार[1]।
ज्योँ पारस लोहा लगे, कटि हैँ करम लगार ॥ ५ ॥

॥ सतसंग दुर्जन को ॥

बगुला हंसा एक सर, एकै रूप रसाल।
वह सरवर मोती चुँगै, वह मच्छी का काल ॥ १ ॥
तन तो बाँबी हो गया, मन की गई न बान।
स्वर्ग पहुँच दोजख गये, सतगुरु लगे न कान ॥ २ ॥
सतगुरदतदाता[2] कहै, बानी बड़ी बलंद।
मुख बोले क्या होत है, अंतर हेत न अंध ॥ ३ ॥
कमरी के रंग ना चढ़ै, कोइला नहीँ सपेद।
सतगुरु बिन सूझै नहीँ, कहा पढ़त है बेद ॥ ४ ॥

(१) मन में जिन के कोई कामना नहीँ रही है। (२) तोता के पढ़ने की बोली।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कस्तूरी की बासना, मिरगा लेत सुबास।
निरख परख आवै नहीं, बहुरि ढँढोरै घास॥ ५॥

॥ कुसंग॥

कमल फूल मन भँवर है, काँटा करम कुसंग।
पाँच बिषय सूँ बँधि रह्या, कैसे लागै रंग॥ १॥
भूमि पड़ै जैसा फलै, सुर की संगत कीन्ह।
नीचन मुख नहिँ देखना, ना कोइ मिलै कुलीन॥ २॥
सीप पियत है स्वाँति कूँ, बिच है खारी नीर।
माहेँ मोती नीपजै, करनी-बंध सरीर[1]॥ ३॥
संसारी सूँ साख क्या, ऊसर बरषा देख।
बोवै बीज न खेत हित, तौ क्या काटै मेख॥ ४॥

॥ उपदेश॥

कोटि जग्य असुमेध कर, एक पलक धर ध्यान।
षटदल के री बंदगी, नहीँ जग्य उनमान॥ १॥
अठसठ तीरथ भरमता, भटक मुआ संसार।
बारहबानी[2] ब्रह्म है, जा का करौ बिचार॥ २॥
काया अपनी है नहीँ, माया कहँ से होय।
चरन कमल मेँ ध्यान रख, इन दोनोँ को खोय॥ ३॥
इस दुनियाँ मेँ आय कर, इन चारोँ कूँ बंध।
काम क्रोध छोह चूहरा[3], लोभ लपटिया अंध॥ ४॥

॥ घट मठ॥

स्वर्ग सात असमान पर, भटकत है मन मूढ़।
खालिक[4] तो खोया नहीँ, इसी महल[5] मेँ ढूँढ़॥

(१) यह उपमा इस बात की है कि सच्ची लगन वाले पर कुसंग भी बुरा असर नहीं पैदा करता। (२) खरा सोना। (३) भंगी। (४) कर्ता। (५) शरीर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ साच ॥

साचा सतगुरु जो मिलै, हंसा पावै धीर।
झकझोले जूनी मिटै, मुरसिद गहिर गँभीर ॥ १ ॥

साचे कूँ परनाम है, झूठे के सिर दंड।
ठौर नहीं तिहुँ लोक में, भरमत है नौ खंड ॥ २ ॥

साचे का सुमिरन करो, झूठे द्यो जंजाल।
साचा साहिब आप है, झूठ कपट सब काल ॥ ३ ॥

साचे कूँ स्वर्गापुरी, झूठा दोजख माहिँ।
चंद सूर की आयु[१] लग, दोजख निकसै नाहिँ ॥ ४ ॥

साचे का सेवन करै, झूठे कूँ ले लूट।
झूट सबद सूँ यूँ डरै, ज्योँ स्याने की मूठ[२] ॥ ५ ॥

साचे कूँ सब सौँप दे, भगति बंदगी नाम।
झूठा कपटी मारिये, हमरे कौने काम ॥ ६ ॥

साचे सदा मसंद[३] पर, उस चंगे दरबार।
झूठौँ के जूती पड़ै, जम किंकर की मार ॥ ७ ॥

साहिब जिन के उर बसै, झूठ कपट नहिँ अंग।
तिन का दरसन न्हान है, कहँ परबी फिर गंग ॥ ८ ॥

साचे सूरे संत हैँ, मरदाने जूझार[४]।
लाख दोस ब्यापै नहीँ, एक नाम की लार ॥ ९ ॥

सत्त सुकृत अरु बंदगी, जा उर ज्ञान बिबेक।
साध रूप साईं मिले, पूरन ब्रह्म अलेख ॥१०॥

---

(१) उमर, स्थिति। (२) गुनी के जादू का बान। (३) तकिया मसनद। (४) जोधा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सत्त सुकृत संतोष सर, आधीनी अधिकार।
दया धरम जा उर बसै, सो साईं दीदार ॥११॥
साचे कूँ संका नहीं, झूठे भय घर माहिँ।
कोट किले क्या चुनत है, झूठा छूटैं नाहिँ ॥१२॥

॥ जरना[1] ॥

ऐसी जरना[1] चाहिये, ज्यों पृथ्वी तत थीर।
खोदे से कसकै नहीँ, ऐसा बज्र सरीर ॥ १ ॥
ऐसी जरना चाहिये, ज्यों अप[2] तेज अनूप।
न्हावैं धोवैं थूक दे, तामस नहीँ सरूप ॥ २ ॥
ऐसी जरना चाहिये, पवन तत्त परमान।
कुटिल बचन कोई कहै, मानै नहीँ अमान ॥ ३ ॥
ऐसी जरना चाहिये, ज्यों अगिन तत्त में होय।
जो कुछ परै सो सब जरै, बुरा न बाचै कोय ॥ ४ ॥
ऐसी जरना चाहिये, ज्यों तरवर[3] के तीर।
काटै चीरै काठ को, तौ भी मन है धीर ॥ ५ ॥
ऐसी जरना चाहिये, ज्यों घनहर[4] जल मेह।
सबही ऊपर बरसता, ना दिल दोष सनेह ॥ ६ ॥
दीठी अनदीठी करौँ, जिन की लूँ मैँ दाद।
सँग से कभी न बिच्छरूँ, परम सनेही साध ॥ ७ ॥
दीठी अनदीठी करौँ सब अपने सिर लेहिँ।
सँग से कभी न बिच्छरूँ, जो मुझ सरबर देहिँ ॥ ८ ॥

---

(१) सहन, छिमा, पचाना, गुप्त रखना। (२) जल। (३) पेड़। (४) गहरा। बादल।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दीठी अनदीठी करैँ, जिन के हूँ मैँ संग।
भक्ति पुरातम देत हैँ, चढ़त नवेला रंग ॥ ९ ॥
दीठी अनदीठी करैँ, सो साधू सिर-पोस।
जो बीतै सो सिर धरैँ, देहिँ न काहू दोस ॥ १० ॥
दीठी अनदीठी करैँ, जिन की लूँ मैँ दाद।
सँग से कभी न बीछरूँ, खेलूँ आद अनाद ॥ ११ ॥
ऐसी जरना चाहिये, ज्योँ अललपच्छ[१] के अंग।
अंडा छुटै अकास तैँ, बहुर मिलै सतसंग ॥ १२ ॥
ऐसी जरना चाहिये, ज्योँ चंदन के अंग।
मुख से कछू न कहत है, तन कूँ खात भुवंग ॥ १३ ॥
ऐसी जरना चाहिये, ज्योँ पारस के होय।
लोहे स सोना करै, कह न सुनावै कोय ॥ १४ ॥
परदा कभी न पाड़िये[२], जे सिर जलै अँगीठ।
चाबुक तोड़ौ चौपटे, गुनहगार की पीठ ॥ १५ ॥
कथनी मैँ कुछ है नहीँ, करनी मैँ रँग लाग।
करनी करि जरना जरै, सो जोगी बड़ भाग ॥ १६ ॥
काँछ बाँछ को कसि रहे, सतबादी नर एक।
साईँ के दरबार मैँ, रहै जिन्हौँ की टेक ॥ १७ ॥

---

(१) एक चिड़िया जिसकी निस्बत कहा जाता है कि वह इतने ऊँचे आकाश मैँ रहती है कि वहीँ जब अंडा देती है तो रास्ते मैँ वायु मंडल की रगड़ से अंडा सेय जाता है और बच्चा पैदा होकर पृथ्वी पर पहुँचने के पहिले उसके पंख जम आते हैँ और रास्ते ही से अपने माता पिता की संगत मैँ लौट जाता है। (२) उघारिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सुरग नरक बांछे नहीँ, मोच्छ बंध से दूर।
बड़ी गरीबी जगत मेँ संत चरन रज धूर॥

॥ बिचार ॥

ज्ञान बिचार बिबेक बिन, क्योँ दम तोरै स्वास।
कहा होत हरि नाम सूँ, जो दिल ना बिस्वास॥ १॥
समझ बिचारे बोलना, समझ बिचारे चाल।
समझ बिचारे जागना, समझ बिचारे ख्याल॥ २॥
करै बिचारे समझ करि, खोज बूझ का खेल।
बिना मथे निकसै नहीँ, है तिल अंदर तेल॥ ३॥
जैसे तिल मेँ तेल है, यूँ काया मध राम।
कोल्हू मेँ डारे बिना, तत्त नहीँ सहकाम॥ ४॥
बिचार नाम है समझ का, समझ न परी परक्ख।
अकलमंद एकै घना, बिना अकल क्या लक्ख॥ ५॥
पुर पट्टन नगरी बसै, निरधारं आधार।
लख चौरासी पोषता, ऐसो जरना सार॥ ६॥
चौरासी भाँडे गढ़ै, खेलै खेल अपार।
खान पान सब देत है, ऐसा समरथ सार॥ ७॥

॥ काम ॥

चौरासी की चाल क्या, मो सेती सुन लेह।
चोरी जारी करत है, जाके मुखड़े खेह॥

॥ क्रोध ॥

काम क्रोध मद लोभ लट, छुटी रहै बिकराल।
क्रोध कसाई उर बसै, कुसब्द छुरा घर घाल॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ तृष्णा ॥

आसा तृस्ना नदी में, डूबे तीनूँ लोक।
मनसा माया बिस्तरी, आतम आतम दोष॥

॥ मन ॥

जीवत मुकता सो कहो, आसा तृस्ना खंड।
मन के जीते जीत है, क्यूँ भरमे ब्रह्मंड॥

॥ निन्दा ॥

निंदा बिंदा छाड़ि दे, संतोँ सूँ कर प्रीत।
भौसागर तिर जात है, जीवत मुक्त अतीत॥ १॥
एक सत्रु इक मित्र है, भूल परी रे प्रान।
जम की नगरी जाहिगा, सबद हमारा मान॥ २॥

॥ मिश्रित ॥

सूआ सतगुर कहत है, पिँजरे परे परान।
खिरकी खुलते उड़ गया, मंतर लगा न कान॥ १॥
सुअटा पढ़ै सुभान गत, अंतर नहीँ उचार।
कुंज[1] कुरल[2] अँड पोखहीँ, कोसन सहस हजार॥ २॥
ऐसी संगत जो मिलै, तौ साईँ सूँ भेट।
ऊपरली बरबाद है, जम मारैगा फेट॥ ३॥
सती पुकारै सर[3] चढ़ी, मुख बोलत है राम।
कौतुक[4] देखन सो गये, जिन के मन सहकाम॥ ४॥
सती बहुर उपजै नहीँ, घर जाने की प्रीत।
सती रटत है राम कूँ, कौतुक गावै गीत॥ ५॥
तपी तपै तन कूँ दहै, पाँचो इन्द्री साधि।
नहिँ इच्छा दीदार की, भूले आदि अनादि॥ ६॥

(१) कुंजबन चिड़िया। (२) कोक चिड़िया। (३) सरा, चिता। (४) तमाशाई।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लाख बज्र कूँ झेल करि, सूरे जूझैं खेत।
बादी जोगी हठ करैं, चिनगी बरखै रेत॥ ७॥
पुर पट्टन नगरी बसै, भेद न काहू देत।
कीड़ी कुंजर पोषता[1], अपना नाम न लेत॥ ८॥

——:※:——

गुलाल साहिब

जीवन-समय—अठारहवें शतक के पिछले भाग से उन्नीसवें शतक के अगले हिस्से तक। जन्म स्थान—तअल्लुक़ा बसहरि ज़िला ग़ाज़ीपुर। सतसंग स्थान—मौज़ा भुरकुड़ा ज़िला ग़ाज़ीपुर। जाति और आश्रम—क्षत्री, गृहस्थ। गुरू—बुल्ला साहिब।

यह बसहरि के ज़मींदार थे वहीँ पैदा हुए और वहीँ चोला छोड़ा। भुरकुड़ा इसी तअल्लुक़े का एक गाँव है। [पूरा जीवन-चरित्र इन की बानी के आदि में छपा है]

सत्त सबद गुन गायेऊ, संतन प्रान-अधार।
अगम अगोचर दूरि है, कोऊ न पावत पार॥ १॥
उठ तरंग दसहूँ दिसा, भाँति भाँति के राग।
बिन पग नाच नचायेऊ, बिन रसना गुन गाय॥ २॥
ज्ञान ध्यान तहवाँ नहीँ, सहज सरूप अपार।
जन गुलाल दिल सोँ मिलो, सोई कंत हमार॥ ३॥
बिन जल कँवला बिगसेऊ, बिना भँवर गुंजार।
नाभि कंवल जोती बरै, तिरबेनी ऊँजियार॥ ४॥
सुखमन सेज बिछायेऊ, पौढ़हिँ प्रभू हमार।
सुरति निरति लेजायेऊ, दसो दिसा के द्वार॥ ५॥
पुलकि पुलकि मन लायेऊ, आवा गवन निवार।
जन गुलाल तहँ भायेऊ, जम का करहि हमार॥ ६॥

---

(१) चींटी से हाथी तक का पालनकरता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन पवनहिँ जीतो जबै, महसुन[1] माहिँ समाध ।
सुखमन जोति सँवारेऊ, बरि बरि होत प्रकास ॥ ७ ॥
ओअंकार समाइलो, जोति सरूपी नाम ।
सेत सुहावन जगमगर, जीव मिलल सतनाम ॥ ८ ॥
जिन यह ब्रह्म बिचारल, सोई गुरू हमार ।
जन गुलाल सत बोलही, झूठ फिरहि संसार ॥ ९ ॥
दृष्टि पदारथ फरल सोइ, सहज के परलि धमार ।
अति अद्भुत तहँ देखल, पुलकि पुलकि बलिहार ॥१०॥
बरनत बरनि न आवई, कोटि चंद छबि वार ।
दसौ दिसा पूरित सोई, संत सदा रखवार ॥११॥
जिन पावल तिन गावल, और सकल भ्रम डार ।
कहै गुलाल मनोरवा[2], पूरन आस हमार ॥१२॥
प्रेम के परल हिंडोलवा, मानिक बरल लिलार ।
कहैँ गुलाल मनोरवा, पुजवल आस हमार ॥१३॥
अनुभौ फाग मनोरवा, दहुँ दिसि परलि धमार[2] ।
काया नगर मैँ रँग रच्यो, प्रान-नाथ बलिहार ॥१४॥
बिनु बाजे धुनि गाजई, अधरहिँ अगम अपार ।
प्रान तबहिं उठि गवनेऊ, बहुरि नाहिँ औतार ॥१५॥
प्रेम पगल मन रातल, आनँद मंगलचार ।
तीन लोक के ऊपरे, मिललेहिँ कंत हमार ॥१६॥
जोग जग्य जप तप नहीँ, दुख सुख नहिँ संताप ।
घटत बढ़त नहिँ छीजई, तहवाँ पुन्न न पाप ॥१७॥

---

(१) महासून्य । (२) एक राग का नाम ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संत सभा मैं बैठि के, आनँद उजल प्रकास।
जन गुलाल पिय बिलसही, पूजहि मन कै आस॥१८॥
बंकनाल चढ़ि के गयो, आयो प्रभु दरबार।
जगमग जोति जगन लगी, कोटि चंद छबि वार॥१९॥
मुक्ता झरि बरखन लगो, दसो दिसा झनकार।
जन गुलाल तन मन दियो, पूरी खेप हमार॥२०॥
मानिक भवन उदित[1] तहाँ, भाँवर दै दै गाय।
जन गुलाल हरखित भयो, कौतुक कह्यो न जाय॥२१॥

—:०:—

भीखा साहिब

जीवन-समय—अट्ठारहवें शतक के अंत से उन्नीसवें शतक के मध्य तक। जन्म स्थान—मौज़ा ख़ानपुर-बोहना ज़िला आज़मगढ़। सतसंग स्थान—मौज़ा भुरकुड़ा ज़िला ग़ाज़ीपुर। जाति और आश्रम—चौबे, गृहस्थ। गुरू—गुलाल साहिब।

उपदेश लेने के पीछे भीखा साहिब भुरकुड़ा से जहाँ उन के गुरू का स्थान था नहीँ हटे और उन के चोला छोड़ने पर उन की गद्दी पर बैठे। अनुमान पचास बरस की अवस्था में चोला छोड़ा। [पूरा जीवन-चरित्र इन की बानी के आदि में छपा है]

॥ गुरुदेव ॥

संत चरन मैं जाइ के, सीस चढ़ायो रेनु[2]।
भीखा रेनु के लागते, गगन बजायो बेनु॥ १ ॥
बेनु बजायो मगन ह्वै, छुटी खलक की आस।
भीखा गुरु परताप तेँ, लियो चरन मैं बास॥ २ ॥

॥ सुमिरन ॥

जोग जुक्ति अभ्यास करि, सोहं सबद समाय।
भीखा गुरु परताप तेँ, निज आतम दरसाय॥ १ ॥

(१) ऊँचा, उदय। (२) चरन की रज या धूल।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जाप जपै जो प्रीत सों, बहु बिधि रुचि उपजाय।
साँझ समय औ प्रात लगि, तत्त पद्‌ारथ पाय ॥ २ ॥
राम को नाम अनंत है, अंत न पावै कोय।
भीखा जस लघु बुद्धि है, नाम तवन[1] सुख होय ॥ ३ ॥
एकै धागा नाम का, सब घट मनिया माल।
फेरत कोई संत जन, सतगुरु नाम गुलाल ॥ ४ ॥

॥ भेष की रहनी ॥

काया कुंड बनाइ के, धूमि घोटना[2] देइ।
बिजया[3] जीव मिलाइ के, निर्मल घोँटा[4] लेइ ॥ १ ॥
साफी[5] सहज सुभाव की, छानो सुरति लगाय।
नाम पियाला छकि रहै, अमल उतरि नहिँ जाय ॥ २ ॥
जोग जुक्ति सुमिरन बनो, हर दम मनिया[6] नाम।
करम खंड कंठी गुहो, गर बाँधो प्रानायाम ॥ ३ ॥
अगम ज्ञान गूदर लियो, ढाँको सकल सरीर।
ब्रह्म जनेऊ मेखला, पहिरहिँ मस्त फकीर ॥ ४ ॥
सेल्ही संसय नासि करि, डारो हृदय लगाय।
तिलक उनमुनी ध्यान धरि, निज सरूप दरसाय ॥ ५ ॥
ताखी[7] तत्त जो माल[8] है, राखो सीस चढ़ाय।
चँरन कमल निरखत रहो, मौजै मौज समाय ॥ ६ ॥
तूमा[9] तन मन रूप है, चेतनि आब[10] भराय।
पीवत कोई संत जन, अमृत आपु छिपाय ॥ ७ ॥

---

(१) तैसा (२) घुमाय के घोटै। (३) भाँग। (४) घूँट। (५) छन्ना। (६) माला का दाना। (७) साधुओं की टोपी। (८) माला। (९) तुंबा। (१०) पानी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कुबरी[१] पानी[२] अंग भौ, पवन दंड बरजोर।
लागी डोरी प्रेम की, तम मेटो भयो भोर ॥ ८ ॥
पौवा[३] अधर अधार को, चलत सो पाँव पिराय।
जो जावै सो गुरु कृपा, कोउ कोउ सीस गँवाय ॥ ९ ॥
मुरछल मन उनमान का, छाया ज्ञान अकार।
उस्न[४] ताप निसि दिन सहै, केवल नाम अधार ॥१०॥
अर्ध उर्ध के बीच में, कमर-बस्त[५] ठहराय।
इँगला पिंगला एक ह्वै, सुखमन के घर जाय ॥११॥
झोरी मौज अनयास[६] की, बटुआ आनँद[७] लेय।
मृगछाला त्रिकुटी भई, बैठि सबद चित देय ॥१२॥
सकल संत के रेनु[८] लै, गोला गोल बनाय।
प्रेम प्रीत घसि ताहि को, अंग बिभूति लगाय ॥१३॥
भिच्छा अनुभव अन्न लै, आतम भोग बिचार।
रहै सो रहनि अकासवत, बरजित जानि अहार ॥१४॥
जटा बढ़ावै भाव की, जब हरि कृपा अमान।
मुद्रा नावै नाम की, गुरु सबद सुनावै कान ॥१५॥
आड़बंद[९] हर हाल की, अलफी[१०] रहनि अडोल।
बाघम्बर[११] है सुन्न का, अविगत करत कलोल ॥१६॥
पाँच पचीस धुईं लगी, धीरज कुंड भराय।
ज्ञान अगिन ता में दियो, बिषय इन्हन[१२] जरि जाय ॥१७॥
फाहुलि[१३] अगम अचिंत की, चीपी[१४] ध्यान लगाय।
नूर जहूर झलकत रहै, ता में मन अरुझाय ॥१८॥

---

(१) छड़ी, वैरागिनी। (२) हाथ। (३) खड़ाऊँ। (४) गरमी। (५) कमरबंद। (६) आसा से रहित। (७) सुख। (८) चरन रज। (९) लँगोट। (१०) बिना बँहोली का कुरता। (११) शेर के चमड़े का वस्त्र। (१२) ईँधन। (१३) फरुही। (१४) नाप का कटोरा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भेख अलेख अपार है, कहत न ज्ञान समाय।
सुन्न निरंतर अलख है, खोज करै कोउ जाय ॥१९॥
साहिब सब घट रमि रह्यो, पूरन आपै आप।
भीखा जो नहिँ जानही, सहै करम संताप ॥२०॥

॥ मिश्रित ॥

एक संप्रदा[1] सबद घट, एक द्वार सुख संच[2]।
इक आतम सब भेष[3] मोँ, दूजो जग परपंच ॥ १ ॥
भीखा भयो दिगम्बर[4], तजि कै जक्त बलाय।
कस्त[5] कर्‌यो निज रूप को, जहँ को तहाँ समाय ॥ २ ॥
भीखा केवल एक है, किरतिम भयो अनंत।
एकै आतम सकल घट, यह गति जानहिँ संत ॥ ३ ॥
आरति हरि गुरु चरन की, कोइ जानै संत सुजान।
भीखा मन बच करमना, ताहि मिलै भगवान ॥ ४ ॥

पलटू साहिब

जीवन समय—उन्नीसवाँ शतक। जन्म स्थान—मौजा नगपुर-जलालपुर ज़िला फ़ैज़ाबाद। सतसंग स्थान—अयोध्या। ज़ाति और आश्रम—काँदू बनिया, गृहस्थ। गुरू—गोविन्दजी।

यह गहिरे भक्त अवध के नवाब शुजाउद्दौला और हिन्दुस्तान के बादशाह शाह आलम के समय मेँ वर्त्तमान थे। इन के वंश के लोग अब तक इन के जन्म स्थान के गाँव मेँ मौजूद हैँ।

[पूरा जीवन-चरित्र इन की कुंडलिया के आदि मेँ दिया है]

॥ गुरुदेव ॥

संत संत सब बड़े हैँ, पलटू कोऊ न छोट।
आतम-दरसी मिहीँ[6] हैँ, और चाउर सब मोट ॥ १ ॥

(१) मत। (२) समूह। (३) रूप। (४) साधू जो नंगे रहते हैँ। (५) इरादा। (६) बारीक।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पलटू जो कोउ संत हैँ, सब हमरे सिरताज।
सर्बंगी कोउ एक है, राखै सब की लाज ॥ २ ॥
पलटू ऐना[1] संत हैं, सब देखै तेहि माहिँ।
टेढ़ सोझ मुँह आपना, ऐना टेढ़ा नाहिँ ॥ ३ ॥
वहि देवा को पूजिये, सब देवन कै देव।
पलटू चाहै भक्ति जो, सतगुरु अपना सेव ॥ ४ ॥

॥ नाम ॥

जप तप तीरथ बर्त है, जोगी जोग अचार।
पलटू नाम भजे बिना, कोउ न उतरै पार ॥ १ ॥
पलटू जप तप के किहे, सरै न एकौ काज।
भवसागर के तरन को, सतगुरु नाम जहाज ॥ २ ॥
जरि बूटी के खोजते, गई सुध्याई[2] खोय।
पलटू पारस नाम का, मनै रसायन होय ॥ ३ ॥

॥ चितावनी ॥

पलटू यहि संसार में, कोऊ नाहीँ हीत।
सोऊ बैरी होत है, जा को दीजे प्रीत ॥ १ ॥
पलटू नर तन पाइ कै, मूरख भजै न राम।
कोऊ ना सँग जायगा, सुत दारा धन धाम ॥ २ ॥
बैद धनंतर मरि गया, पलटू अमर न कोय।
सुर नर मुनि जोगी जती, सबै काल बस होय ॥ ३ ॥
पलटू नर तन पाइ कै, भजै नहीँ करतार।
जमपुर बाँधे जाहुगे, कहौँ पुकार पुकार ॥ ४ ॥
पलटू नर तन जातु है, सुंदर सुभग सरीर।
सेवा कीजै साध की, भजि लीजै रघुबीर ॥ ५ ॥

---

(१) दर्पन। (२) शुद्धता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पलटू सिष्य जो कीजिये, लीजै बूझ बिचार।
बिन बूझे सिष करोगे, परिहै तुम पर भार ॥ ६ ॥
दिना चारि का जीवना, का तुम करो गुमान।
पलटू मिलिहै खाक में, घोड़ा बाज[1] निसान ॥ ७ ॥
पलटू हरि जस गाइ ले, यही तुम्हारे साथ।
बहता पानी जातु है, धोउ सिताबी[2] हाथ ॥ ८ ॥

॥ प्रेम ॥

राम नाम जेहि मुखन तें, पलटू होय प्रकास।
तिन के पद बंदन करौं, वो साहिब मैं दास ॥ १ ॥
तन मन धन जेहि राम पर, कै दीन्होँ बकसीस[3]।
पलटू तिनके चरन पर, मैं अरपत हौं सीस ॥ २ ॥
राम नाम जेहि उच्चरैं, तेहि मुख देहुँ कपूर।
पलटू तिनके नफर[4] की, पनहीं का मैं धूर ॥ ३ ॥
पलटू ऐसी प्रीति करु, ज्यों मजीठ को रंग।
टूक टूक कपड़ा उड़ै, रंग न छोड़ै सँग ॥ ४ ॥
आठ पहर जो छकि रहै, मस्त अपाने हाल।
पलटू उनसे सब डरैं, वो साहिब के लाल ॥ ५ ॥
करम जनेऊ तोड़ि कै, भरम किया छयकार[5]।
जेहि गोबिंद[6] गोबिंद[7] मिले, थूक दिया संसार ॥ ६ ॥
पलटू सीताराम सों, हम तो किहेहैं प्रीति।
देखि देखि सब जरत हैं, कौन जक्त की रीति ॥ ७ ॥
पलटू बाजी लाइहौं, दोऊ बिधि से राम।
जो मैं हारौं राम को, जो जीतौं तौ राम[8] ॥ ८ ॥

---

(१) बाजा। (२) जल्द। (३) यहाँ "भेंट" का अर्थ है। (४) सेवक। (५) नाश। (६) पलटू साहिब के गुरू का नाम (७) ईश्वर। (८) जो हारूँ तो मैं राम का हुआ और जो जीतूँ तो राम मेरे हुए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पलटू हम से राम से, ऐसो भा ब्यौहार।
कोउ कितनौ चुगली करै, सुनै न बात हमार॥ ६॥
पलटू जस मैं राम का, वैस राम हमार।
जा की जैसी भावना, ता सोँ तस ब्यौहार॥१०॥

॥ बिस्वास ॥

मनसा बाचा कर्मना, जिन को है बिस्वास।
पलटू हरि पर रहत हैं, तिन्ह के पलटू दास॥ १॥
पलटू संसय छूटि गे, मिलिया पूरा यार।
मगन आपने ख्याल में, भाड़ पड़ै संसार॥ २॥
ज्योँ ज्योँ रूठै जगत सब, मोर होय कल्यान।
पलटू बार न बाँकिहै, जो सिर पर भगवान॥ ३॥
संत बचन जुग जुग अचल, जो आवै बिस्वास।
बिस्वास भये पर ना मिलै, तौ झूठा पलटूदास॥ ४॥
पलटू संत के बचन को, ख्याल करै ना कोइ।
टुक मन में निस्चै करै, होइ होइ पै होइ॥ ५॥

॥ सूरमा ॥

धुजा फरक्कै सुन्य में, अनहद गड़ा निसान।
पलटू जूझा खेत पर, लगा जिकर का बान॥ १॥
लगा जिकर का बान है, फिकर भई छयकार।
पुरजे पुरजे उड़ि गया, पलटू जीति हमार॥ २॥
नौबत बाजै ज्ञान की, सुन्य धुजा फहराय।
गगन निसाना मारि कै, पलटू जीतै जाय॥ ३॥
बखतर पहिरे प्रेम का, घोड़ा है गुरुज्ञान।
पलटू सुरति कमान लै, जीति चले मैदान॥ ४॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दसो दिसा मुरचा किहा, बाती दिहा लगाय।
काया गढ़ में पैसि कै, पलटू लिहा छुड़ाय ॥ ५ ॥
पलटू कफनी बाँधि कै, खींचौ सुरति कमान।
संत चढ़े मैदान पर, तरकस बाँधे ज्ञान ॥ ६ ॥

॥ बिनय ॥

तुम तजि दीना-नाथ जी, करै कौन की आस।
पलटू जो दूसर करै, तो होइ दास की हाँस ॥ १ ॥
ना मैं किया न करि सकौं, साहिब करता मोर।
करत करावत आपु है, पलटू पलटू सोर ॥ २ ॥
पलटू तेरी साहिबी, जीव न पावै दुक्ख।
अदल होय बैकुंठ में, सब कोइ पावै सुक्ख ॥ ३ ॥

॥ भक्ति जन ॥

जैसे काठ में अगिन है, फूल में है ज्यों बास।
हरि जन में हरि रहत है, ऐसे पलटूदास ॥ १ ॥
मिंहदी में लाली रहै, दूध माहिं घिव होय।
पलटू तैसे संत हैं, हरि बिन रहैं न कोय ॥ २ ॥
छोड़ै जग की आस को, काम क्रोध मिटि जाय।
पलटू ऐसे दास को, देखत लोग डेराय ॥ ३ ॥
अस्तुति निन्दा कोउ करै, लगै न तेहि के साथ।
पलटू ऐसे दास के, सब कोइ नावै माथ ॥ ४ ॥
आठ पहर लागी रहै, भजन तेल की धार।
पलटू ऐसे दास को, कोउ न पावै पार ॥ ५ ॥
सरबरि[1] कबहुँ न कीजिये, सब से रहिये हार।
पलटू ऐसे दास को, डेरिये बारम्बार ॥ ६ ॥

(१) बराबरी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दुष्ट मित्र सब एक[1] है, ज्यौं कंचन त्यौं काँच।
पलटू ऐसे दास को, सुपने लगै न आँच ॥ ७ ॥
ना जीने की खुसी है, पलटू मुए न सोच।
ना काहू से दुष्टता, ना काहू से रोच ॥ ८ ॥
काम क्रोध जिन के नहीँ, लगै न भूख पियास।
पलटू उनके दरस सौं, होत पाप को नास ॥ ९ ॥

॥ साध ॥

खोजत खोजत मरि गये, तीरथ बेद पुरान।
पलटू सूझत है नहीँ, भेष मेँ है भगवान ॥ १ ॥
साध परखिये रहनि मेँ, चोर परखिये रात।
पलटू सोना कसे मेँ, झूठ परखिये बात ॥ २ ॥
बृच्छा बड़ परस्वारथी, फरैं और के काज।
भवसागर के तरन को, पलटू संत जहाज ॥ ३ ॥
साध हमारी आतमा, हम साधन के दास।
पलटू जो दोइति[2] करै, होय नरक मेँ बास ॥ ४ ॥
पलटू तीरथ को चला, बीचे मिलिगे संत।
एक मुक्ति के खोजते, मिलि गइ मुक्ति अनंत ॥ ५ ॥
पलटू तीरथ के गये, बड़ा होत अपराध।
तीरथ मेँ फल एक है, दरस देत हैँ साध ॥ ६ ॥
जिन देखा सो बावला, को अब कहै सँदेस।
दीन दुनी दोउ भूलिया, पलटू सो दुरवेस ॥ ७ ॥
तड़पै बिजुली गगन मेँ, कलस[3] जात है फूटि।
पलटू संत के नाँव से, पाप जात है छूटि ॥ ८ ॥

---

(१) समान। (२) दुभाँता। (३) घड़ा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

की तौ हरि चरचा महैं, की तौ रहै इकंत।
ऐसी रहनी जो रहै, पलटू सोई संत ॥ ९ ॥

॥ पाखंडी ॥

पलटू निकसे त्यागि कै, फिरि माया को ठाट।
धोबी को गदहा भयो, ना घर को ना घाट ॥ १ ॥
पलटू मन मूआ नहीँ, चले जगत को त्याग।
ऊपर धोये का भया, जो भीतर रहिगा दाग ॥ २ ॥
घर छोड़ै बैराग में, फिरि घर छावै जाय।
पलटू आइ के सरन में, तनिकौ नाहिं लजाय ॥ ३ ॥
भेष बनावै भक्त का, नाहिं राम से नेह।
पलटू पर-धन हरन को, बिस्वा[1] बेचै देह ॥ ४ ॥
पलटू जटा रखाय सिर, तन में लाये राख।
कहत फिरैं हम जोगी, लरिका दाबे काँख ॥ ५ ॥
मन मुरीद होवै नहीँ, आपु कहावे पीर।
हवा हिर्स पलटू लगी, नाहक भये फकीर ॥ ६ ॥

॥ सतसंग ॥

संगति ऐसी कीजिये, जहवाँ उपजै ज्ञान।
पलटू तहाँ न बैठिये, घर की होय जियान[2] ॥ १॥
सतसंगति में जाइ कै, मन को कीजै सुद्ध।
पलटू उहाँ न जाइये, जहवाँ उपजि कुबुद्ध ॥ २ ॥

॥ उपदेश ॥

पलटू गुनना छोड़ि दे, चहै जो आतम सुक्ख।
संसय सोइ संसार है, जरा मरन को दुक्ख ॥ १॥

(१) वेश्या, पतुरिया। (२) हानि।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पलटू सीताराम से, लगी रहै वह रट्ट।
तनिक न पलक बिसारिये, चित्त परै की पट्ट ॥ २ ॥

पलटू पलटू क्या करै, मन को डारै धोय।
काम क्रोध को मारि कै, सोई पलटू होय ॥ ३ ॥

सुनि लो पलटू भेद यह, हँसि बोले भगवान।
दुख के भीतर मुक्ति है, सुख में नरक निदान ॥ ४ ॥

पलटू जननी से कहै, यही हमारी सीख।
सकठा पुत्र न राखिये, जनमत दीजै बीख[1] ॥ ५ ॥

पलटू संत जो कहि गये, सोई बात है ठीक।
बचन संत के नहिं टरै, ज्यों गाड़ी की लीक ॥ ६ ॥

मन से माया त्यागि दे, चरनन लागी आय।
पलटू चेरी संत की, अंत कहाँ को जाय ॥ ७ ॥

पंडित ज्ञानी चातुरा, इन से खेलौ दूरि।
एक साच हिरदे बसै, पलटू मिलै जरूर ॥ ८ ॥

मरते मरते सब मरे, मरै न जाना कोय।
पलटू जो जियतै मरै, सहज परायन[2] होय ॥ ९ ॥

सब से नीचा होइ रहु, तजि बिबाद को तीर।
पलटू ऐसे दास का, कोऊ न दामन-गीर[3] ॥ १० ॥

पलटू का घर अगम है, कोऊ न पावै पार।
जेकरे बड़ी पियास है, सिर को धरैं उतार ॥ ११ ॥

बिन खोजे से ना मिलै, लाख करै जो कोय।
पलटू दूध से दही भा, मथिबे से घिव होय ॥ १२ ॥

---

(१) विष, जहर। (२) पार। (३) पल्ला पकड़ने वाला।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पलटू पलक न भूलिये, इतना काम जरूर।
खामिंद कब गोहरावही, चाकर रहै हजूर ॥१३॥

आठ पहर चौंसठ घरी, पलटू परै न भोर[1]।
का जानी केहि औसरै, साहिब ताकै मोर ॥१४॥

पलटू सीताराम से, साची करिये प्रीति।
अपनी ओर निबाहिये, हारि परै की जीति ॥१५॥

गारी आई एक से, पलटे भई अनेक।
जो पलटू पलटै नहीं, रहै एक की एक ॥१६॥

जल पषान के पूजते, सरा न एकौ काम।
पलटू तन करु देहरा, मन करु सालिगराम ॥१७॥

पलटू नेरे साच के, झूठे से हैं दूर।
दिल में आवै साच जो, साहिब हाल हजूर ॥१८॥

पलटू यह साची कहै, अपने मन को फेर।
तुझे पराई क्या परी, अपनी ओर निबेर ॥१९॥

पलटू चिन्ता लागि है, जनम गँवाये रोय।
जौं लगि छूटै फिकिर ना, गई फकीरी खोय ॥२०॥

राम मिताई ना चलै, और मित्र जो होइ।
पलटू सरबस दीजिये, मित्र न कीजै कोइ ॥२१॥

पलटू आगे मरि रहौ, आखिर मरना मूल।
राम किस्न परसराम ने, मरना किया कबूल ॥२२॥

ज्ञान देय मूरख कहै, पलटू करै बिवाद।
बाँदर को आदी दिया, कछु ना कहै सवाद ॥२३॥

(१) भूल।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सीस नवावै संत को, सीस बखानौ सोइ।
पलटू जो सिर ना नवै, बिहतर कद्दू होइ ॥२४॥

॥ मान ॥

बड़े बड़ाई में भुले, छोटे हैं सरदार।
पलटू मीठो कूप जल, समुँद्र पड़ा है खार ॥ १ ॥
सब से बड़ा समुद्र है, पानी हैगा खारि।
पलटू खारी जानि के, लीन्हों रतन निकारि ॥ २ ॥
पलटू यह मन अधम है, चोरों से बड़ चोर।
गुन तजि ऐगुन गहतु है, तातें बड़ा कठोर ॥ ३ ॥
कहत कहत हम मरि गये, पलटू बारम्बार।
जग मूरख मानै नहीँ, पड़ै आप से भाड़ ॥ ४ ॥

॥ कपट ॥

पलटू मैं रोवन लगा, जरौ जगत की रीति।
जहँ देखो तहँ कपट है, का सोँ कीजै प्रीति ॥ १ ॥
मुँह मीठो भीतर कपट, तहाँ न मेरो बास।
काहू से दिल ना मिलै, तौ पलटू फिरै उदास ॥ २ ॥
पलटू पाँव न दीजिये, खोटा यह संसार।
हीताई करि मिलत है, पेट महैं तरवार ॥ ३ ॥
पलटू भेद न दीजिये, यह जग बुरी बलाय।
लिहे कतरनी काँख में, करै मित्रता धाय ॥ ४ ॥
साहिब के दरबार में, क्या झूठे का काम।
पलटू दोनों ना मिलैं, कामी और अकाम ॥ ५ ॥
हिरदे में तो कुटिल है, बोलै बचन रसाल।
पलटू वह केहि काम का, ज्यों नारुन फल लाल ॥ ६ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पलटू छूरी कपट की, बोलै मीठी बोल।
की टूटै की फाटही, कहिये परदा खोल ॥ ७ ॥

॥ कामिनी ॥

मुए सिंह की खाल को, हस्ती देखि डेराय।
असिउ[1] बरस की बूढ़ि को, पलटू ना पतियाय ॥ १ ॥

असिउ बरस की नारि को, पलटू ना पतियाय।
जियत निकोवै[2] तत्तु को, मुए नरक लै जाय ॥ २ ॥

ख़रबूजा संसार है, नारी छूरी बैन।
पलटू पंजा सेर का, यों नारी का नैन ॥ ३ ॥

माया ठगिनी जग ठगा, इकहैं[3] ठगा न कोय।
पलटू इकहैं सो ठगै, (जो) साचा भक्त होय ॥ ४ ॥

॥ ब्राह्मन ॥

सकठा बाम्हन मछखवा, ताहि न दीजै दान।
इक कुल खोवै आपनो, (दूजे)संग लिये जजमान ॥ १ ॥

सकठा बाम्हन ना तरै, भक्त तरै चमार।
राम भक्ति आवै नहीं, पलटू गये खुवार ॥ २ ॥

॥ महंत ॥

पलटू कीन्हो दंडवत, वै बोले कछु नाहिं।
भगत जो बनै महंथ से, नरक परै को जाहि ॥ १ ॥

पलटू माया पाइ कै, फूलि के भये महंथ।
मान बड़ाई में मुए, भूलि गये सत पंथ ॥ २ ॥

गोड़ धरावँ संत से, माया के महमंत।
पलटू बिना बिबेक के, नरकै गये महंत ॥ ३ ॥

॥ मिश्रित ॥

हिन्दू पूजै देवखरा, मुसलमान महजीद।
पलटू पूजै बोलता, जो खाय दीद बरदीद ॥ १ ॥

(१) अस्सीह। (२) निचोड़ ले। (३) उसको।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पलटू अपने भेद से, कारन पैदा होय।
जरि कै बन ह्वैगे भसम, आगि न लावै कोय ॥ २ ॥
चारि बरन को मेटि कै, भक्ति चलाया मूल।
गुरु गोबिंद के बाग मेँ, पलटू फूला फूल ॥ ३ ॥
हद अनहद दोऊ गये, निरभय पद है गाढ़।
निरभय पद के बीच मेँ, पलटू देखा ठाढ़ ॥ ४ ॥
सुख मेँ सेवा गुरु की, करते हैँ सब कोय।
पलटू सेवै बिपति मेँ, गुरु-भगता है सोय ॥ ५ ॥
पलटू मैँ रोवन लगा, देखि जगत की रीति।
नजर छिपावै संत से, बिस्वा से है प्रीति ॥ ६ ॥
कमर बाँधि खोजन चले, पलटू फिरेऊ देस।
षट दरसन सब पचि मुए, कोऊ न कहा सँदेस ॥ ७ ॥
पलटू तेरे हाथ की, करी परी कमान।
जो खींचै सो गिरि परै, जोधा भीम समान ॥ ८ ॥
सिष्य सिष्य सबही कहै, सिष्य भया न कोय।
पलटू गुरु की बस्तु को, सीखै सिष तब होय ॥ ९ ॥
ज्ञान ध्यान जानै नहीं, करते सिष्य बुलाय।
पलटू सिष्य चमार सम, गुरुवा मेस्तर[1] आय ॥ १० ॥
पलटू हरि के कारने, हम तो भये फकीर।
हरि सोँ पंजा लाय फिर, तीनोँ लोक जगीर ॥ ११ ॥
पलटू लेखे जक्त के, जोगिया गया खराब।
जोगिया जानै जग गया, दोनोँ देत जवाब ॥ १२ ॥
इन्द्रि जीति कारज करै, जगत सराहै भोग।
जैसे बर्षा सिखर पर, नहीं भींजबे जोंग ॥ १३ ॥

(१) भंगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पलटू सब की एक मति, को अब करै बिचार।
सूधे मारग मैं चलौं, हँसै सकल संसार ॥ १४ ॥
पोथी कहते पंडिता, सबद कहत है भाट।
पलटू रहनी जो रहै, ता का पूरा ठाट ॥ १५ ॥
पलटू सोई पीर है, जो जानै पर पीर।
जो पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर ॥ १६ ॥
चलते चलते पग थका, एकौ लगा न हाथ।
पलटू खोजै पूरुबैं, घर में है जगनाथ[1] ॥ १७ ॥
पलटू नाहक भूँकता, जोगी देखे स्वान।
जक्त भक्त सोँ बैर है, चासे जुग परमान ॥ १८ ॥
राम नाम के लिहे से, पलटू परा गँभीर।
हाथ जोरि आगे मिलै, लै लै भेँट अमीर ॥ १९ ॥
लोक लाज छूटै नहीँ, पलटू चाहै राम।
खोजत हीरा को फिरै, नहीँ पोत का दाम ॥ २० ॥
पलटू सतगुरु सबद का, तनिक न करै बिचार।
नाव मिली खेवट नहीँ, कैसे उतरै पार ॥ २१ ॥
पलटू भजै न राम को, मूरख नर तन पाय।
देखो जिय की खोय[2] को, फिरि फिरि गोता खाय ॥ २२ ॥
पलटू संपति सूम की, खरचै ना इक बुन्द।
सब कोउ पीवै कूप जल, खारी पड़ा समुन्द ॥ २३ ॥
पलटू मो को देखि कै, लोगन का भा रोग।
मैं अपने रंग बावरी, जरि जरि मरते लोग ॥ २४ ॥
सतगुरु बपुरा क्या करै, चेला करै न होस।
पलटू भीँजै मोम नहिं, जल को दीजै दोस ॥ २५ ॥

(१) जगन्नाथ, त्रिलोकी-नाथ। (२) आदत, बान।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जानि बूझि कूआँ परै, पलटू चलै न देख।
मन माया में मिलि गया, मारा गया बिबेक ॥ २६ ॥
पलटू उन्हें सराहिये, जिन की निरमल बुद्ध।
जोरी जारी एक नहिं, बानी कहते सुद्ध ॥ २७ ॥
पलटू पावै खसम जो, रहै संत की खेढ़[१]।
नाचन को ढंग नाहिं है, कहती आँगन टेढ़ ॥ २८ ॥

तुलसी साहिब

जीवन-समय—१८२० से १९०० तक। जन्म स्थान—पूना (बंबई प्रान्त)। सतसंग स्थान - जोगिया गाँव (शहर हाथरस)। जाति और आश्रम—दक्षिणी ब्राह्मण, भेष।

वह राजा पूना के युवराज थे जो राज-गद्दी पर बिठलाये जाने के डर से देश छोड़ कर भाग गये। इन का पता न चलने पर राजा इन के छोटे भाई बाजीराव को गद्दी देकर आप अलग हो गये। तुलसी साहिब बहुत काल तक देशाटन करते और जीवों को चिताते हुए हाथरस में आन बिराजे और वहीं अंत समय तक रह कर चोला त्याग किया। इनके जीवन-चरित्र में एक अनूठी बात इनकी आप लिखी हुई यह है कि पूर्ब्ब जन्म में गुसाईं तुलसीदास के चोले में आप ही थे और तब ही घट-रामायण को रचा परंतु चारो ओर से पंडितों भेषों और सर्ब मत वालों का भारी बिरोध देख कर उस ग्रंथ को गुप्त कर दिया, दूसरी सगुण रामायण उस की जगह समयानुसार बना दी, और घट-रामायण को साढ़े तीनसौ बरस पीछे दूसरा चोला धारण करने पर प्रगट किया। इन के अनुपम ग्रन्थ घट रामायण के सिवाय रत्न-सागर, शब्दावली और पद्म सागर का अधूरा ग्रन्थ हैं जो सब बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग में पूरे जीवन-चरित्र सहित छपे हैं।

॥ गुरुदेव ॥

तन मन से साचा रहै, गहै जो सतगुरु बाँहि।
काल कधी रोकै नहीं, देवै राह बताइ ॥ १ ॥

---

(१) समूह।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संतन की महिमा सभी, कहते माहिँ लजाय।
चरन आस सब कोइ करै, भागन से मिलि जाय ॥ २ ॥
यह अथाह के थाह को, कोटिन करैं उपाव।
सतसँग बिन जानै नहीँ, दया दीन परभाव ॥ ३ ॥
मरत जीव जो चरन से, सहज चलत के माहिँ।
जो खुँदाय कुँचि के मरै, छूवत नर तन पाय ॥ ४ ॥
संत चरन परताप से, खानि राह रुकि जाय।
नर तन मेँ सतगुरु मिलैँ, मेटैँ सकल सुभाय ॥ ५ ॥
अंदर की आँखी नहीँ, बाहर की गइ फूटि।
बिन सतगुरु औघट बहै, कभी न बंधन छूटि ॥ ६ ॥
अबिनासी आतम कह्यो, रह्यो करम के बंद।
उलटि न चीन्हा आदि को, बिन सतगुरु की संध ॥ ७ ॥
सतगुरु संत दयाल बिन, सब जिव काल चबाय।
बाँधि करम के बस रखै, सकै न सूरति पाय ॥ ८ ॥
नर तन दुरलभ ना मिलै, खिलै कँवल रस माहिँ।
खाय अमर फल अगम के, जो सतगुरु सरनाय ॥ ९ ॥
बड़े बड़ाई पाय कर, रोम रोम हंकार।
सतगुरु के परचे बिना, चारो बरन चमार ॥ १० ॥
सतगुरु संत दयाल से, करम रेख मिटि जाय।
मन तन सूरति साच से, ज्योँ का त्योँ रहि जाय ॥ ११ ॥

॥ सुरत-शब्द योग ॥

सुरति-सबद के भेद बिन, होय न पूरन काम।
चगर चाम की दृष्टि मेँ, तन तत तिमिर[1] समान ॥ १ ॥

---

(१) अंधकार।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

करतब तौ सब ने किया, जस जस जिन को भेद।
कर्म खेद छूटी नहीँ, सूरति-सबद उमेद ॥ २ ॥
जो उपाय छल से करै, मिलै न उनका भेद।
फेर जुगन जुग मेँ सहै, उन गति अगम अभेद ॥ ३ ॥

॥ चितावनी ॥

अरब खरब लौँ दरब है, उदय अस्त लौँ राज।
तुलसी जो निज मरन है, तौ आवै केहि काज ॥ १ ॥
दिना चार का खेल है, झूँठा जक्त पसार।
जिन बिचार पति ना लखा, बूड़े भौजल धार ॥ २ ॥
ज्योँ माखी पर पाँव से, सहद माहिँ लिपटाय।
ऐसे ही जग-जीव जड़, झारि बिषै रस खाय ॥ ३ ॥

॥ विरह ॥

आठ पहर रोवत रही, भरि भरि अँखियाँ नीर।
पीर पिया परदेस की, जा से भँवर अधीर ॥ १ ॥
चार पाँच परपंच मेँ, कस कस रहन हमार।
चार चुगल चुगली करैँ, रहुँ बिचैन मन मार ॥ २ ॥

॥ प्रेम ॥

तुलसी ऐसी प्रीत कर, जैसे चन्द चकोर।
चोँच झुकी गरदन लगी, चितवत वाही ओर ॥ १ ॥
उत्तम औ चंडाल घर, जहँ दीपक उजियार।
तुलसी मते पतंग के, सभी जोत इकसार ॥ २ ॥
तुलसी कँवलन जल बसै, रबि ससि बसै अकास।
जो जा के मन मेँ बसै, सो ताही के पास ॥ ३ ॥
मकरी उतरै तार से, पुनि गहि चढ़त जो तार।
जा का जा से मन रम्यो, पहुँचत लगै न बार ॥ ४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अज्ञाकारी पीव की, रहै पिया के संग।
तन मन से सेवा करै, और न दूजा रंग ॥ ५ ॥
पति की ओर निहारिये, औरन से क्या काम।
सभी देवता छोड़ कर, जपिये गुरु का नाम ॥ ६ ॥
बाक[1] ज्ञान में निपुन है, अंदर का नहिँ भेद।
उग्र[2] ज्ञान बिन भक्ति के, जुग जुग पावै खेद ॥ ७ ॥
भक्ति भाव बूझे बिना, ज्ञान उदै नहिँ होय।
बिना ज्ञान अज्ञान को, काढ़ सकै नहिँ कोय ॥ ८ ॥

॥ संत और साध ॥

सिंधु अथाह न थाह कहिँ, मिलै न वा का अंत।
भटक भटक भव पच मरै, को गति पावै संत ॥ १ ॥
संतन से माँगै नहीँ, घट घट जाननहार।
जीव दया हिरदे बसै, नाहक करत बिचार ॥ २ ॥
पारबती या भूमि का, क्या कहुँ बरनन भाग।
दस हजार के बाद यहँ, संत रहै यहि जाग[3] ॥ ३ ॥
सुनु हिरदे[4] कहुँ संत की, महिमा अगम अपार।
कर प्रनाम वहि भूमि को, संकर बारम्बार ॥ ४ ॥
संत चरन अति बहुत बड़, जानत चतुर सुजान।
जो संतन हित ना करै, सो नर पसू समान ॥ ५ ॥
संत चरन कारज सरै, हरै सकल बिष ब्याधि।
साध सुरति चरनन रहै, टारै सकल उपाधि ॥ ६ ॥

(१) बाच या ज़बानी। (२) तीव्र, प्रचंड। (३) जगह। (४) नाम एक मुख्य शिष्य का।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जो सनमुख रहै संत के, अंत कहूँ नहिँ जाय।
सूरति डोरी लौ लगै, जहँ को तहाँ समाय ॥ ७ ॥
संत सरन जो जिव रहै, गहै जो उनकी बाँह।
थाह बतावैँ समुँद की, बल्ली भवजल माहिँ ॥ ८ ॥
संत मता दुरलभ कहैँ, सतसँग में गोहराय।
बड़े बड़े हारे सभी, संतन की गति गाय ॥ ९ ॥
उपदेसी वहि देस के, भेष भवन के पार।
सार समझ सुलटी कहैँ, जग करि उलटि बिचार ॥ १० ॥

॥ भक्तजन ॥

सूरज बसै अकास में, किरन भूमि पर बास।
जो अकास उलटे चढ़ै, सो सतगुरु का दास ॥ १ ॥
अललपच्छ[1] का अंड ज्यौं, उलटि चलै अस्मान।
त्यौं सूरति सत सजन की, आठ पहर गुरु ध्यान ॥ २ ॥
कोई तो तन मन दुखी, कोई चित्त उदास।
एक एक दुख सभन को, सुखी संत का दास ॥ ३ ॥

॥ सतसंग महिमा ॥

संतन की साखी सभी, देत जुगन जुग ज्ञान।
सतसँग करके बूझ ले, करत सभी परमान ॥ १ ॥
जल मिसरी कोइ ना कहै, सर्बत नाम कहाय।
योँ घुल के सतसँग करै, काहे भरम समाय ॥ २ ॥
बिष रँग के सँग मेँ पगे, किया न मन को तंग।
संग मिलै मधुमालती, जब निकसै कुछ रंग ॥ ३ ॥

(१) अललपच्छ या सारदूल जो आकाश में इतने ऊँचे पर अंडा देता है कि पृथ्वी पर पहुँचने के पहिले अंडा फूट कर बच्चा उड़ जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ परिचय ॥

जगमग अंदर में हिया, दिया न बाती तेल।
परम प्रकासिक पुरुष का, कहा बताऊँ खेल ॥ १ ॥
घट अकास के मद्ध में, पंछी परम प्रकास।
समुँद सिखर सूरत चढ़ी, पावै तुलसीदास ॥ २ ॥
लख प्रकास पद तेज को, सेज गवन गति गाय।
पाइ पद्म सूरत चली, पिया भवन के माँय ॥ ३ ॥
अली अकास तुरत चली, गली गगन के माँय।
धाय धमक ऊपर चढ़ी, खड़ी महल मुसकाय ॥ ४ ॥
आतम तेज अकास में, बास भवन दस माँय।
मन मारग सूरत चली, अंदर ऐन समाय ॥ ५ ॥
पद्म पार पद लखि पड़ा, जानत संत सुजान।
तुलसिदास गति अगम की, सुरत लगी असमान ॥ ६ ॥
सुरत सिखर अंदर खड़ी, चढ़ी जो दीपक बार।
आतम रूप अकास का, देखै बिमल बहार ॥ ७ ॥

॥ उपदेश ॥

तुलसी या संसार में, पाँच रतन हैं सार।
साध संग सतगुरु सरन, दया दीन उपकार ॥ १ ॥
जैसो तैसो पातकी, आवै गुरु की ओट।
गाँठी बाँधै संत से, ना परखैं खर खोट ॥ २ ॥
सोना काई नहिँ लगै, लोहा घुन नहिँ खाय।
बुरा भला जो गुर-भगत, कबहूँ नरक न जाय ॥ ३ ॥
दर दरबारी साध हैं, उन से सब कुछ होय।
तुरत मिलावैं नाम से, उन्हैं मिलै जो कोय ॥ ४ ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

काम क्रोध मद लोभ की, जब लग मन में खान।
तुलसी पंडित मूरखा, दोनों एक समान॥ ५॥
पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥ ६॥
चार[1] अठारह[1] नौ पढ़े, षट[1] पढ़ि खोया मूल।
सुरत सबद चीन्हे बिना, ज्यों पंछी, चंडूल॥ ७॥
तुलसी मैं तू जो तजै, भजै दीन-गति होय।
गुरू नवै जो सिष्य को, साध कहावै सोय॥ ८॥
गुरू बतावैं पुरब को, चेला पच्छिम जाय।
अंदर टाटी कपट की, मिलै जो क्योंकर आय॥ ९॥
सुरत डोरि सतगुरु गहै, रहै चरन के माहिँ।
सुन्न सुरत मिल सबदही, डोरिहि डोरि समाय॥१०॥
सहज भाव से जो कछू, आवै अमृत भाव।
यह सुभाव भीतर बसै, जब कुछ चलै न दाँव॥११॥
खाय पियै उतना रखै, बाकी रखै न पास।
और आस ब्यापै नहीँ, सतगुरु का बिस्वास॥१२॥
गृहस्थी है हिरदे दया, भूखे कछू खिलाय।
बाक सनातन यों कहे, सभी सभी गोहराय॥१३॥
रस इंद्री गुन स्वाद से, बंधन भया अजान।
जान भुलानो आदि को, बादै जनम सिरान[2]॥१४॥
स्वर्ग छाड़ि सब देव यह, नर तन माँगत झार।
यहि बिचार मन में करै, तब पावैं निरधार॥१५॥

---

(१) चार वेद, अठारह पुरान और छः शास्त्र। (२) बीता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ भेद ॥

छर छत्तीसो भवन मेँ, अच्छर ब्रह्म समान।
स्रवन नैन मुख नासिका, इंद्री पाँच प्रमान ॥ १ ॥
छर अच्छर से भिन्न है, निःअच्छर निःनाम।
धाम लोक चौथे बसै, जानत संत सुजान ॥ २ ॥
सुन्न अकास के भास मेँ, स्वासा निकसत पौन।
बंकनाल के बीच मेँ, इँगल पिंगल पर जौन ॥ ३ ॥
सुई अग्र वह द्वार है, सुखमनि घाट कहाय।
धाइ धाइ स्वासा चढ़ै, जो जो जोग लखाय ॥ ४ ॥
संत समुँद घर अगम को, ज्ञान जोग नहिं ध्यान।
ये तीनाँ पहुँचैँ नहीँ, जा की करत बखान ॥ ५ ॥
ज्ञान ब्रह्म आतम कहे, मन जड़ चेतन गाँठ।
तन्न इंद्री सुख बंध मेँ, बहुत गुनन की बाट ॥ ६ ॥
आतम अगम अकास मेँ, नैन निरखि मन बास।
फाँस फँसानी गुनन मेँ, या को कहत अकास ॥ ७ ॥
ध्यान धरत जोगी मुए, प्रानायाम अधार।
संत सिखर के पार की, भाखत अगम अपार ॥ ८ ॥
परथम नर तत पाँच मेँ, पिंडज मेँ तत चार।
तीन तत्त अंडज रहै, उष्मज दो बिस्तार ॥ ९ ॥

॥ करनी और पिछले कर्म ॥

उजला आया वतन[१] से, जतन किया करि काल।
चाल भुलानी आपनी, योँ भये बंधन जाल ॥ १ ॥

---

(१) घर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लाख बात करके कहै, नहिँ मानै गुरु बैन।
चैन कहो कहँ से मिलै, समझै न सतसँग कहन ॥ २ ॥
इन्द्री सुख रस रीति मेँ, बिलसत जनम सिराय।
कहा कहूँ अज्ञान को, नेक न मन सरमाय ॥ ३ ॥
अब समझे से का भयो, चिड़िया चुग गई खेत।
चेत किया नहिँ आप मेँ, रहे कुटुम्ब के हेत ॥ ४ ॥
नर देही तत हीन से, पिंडज माहिँ पसार।
सार भुलानो आपनो, खानइ खानि खुवार[1] ॥ ५ ॥
ज्ञान ध्यान जोगी जती, नहिँ कोइ पावै भेद।
खेद कर्म सुभ असुभ के, फल करनी कहे बेद ॥ ६ ॥
की अपनी करनी करै, की गुरु सरन उबार।
दोनोँ मेँ कोइ एक नहिँ, नाहक फिरत लबार ॥ ७ ॥
कर्म करै बरियार से, तत्त छीन होइ जाय।
तत्त घटे घटि खानि मेँ, दुख सुख माहिँ बिलाय ॥ ८ ॥
नर तन तो पावै नहीँ, पसु पंछिन मेँ जाय।
असथावर उष्मज रहै, नर तन बाद गँवाय ॥ ९ ॥
हिरदे[2] करम कराय के, देत पलीता बारि।
अंदर आगि लगाय ज्योँ, दगन करे तन झारि ॥ १० ॥
जुगन जुगन बंधन पड़ै, कर्म काल के द्वार।
नर्क स्वर्ग की सुधि नहीँ, दुख सुख बारम्बार ॥ ११ ॥
कर्म सारनी[3] बुधि बसी, सूरत रही अधीन।
आसा के बस मेँ पड़ी, बासा बिपति मलीन ॥ १२ ॥

(१) ख़राब। (२) नाम शिष्य का। (३) कुटनी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्म आस की बास में, जोनी जोनि समाय।
जो जैसी करनी करै, सो तैसे फल खाय ॥१३॥

॥ मन ॥

मन तरंग तन में चलै, आठो पहर उपाव।
थाह कधी पावै नहीं, छिन छिन छल परभाव ॥ १ ॥
घटी बढ़ी कुछ नजर में आय न ज्ञान बिचार।
जब तरंग उसकी उठै, ज्यों सलिता[1] धधकार ॥ २ ॥
पाँच पचीसो तीन मिलि, इच्छा कीन्ह प्रचंड।
मार मार सब कोउ करै, ज्यों दुखिया पर डंड ॥ ३ ॥
बान बिचारै जुद्ध को, मन मनसा रनभुम्म।
सबद् सिरोही[2] गुरुन की, ले फोड़ै घट कुंभ ॥ ४ ॥
जल ओला गोला भयो, फिर घुलि पानी होय।
संत चरन गुरु ध्यान से, मन घुल जावै सोय ॥ ५ ॥

॥ मान ॥

नीच नोच सब तरि गये, संत चरन लौलीन।
जातहिं के अभिमान से, डूबे बहुत कुलीन ॥ १ ॥
पोथी पढ़ने में लगे, चढ़ा ज्ञान का मान।
सभा माहिं मोटे भये, गुन के संग गुमान ॥ २ ॥

॥ दुष्ट ॥

मोती सज्जन को कहैं, संख असज्जन जान।
ज्यों कनिष्ट[3] सीपी भई, ऐसे परख पिछान ॥ १ ॥
कुटिल बचन बोलै सदा, कधी न मानै हार।
धार बह्यो बहु फिरत है, कर्म कुमति अनुसार ॥ २ ॥

(१) नदी। (२) तलवार। (३) छोटी, दीन।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कूड़ कुमति में गरक[1] है, फरक न मानै एक।
जो कोइ अक्किल की कहै, उरझै उलटि परेत ॥ ३ ॥
अपकीरति जग में बढ़ी, सब सिर डारै धूर।
लाज कधी आवै नहीं, साची कहै न मूर[2] ॥ ४ ॥

॥ जीव की अज्ञानता ॥

यह अज्ञानी जीव की, क्योंकर करूँ बखान।
अपनी बुद्धि बिकार की, करै न मन पहिचान ॥ १ ॥
यह जग जीव अनादि से, भटकत फिरै निकाम।
काम बाम[3] मन में बसै, जुग जुग से भरमान ॥ २ ॥
वे दयाल जुग जुग कहैं, बहिरा सुनै न कान।
ज्यों मतवाले मद पिये, छके नसे के माँह ॥ ३ ॥
हाय हाय कर पच मरे, कुटुँब काज अज्ञान।
मान बड़ाई जक्त की, डूबे करि अभिमान ॥ ४ ॥
जुलमी की जाली पड़े, बड़े बड़े उमराव।
दाँव कधी लागै नहीं, भागन कवन उपाव ॥ ५ ॥

॥ कलियुग महिमा ॥

कलजुग सम नहिँ आन जुग, संत धरैं औतार।
जीव सरन होइ संत के, भवजल उतरै पार ॥ १ ॥
संत चरन बिस्वास से, कलजुग में निरधार।
सतजुग तो बंधन करै, कहि सब संत पुकार ॥ २ ॥

॥ मिश्रित ॥

मन राखत बैराग में, घर में राखत राँड़।
तुलसी किड़वा नीम का, चाखन चाहत खाँड़ ॥ १ ॥

---

(१) डूबा हुआ। (२) असल बात। (३) स्त्री।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पढ़ पढ़ के सब जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई अच्छर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय ॥ २ ॥
लिख लिख के सब जग लिख्यो, पढ़ पढ़ के कहा कीन्ह।
बढ़ बढ़ के घट घट गये, तुलसी संत न चीन्ह ॥ ३ ॥
तुलसी सम्पति के सखा, पड़त बिपति में चीन्ह।
सज्जन कंचन कसन को, बिपति कसौटी कीन्ह ॥ ४ ॥
मन थिर करि जानैं नहीं, ब्रह्म कहैं गोहराय।
चौरासी के फंद में, फेरि पड़ैंगे आय ॥ ५ ॥
एक अलख की पलक में, खलक रचा सब सोय।
जानु निरंजन काल को, जाल जगत सब कोय ॥ ६ ॥
सुरत सैल असमान की, लख पावै कोइ संत।
तुलसी जग जानै नहीं, अति उतंग पिया पंथ ॥ ७ ॥
सूप ज्ञान सज्जन गहै, फूफर[१] देत निकार।
सार हिये अंदर धरै, पल पल करत बिचार ॥ ८ ॥
जो तिरलोकी नाथ की, माया है बलवान।
सो सिद्धी सिध सब कहैं, आप रूप भगवान ॥ ९ ॥
आँखी में जाले पड़े, काढ़ै कौन निकारि।
जब सथिया[२] नस्तर भरै, सुरत सलाई डारि ॥१०॥
सुंदर सुरत सुधारि के, गुरु चरनन कर ध्यान।
भान उदय नितही लखै, संत बचन परमान ॥११॥
कलू काल की कहा कहूँ, नर नारी मतिहीन।
दीन भाव दरसै नहीं, मैली बुद्धि मलीन ॥१२॥

---

(१) चोकर। (२) जर्राह।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

काल जबर जुलमी बड़ा, खड़ा रहै मैदान।
कर कमान खैंचे फिरै, मारै गोसा[1] तान ॥१३॥
करता ने काया रची, जुग जुग जग बिस्तार।
सार दियो बिसराय के, घर घर करत पुकार ॥१४॥
बड़े भक्त जग में बजैं, मँजैं[2] न मन का मैल।
खेल खिलाड़ी काल के, फँसे गुमर[3] की गैल ॥१५॥
घड़ी घड़ी स्वासा घटै, आसा अंग बिलाय।
चाह चमारी चूहड़ी[4], घर घर सब को खाय ॥१६॥
जैसे को तैसा मिलै, वैसी कहै बनाय।
दोउन की बिधि यों मिलै, एक ठिकाने जाय ॥१७॥
जोंक रुधिर को पियत है, जो कोइ जल में जाय।
कँवल रबी[5] देखत खिलै, ऐसे अंग सुभाय ॥१८॥
नर देही दुर्लभ कहैं, मिलै न बारम्बार।
धार बड़ी भवसिंध की, क्योंकर उतरै पार ॥१९॥
स्वर्ग भोग पुन[6] के उदय, भोग करै भुगताय।
पुन्य भोग जब करि चुकै, फिर चौरासी जाय ॥२०॥
सूरज ब्रह्म अकास में, भास भूमि परकास।
किरन जीव यहि आतमा, सब घट कीन्हो बास ॥२१॥
माया भगवत की बड़ी, को पावै परभाव।
को लीला उनकी लखै, छल बल बहुर उपाव ॥२२॥

---

(१) तीर की गाँसी या भाला। (२) माँजैं। (३) गुमराही। (४) भंगिन। (५) सूरज। (६) पुन्य।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

गुसाँई तुलसी दासजी की चुनी हुई साखियाँ जो छपने से रह गई थीं

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(देखो पृष्ठ ७१-७५)

॥ नाम ॥

राम नाम आधी रती, पाप के कोटि पहार।
तुलसी जस रंजक अगिन, जारि करैं तेहिँ छार ॥ १ ॥
तुलसी रसना[1] राम कहु, पाप केतिक अनुमान।
जिमि पनिहारी जेवरी[2], खींचैं कटत पषान[3] ॥ २ ॥
तुलसी जा के मुखन तैं, धोखेहु निकरहि राम।
ता के पग की पैंतरी[4], मेरे तन को चाम ॥ ३ ॥
निरगुन तैं इहि भाँति बड़, नाम प्रभाव अपार।
कहहुँ नाम बड़ राम तैं, निज बिचार अनुसार ॥ ४ ॥
बारि[5] मथे बरु होय घृत, सिकता[6] तैं बरु तेल।
बिनु हरि भजन न भव तरिय, यह सिद्धांत अपेल[7] ॥ ५ ॥
मिटहिँ पाप परिपंच सब, अखिल अमंगल भार।
लोक सुजस परलोक सुख, सुमिरत नाम तुम्हार ॥ ६ ॥

॥ प्रेम ॥

चतुराई चूल्हे परै, जम गहि ज्ञानहिँ खाय।
तुलसी प्रेम न राम पद, सब जर मूल नसाय ॥ १ ॥
तुलसी हम सोँ राम सोँ, भलो मिलो है सूत।
छाड़े बनै न सँग रहे, ज्योँ घर माहिँ कपूत ॥ २ ॥
रटत रटत रसना लटी, तृषा सूखिगो अँग।
तुलसी चातक के हिये, नित नूतनहिँ तरंग ॥ ३ ॥
गंगा जमुना सरसुती, सात सिंधु भरिपूर।
तुलसी चातक के मते, बिन स्वाँती सब धूर ॥ ४ ॥

---

(१) जीभ। (२) रस्सी। (३) पत्थर। (४) जूती। (५) पानी। (६) बालू। (७) अमिट, निश्चय।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ब्याधा बधो पपीहरा, परो गंग जल जाय ।
चोँच मूँदि पीवै नहीँ, धिग पिये मो, प्रन जाय ॥ ५ ॥

चातक सुतहिँ सिखाव नित, आन नीर जनि लेहु ।
ये हमरे कुल को धरम, एक स्वाँति सोँ नेहु ॥ ६ ॥

तुलसी केवल राम पद, लागै सरल सनेह ।
तौ घर घट बन बाट महँ, कतहुँ रहै किन[1] देंह ॥ ७ ॥

जिमि मनि बिन ब्याकुल भुजँग, जल बिन ब्याकुल मीन ।
तिमि देखे रघुनाथ बिन, तलफत हौँ मैँ दीन ॥ ८ ॥

निंदा अस्तुति उभय[2] सम, ममता मम पद कंज ।
ते सज्जन मम प्रान प्रिय, गुन मंदिर सुख पुंज ॥ ९ ॥

॥ विश्वास ॥

एक भरोसा एक बल, एक आस बिस्वास ।
स्वाँति सलिल[3] गुरु चरन हैँ, चात्रिक तुलसी दास ॥ १ ॥

भाग छोट अभिलाष बड़, करहुँ एक बिस्वास ।
पैहहिँ सुख सुनि सुजन जन, खल करिहैँ उपहास[4] ॥ २ ॥

कोटि बिघन संकट बिकट, कोटि सत्रु जो साथ ।
तुलसी बल नहिँ करि सकैँ, जो सुदृष्ट रघुनाथ ॥ ३ ॥

लगन महूरत जोग बल, तुलसी गनत न काहि ।
राम भये जेहिँ दाहिने, सबै दाहिने ताहि ॥ ४ ॥

प्रभु प्रभुता जा कहँ दई, बोल सहित गहि बाँह ।
तुलसी ते गाजत फिरहिँ, राम छत्र की छाँह ॥ ५ ॥

ऊँची जाति पपीहरा, नीचो पियत न नीर ।
कै याचै घनस्याम सोँ, कै दुख सहै सरीर ॥ ६ ॥

---

(१) क्योँ न । (२) दोनोँ । (३) पानी । (४) हँसी, मसख़री ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मसकहिँ करहिँ बिरंच प्रभु, अजहिँ मसक तेँ हीन[1] ।
अस बिचारि तजि संसय, रामहिँ भजहिँ प्रबीन ॥ ७ ॥

॥ बिनय ॥

नाथ एक बर माँगहूँ, मोहिँ कृपा करि देहु ।
जन्म जन्म प्रभु पद कमल, कबहुँ घटै जनि नेहु ॥ १ ॥
बिनती करि अरु नाइ सिर, कहुँ कर जोरि बहोरि ।
चरन सरोरुह[2] नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि ॥ २ ॥
बार बार बर माँगहूँ, हरषि देहु स्रीरंग ।
पद सरोज[2] अनपायिनी[3], भक्ति सदा सतसंग ॥ ३ ॥
प्रनत-पाल[4] रघुबंस-मनि, करुना-सिंधु खरारि[5] ।
गये सरन प्रभु राखिहैँ, सब अपराध बिसारि ॥ ४ ॥
स्रवन सुजस सुनि आयहूँ, प्रभु भंजन भय भीर ।
त्राहि त्राहि आरत-हरन[6], सरन-सुखद रघुबीर ॥ ५ ॥
एक मंद मैँ मोह बस, कुटिल-हृदय अज्ञान ।
पुनि प्रभु मोहिँ बिसारेऊ, दीन-बंधु भगवान ॥ ६ ॥
नहिँ बिद्या नहिँ बाँहु बल, नहिँ खरचन को दाम ।
मो सम पतित पतंग की, तुम पत राखो राम ॥ ७ ॥
सुनहु राम स्वामी सुभग, चलन चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहूँ मैँ पातकी, अंत काल गति तोरि ॥ ८ ॥
यद्यपि जन्म कुमातु तेँ, मैँ सठ सदा सदोस ।
आपन जानि न त्यागिहैँ, मोहिँ रघुबीर भरोस ॥ ९ ॥
कृपा भलाई आपनी, नाथ कीन्ह भल मोर ।
दूषन भे भूषन सरिस, सुजस चारु[7] चहुँ ओर ॥ १०॥

(१) ईश्वर मच्छड़ को ब्रह्मा और ब्रह्मा को मच्छड़ से भी तुच्छ बना देता है। (२) कमल। (३) अमर और अडिग्ग। (४) प्रण के पालने वाले। (५) खर राक्षस के मारने वाले। (६) कष्ट के हरने वाले। (७) सुंदर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कामी नारि पियारि जिमि, लोभी के प्रिय दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर, प्रिय लागहु मोहिँ राम॥ ११॥
भक्त कल्प-तरु प्रनत-हित[1], कृपासिन्धु सुख-धाम।
सोइ निज भक्ती मोहिँ प्रभु, देहु दया करि राम॥ १२॥
अर्थ न धर्म न काम रुचि, गति न चहौँ निरबान।
जन्म जन्म रति राम पद, यदि बरदान न आन॥ १३॥
संत सरल चित जगत-हित, जानि स्वभाव सनेहु।
बाल बिनय सुनि करि कृपा, राम चरन रति देहु॥ १४॥
दीनानाथ दयाल प्रभु, तुम लगि मेरी दौर।
जैसे काग जहाज को, सूझत और न ठौर॥ १५॥

॥ सतसंग॥

तात स्वर्ग अपवर्ग[2] सुख, धरिय तुला इक अंग।
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसंग॥

॥ उपदेश॥

मात पिता गुरु स्वामि सिख[3], सिर धर करिय सुभाय।
लहेउ लाभ तिन्ह जन्म कर, नतरु[4] जन्म जग जाय॥ १॥
तात तीन अति प्रबल खल, काम क्रोध अरु लोभ।
मुनि विज्ञान निधान मन, करहिं निमिष महँ छोभ[5]॥ २॥
लोभ के इच्छा दंभ[6] बल, काम के केवल नारि।
क्रोध के पुरुष बचन बल, मुनिवर कहहिँ बिचारि॥ ३॥
तब लगि कुसल न जीव कहँ, सपनेहु मन बिस्राम।
जब लगि भजन न राम कहँ, सोक धाम तजि काम॥ ४॥

---

(१) प्रण के पालने वाले। (२) अंतिम पद, मोक्ष-पद। (३) सीख, शिक्षा।
(४) नहीँ तो। (५) चलायमान, उद्विग्न। (६) पाखंड।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जदपि प्रथम दुख पावै, रोवै बाल अधीर।
ब्याधि नास हित जननी, गनै न सो सिसु पीर[1] ॥ ५ ॥
त्यौं रघुपति निज दास कर, हरहिँ मान हित लागि।
तुलसिदास ऐसे प्रभुहिँ, कस न भजहु भ्रम त्यागि ॥ ६ ॥
तुलसी बुरा न मानिये, जो गँवार कहि जाय।
जैसे घर कै नरदहा[2], बुरा भला बहि जाय ॥ ७ ॥
तुलसी बिलम न कीजिये, भजि लीजै रघुबीर।
तन तरकस से जात हैँ, साँस सरीखे तीर ॥ ८ ॥
जो चेतन कहँ जड़ करै, जड़हि करै चैतन्य।
अस समर्थ रघुनायकहिँ, भजहिँ जीव सो धन्य ॥ ९ ॥
हरि माया-कृत दोष गुन, बिनु हरि-भजन न जाहिँ।
भजिय राम सब काम तजि, अस बिचारि मन माहिँ ॥१०॥
तुलसी सब छल छाड़ि कै, कीजै राम सनेहु।
अंतर[3] पति सोँ है कहा, जिन देखी सब देह ॥११॥
सब ही को परखे लखे, बहुत कहे का होय।
तुलसी तेरो राम तजि, हित जग और न कोय ॥१२॥
राम राम रटिबो भलो, तुलसी खता न खाय।
लरिकाईँ तैँ पैरिबो, धोखे बूड़ि न जाय ॥१३॥
तुलसी मीठे बचन तैँ, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरन इक मंत्र है, तजि दे बचन कठोर ॥१४॥
सन्मुख ह्वै रघुनाथ के, देहु सकल जग पीठि।
तजे केँचुरी उरग[4] कहँ, होत अधिक अति दीठि ॥१५॥

---

(१) बालक का रोग दूर करने को माता कठोर बन कर उसका फोड़ा चिरवाती है और उस के रोने की परवाह नहीं करती। (२) नाबदान। (३) परदा। (४) साँप।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

काह भयो बन बन फिरे, जो बनि आयो नाहिँ ।
बनते बनते बनि गयो, तुलसी घर ही माहिँ ॥१६॥
बातहिँ बातहिँ बनि परै, बातहिँ बात नसाय ।
बातहिँ आदिहिँ दीप भव, बातहिँ अंत बुताय ॥१७॥
बात बिना अतिसय बिकल, बातहिँ तेँ हरखात ।
बनत बात बर बात तेँ, करत बात बर घात ॥१८॥
तुलसी जाने बात बिन, बिगरत हरइक बात ।
अनजाने दुख बात के, जानि परत कुसलात ॥१६॥
प्रेम बैर अरु पुन्य अघ, जस अपजस जय हान ।
बात बीज इन सबन को, तुलसी कहहिँ सुजान ॥२०॥
तब लगि जोगी जगत-गुरु, जब लगि रहै निरास ।
जब आसा मन मेँ जगी, जगत गुरू वह दास ॥२१॥
तुलसी सन्तत[1] तेँ सुनै, सन्तत इहै बिचार ।
तन धन चंचल अबल जग, जुग जुग पर उपकार ॥२२॥
मित्र के अवगुन मित्र को, पर महँ भाषत नाहिँ ।
कूप छाँह जिमि आपनी, राखत आपहि माहिँ ॥२३॥
तुलसी साथी बिपति के, बिद्या बिनय बिबेक ।
साहस सुकृत रु सत्त ब्रत, राम भरोसो एक ॥२४॥
तुलसी असमय के सखा, साहस धरम बिचार ।
सुकृत सील सुभाव ऋजु[2], राम सरन आधार ॥२५॥
बिद्या बिनय बिबेक रति, रीति जासु उर होय ।
राम परायन[3] सो सदा, आपद ताहि न कोय ॥२६॥
तुलसी झगरा बड़न के, बीच परहु जनि धाय ।
लड़े लोह पाहन दोऊ, बीच रुई जरि जाय ॥२७॥

(१) सदा । (२) सच्चा, खरा । (३) उपासक ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तुलसी निज कीरति चहहिँ, पर कीरति कहँ खोय।
तिन के मुहँ मसि लागि है, मिटहि न मरिहैँ धोय ॥२८॥

नीच चंग[1] सम जानिबो, सुनि लखि तुलसीदास।
ढील देत महिँ गिरि परत, खैंचत चढ़त अकास ॥२९॥

तुलसी देवल राम के, लागे लाख करोर।
काक अभागे हगि भरे, महिमा भयेउ न थोर ॥३०॥

जो मधु दीन्हें तेँ मरै, माहुर देउ न ताउ।
जग जिति हारे परसुधर[2], हारि जिते रघुराउ ॥३१॥

क्रोध न रसना खोलिये, बरु खोलब तरवारि।
सुनत मधुर परिनाम हित, बोलब बचन बिचारि ॥३२॥

दंभ सहित कलि धरम सब, छल समेत ब्यवहार।
स्वारथ सहित सनेह सब, रुचि अनुहरत अचार ॥३३॥

का भाषा का संसकृत, बिभव चाहिये साच।
काम तो आवै कामरी, का ले करिय कमाच[3] ॥३४॥

तुलसी सो समरथ सुमति, सुकृति साधु सुजान।
जो बिचारि ब्यवहरत जग, खरच लाभ अनुमान ॥३५॥

बड़े रतहिँ लघु के गुनहिँ, तुलसी लघुहिँ न हेत।
गुंजा[4] तेँ मुकता अरुन[5], गुँजा होत न स्वेत ॥३६॥

ज्योँ बरदा बनिजार के, फिरत घनेरे देस।
खाँड़ भरे भुस खात है, बिन गुरु के उपदेस ॥३७॥

॥ दुर्जन ॥

दुरजन दुरपन सम सदा, करि देखो हिय दौर।
सनमुख की गति और है, बिमुख भये कछु और ॥

॥ मान ॥

स्वामी होनो सहज है, दुरलभ होनो दास।
गाडर[6] लाये ऊन को, लागी चरै कपास ॥

(१) पतंग, गुड्डी। (२) परसराम। (३) दुशाला। (४) घुँघची। (५) लाल। (६) भेड़।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

॥ मिश्रित ॥

भले भलाई पै लहहिँ, लहहिँ निचाई नीच।
सुधा सराहिय अमरता, गरल[1] सराहिय मीच[2] ॥ १ ॥
नाम पाहरू[3] दिवस निसि, ध्यान तुम्हार कपाट[4]।
लोचन निज पद जंत्रिका[5], प्रान जाहिँ केहि बाट ॥ २ ॥
व्यापि रहेउ संसार महँ, माया कपट प्रचंड।
सेना-पति कामादि भट, दंभ कपट पाखंड ॥ ३ ॥
संत कहहिँ अस नीति प्रभु, स्रुति पुरान जो गाव।
होइ न बिमल बिबेक उर, गुरु सन किये दुराव ॥ ४ ॥
राका ससि षोड़स उगैँ, तारा गन समुदाय।
सभै गिरिन दौँ लाइये, बिनु रबि राति न जाय ॥ ५ ॥[6]
सुपने होय भिखारि नृप, रंक नाक-पति होय।
जागे लाभ न हानि कछु, तिमि प्रपंच जिय जोय ॥ ६ ॥[7]
जाहि न चाहिय कबहुँ कछु, तुम सन सहज सनेह।
बसहु निरन्तर तासु उर, सो राउर निज गेह ॥ ७ ॥
जाहि जीव पर तव कृपा, संतत रहत हुलास।
तिन की महिमा को कहै, जे अनन्य[8] प्रिय दास ॥ ८ ॥
खेलत बालक ब्याल सँग, पावक मेलत हाथ।
तुलसी सिसु पितु मातु इव, राखत सिय रघुनाथ ॥ ९ ॥
घर कीन्हेँ घर होत है, घर छाड़े घर जाय।
तुलसी घर बन बीचही, रहो प्रेमपुर छाय ॥ १० ॥

---

(१) विष। (२) मृत्यु। (३) पहरेदार। (४) किवाड़। (५) सिकरी, जंजीर। (६) चाहे पूरनमासी का चाँद सोलहो कला से उगै और समस्त तारे इकट्ठे हो जाँय और सब पहाड़ों पर आग बाली जाय तौ भी बिना सूरज के उदय हुए रात का अन्धकार नहीँ जा सकता। (७) जैसे कोई राजा सपने में भिखमंगा हो जाय और भिखारी राजा इन्द्र बन जाय ऐसे ही यह सब संसार का प्रपंच झूठा है। (८) इकलौते, असदृश।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

असन बसन सुत नारि सुख, पापिहु के घर होइ।
संत समागम राम धन, तुलसी दुरलभ दोइ ॥११॥
काम क्रोध मद लोभ की, जब लगि मन में खान।
का पंडित का मूरखा, दोनों एक समान ॥१२॥
माँगि मधुकरी खात जे, सोवत पाँव पसारि।
पाए प्रतिष्ठा बढ़ि परी, तुलसी बाढ़ी रारि ॥१३॥
मिथ्या माहुर सजन कहँ, खलहिं गरल सम साच।
तुलसी परसि परात जिमि, पारद पावक आँच[1] ॥१४॥

चरनदासजी की छूटी हुई साखियाँ

(देखो पृष्ट १४२-१५१)

सतगुरु के ढिंग जाय के, सनमुख खावै चोट।
चकमक लगि पथरी झड़ै, सकल जलावै खोट ॥ १ ॥
बिन दरसन कल ना पड़ै, मनुवाँ धरत न धीर।
चरनदास गुरु चरन बिनु, कौन मिटावै पीर ॥ २ ॥
ज्योँ सेमर का सूवना, ज्योँ लोभी का धर्म।
अन्न बिना भुस कूटना, नाम बिना योँ कर्म ॥ ३ ॥
हाथी घोड़े धन घना, चन्द्रमुखी बहु नार।
नाम बिना जम-लोक मे, पावत दुक्ख अपार ॥ ४ ॥
अज्ञाकारी पीव की, रहै पिया के संग।
तन मन से सेवा करै, और न दूजा रंग ॥ ५ ॥
पति की ओर निहारिये, औरन से क्या काम।
सभी देवता छोड़ करि, जपिये गुरु का नाम ॥ ६ ॥
इंद्रिन के बस मन रहै, मन के बस रहै बुद्धि।
कहो ध्यान कैसे लगै, ऐसा जहाँ बिरुद्ध ॥ ७ ॥

(१) जैसे आग के छूते ही पारा उड़ जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

फुटकर साखियाँ और भक्तों की

कर छटकारे जातु हौ, दुबल जानि कै मोहिँ।
हिरदे से जब जाइहौ, तब बली बखानैाँ तोहिँ ॥ १ ॥
प्रीतम हम तुम एक हैँ, कहन सुनन को दोय।
मन से मन को तौलिये, दो मन कभी न होय ॥ २ ॥
प्रीतम प्रीति लगाइ कै, दूर देस मत जाव।
बसो हमारी नागरी, हम माँगै तुम खाव ॥ ३ ॥
तू तू करता तू भया, मुझ मैँ रही न हूँ।
वारी तेरे नाम पर, जित देखूँ तित तू ॥ ४ ॥
प्रेम पावरी पहिर करि, धीरज काजर देहि।
सील सिँदूर भराय करि, योँ पिय का सुख लेहि ॥ ५ ॥
जो जन जाकी सरन हैँ, सरन गहे की लाज।
मीन धार सन्मुख चलै, बहे जात गजराज ॥ ६ ॥
जब यह ध्याता ध्यान में, ध्येय रूप ह्वै जाय।
पूरा जानौ ध्यान तब, या मेँ संसय नाहिँ ॥ ७ ॥
ध्येय रूप होना यही, भिन्न ज्ञान नहिँ होय।
क्षीर नीर जब मिलत हैँ, सूझत नाहीँ दोय ॥ ८ ॥
गहिरी नदी कुठौर है, परयोँ भँवर बिच आय।
दीनबंधु इक तोहि बिनु, अब को करै सहाय ॥ ९ ॥
हम बासी वा देस के, जहँ जाति बरन कुल नाहिँ।
सबद मिलावा होत है, देह मिलावा नाहिँ ॥१०॥
आप छके नैना छके, और छके सब गात।
जा तन चितवत नैन भरि, रोम रोम छकि जात ॥११॥

॥ इति ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

संतबानी की कुल पुस्तकों का सूची पत्र

[हर महात्मा का जीवन-चरित्र उनकी बानी के आदि में दिया है]

कबीर साहिब का अनुराग सागर	...	...	१।-)
कबीर साहिब का बीजक	...	...	१)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	...	...	१॥)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	...	...	१)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	...	...	१)
कबीर साहब की शब्दावली, तीसरा भाग	...	...	-॥)
कबीर साहब की शब्दावली, चौथा भाग	...	...	।)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेख़ते और झूलने	...	...	॥)
कबीर साहिब की अखरावती	...	...	।)
धनी धरमदास जी की शब्दावली	...	...	।॥)
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली भाग १	...	...	१॥)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रंथ सहित	...	...	१॥)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	...	...	१।॥)
तुलसी साहिब का घट रामायण पहला भाग	...	...	२)
तुलसी साहिब का घट रामायण दूसरा भाग	...	...	२)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	...	...	२)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	...	...	१॥≡)
सुन्दर बिलास	...	...	१।≡)
पलटू साहिब भाग १-कुंडलिया	...	...	१)
पलटू साहिब भाग २—रेख़ते, झूलने, अरिल, कवित्त, सवैया		...	१)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	...	...	१)
जग जीवन साहिब की बानी पहला भाग	...	...	१-)
जग जीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	...	...	१-)
दूलन दास जी की बानी	...	...	।≡)

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चरनदास जी की बानी, पहला भाग	...	...	१−)
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	...	...	१−)
गरीबदास जी की बानी	...	...	१।।।)
रैदास जी की बानी	...	...	।।≡)
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर	...	...	।।=)
दरिया साहिब के चुने पद और साखी	...	...	।≡)
दरिया सहिब (मारवाड़ वाले) की बानी	...	...	−।।−)
भीखा साहिब की शब्दावली	...	...	।।।=)
गुलाल साहिब की बानी	...	...	१≡)
बाबा मलूकदास जी की बानी	...	...	।=)
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	...	...	−)।।
यारी साहिब की रत्नावली	...	...	≡)
बुल्ला साहिब का शब्दसार	...	...	।=)
केशवदास जी की अमींघूँट	...	...	=)
धरनीदास जी की बानी	...	...	।।)
मीराबाई की शब्दावली	...	...	।।।=)
सहजो बाई का सहज-प्रकाश	...	...	।।=)
दया बाई की बानी	...	...	।−)
संतबानी संग्रह, भाग १ (साखी) [प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित]	...	...	२)
संतबानी संग्रह, भाग २ (शब्द) [ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं]		...	२)
		कुल	३६=)।।•
अहिल्या बाई	...	...	।)

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 3462

दाम में डाक महसूल व पैकिङ्ग शामिल नहीं है वह अलग से लिया जायगा—हिन्दी की अन्य प्रकाशित पुस्तकों के लिये बड़ा सूचीपत्र मँगा कर देखिये।

मिलने का पता—

मैनेजर, बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बढ़िया और सस्ती - - -

सब प्रकार

की

छपाई

बड़ी उत्तमता से और कम मूल्य में की जाती है। शीघ्र लाभ उठाइए। तिरंगी और फ़ैन्सी छपाई का ख़ास प्रबन्ध है।

म्युनिसपिल्टी के हर प्रकार के फ़ार्म छपे तैयार रहते हैं।

एक बार काम भेजकर अवश्य लाभ उठाइए।

मैनेजर,

बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

CC-0. Jangamwadi Math Collection, Varanasi.